नदी के मोड़ पर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दामोदर सदन

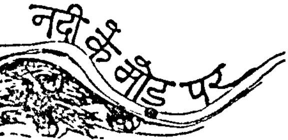

हिन्द पॉकेट बुक्स

दामोदर सदन

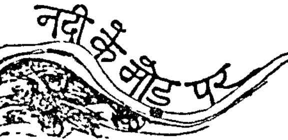

हिन्द पॉकेट बुक्स

नदी के मोड़ पर
(उपन्यास)

© दामोदर सदन, 1983
प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण, 1983

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी॰ टी॰ रोड शाहदरा, दिल्ली-110032

NADI KE MOR PAR
(Novel)
DAMODAR

नदी के मोड़ पर

'बस अब मत पी बिरजू।'

'क्या करते हो? जितना मन पुस-पुस पटा, उसे कहते हो मत पी! दारू के सिवाय मेरा और कोई सहारा नहीं है, दद्दा।'

'मेरे भले के लिए कहते हैं, पगले!'

'मेरा भला हो चुका। तुम्हारे सामने भोला चली गई। पीठ-बालमें गुड़ और मसाला तक गलीराम ले गई। तुममें से कोई भाई का लाल बाहर निकलकर उसे रोक नहीं सका।'

'लेकिन उससे हम क्या कर सकते थे, बिरजू? वह तो इस गाँव की औरत थी और तू उसे भगाकर लाया था। बिरादरी-भोज देकर तूने बाकायदा उससे घर बसाया।'

बिरजू की जबान थोड़ी देर के लिए चुप हो गई। उसने कसोरे में रखी हाथकुटी मीठी शराब की ओर चूने के टूटे कुल्हड़ से उड़ेलने लगा।

कोठरी में आस-पास मिट्टी के घड़े, मटके, एक कोने बड़े पर बनी भट्ठी एक तार-तार हुआ बदरंग बोरा और फटी हुई कोठरी बसती हुई थी। पास ही चूल्हा जल रहा था, जिस पर एक हांडी में कुछ पक रहा था। धुएँ की तह ने इस कोठरी को काला कर दिया था। काले की राख थी। लेकिन इन लोगों पर उसका कोई असर नहीं था।

'इस बस्ती पर दाग बहुत बड़ा लगा है, बिरजू!' बुड्ढे ने बुझती हुई लालटेन की बत्ती ठीक करते हुए कहा—'एक जमाना था जब बाड़े और बरकत थी। हाट के दिन लाला एक बोतल मिट्टी का तेल पूरे एक रुपये चलता था, लेकिन

नदी के मोड़ पर

(उपन्यास)

© दामोदर सदन, 1983

प्रथम पॉकेट बुक्स संस्करण, 1983

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी० टी० रोड शाहदरा, दिल्ली-110032

NADI KE MOR PAR
(Novel)
DAMODAR SADAN

नदी के मोड़ पर

'बस, अब मत पी, बिरजू।'

'क्या कहते हो? जिसका सब कुछ लुट गया, उसे कहते हो मत पी! दारू के सिवाय मेरा और कोई सहारा नहीं है, दद्दा।'

'तेरे भले के लिए कहते है, पगले!'

'मेरा भला हो चुका। तुम्हारे सामने सोना चली गई। पीपे-बोतलें, गुड और मक्का तक रातोंरात ले गई। तुममे से कोई माई का लाल बाहर निकलकर उसे रोक नहीं सका।'

'लेकिन उसमे हम क्या कर सकते थे, बिरजू? वह तो इस ननकू की औरत थी और तू उसे भगाकर लाया था। बिरादरी-भोज देकर तूने बाकायदा उससे पाट रचाया।

बिरजू की अक्ल थोड़ी देर के लिए गुम हो गई। उसने सकोरे में रखी हाथभट्ठी नीट शराब पी और चूने के सूखे दाने हलक में उतारने लगा।

झोंपड़ी में चार-पांच मिट्टी के बर्तन, मटके, एक लम्बे डंडे पर फटी कथरी, एक तार-तार हुआ बदरंग फेंटा और फटी हुई धोती लटकी हुई थी। पास में चूल्हा जल रहा था, जिस पर एक हांडी में मुर्गा पक रहा था। मसाले की गंध ने उन लोगों को मस्त कर दिया था। जाड़े की रात थी। लेकिन इन लोगों पर उसका कोई खास असर नहीं था।

'इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है, बिरजू!' बुड्ढ़े ने भभकती हुई लालटेन को अपने पास खींचते हुए कहा—'एक जमाना था जब चारों ओर बरकत थी। हाट के दिन लाया गया एक बोतल मिट्टी का तेल पूरे एक हफ्ते चलता था, लेकिन

बच्चा नहीं हो रहा है। वे अमली को भी दूसरे किसी का हाथ पकड़ने की सलाह देने लगे, ताकि वह दूधों नहाए और पूतों फले। लेकिन वह मेरी चेरी थी, किसी दूसरे के नाम से ही भड़कती थी। आखिरकार मैंने समझा-बुझाकर मनकू ओझा को उसका पिशाच झाड़ने के लिए बुलवा दिया। मैं बाहर खाट पर बैठा रहता और मनकू ओझा कमरे में उसका भूत प्रेत उतारता। वह चीखती-चिल्लाती और मेरा मन उसके लिए तड़प जाता। शुरू-शुरू में यह झाड़-फूंक पांच-सात मिनट चलती रही और फिर आधा-पौना घंटा लगने लगा। ओझा ने मुझे बता दिया था कि पीपलवा वाली बीस साल पुरानी डाकिनी है। अमली का शरीर बहुत अच्छा है इसलिए उस पर मोहित हो गई और उसने उसकी आत्मा में प्रवेश कर लिया है। दो-तीन महीने में मैं उसे वहीं वापस करवा दूंगा। आखिरकार मनकू ओझा भी हमारे घर का मेम्बर बन गया। वह मेरे घर आता, एकाध घंटे बैठकर चिलम वगैरह पीता, पास वाले हैल्थ सेन्टर के बाबुओं के किस्से सुनाता और फिर अमली का भूत उतारता। और तीन-चार महीने में ही अमली का हमल रह गया। गांव के गंवार कहने लगे कि यह बच्चा मेरा नहीं है, मनकू का है। लेकिन हमारी नीयत में कभी कोई खोट नहीं आई। अमली ने कहा भी, 'यदि भरोसा न हो तो अग्नि-परीक्षा ले लो।'···मैंने कहा, 'पगली कहीं की! अरे कहने वाले तो राजा-राक्षस को भी नहीं छोड़ते। फिर हम लोग तो मृत्युलोक के प्राणी हैं।'··· और हमारी जिंदगी शानदार ढंग से चलती रही। यहां तक कि मनकू ओझा भी हमारे ही घर का आदमी समझा जाने लगा और हमने कभी एक-दूसरे को गलत नहीं समझा। मैंने उसके तमाम जेवर, उसकी एकेक निशानी सहेजकर रखी।···यह रही हंसली, यह करधोरा, यह तोड़े···' वे एकेक चीज बताते जाते थे और फूट-फूटकर रोने लगते थे। बिरजू और ननकू उन्हें ढाढ़स बंधाने लगे।

...आपकी जिनगी भी जिनगी थी! हम लोग ...?'

...बंधा। नाक बाहर छिनककर बोले—

...चलती थी तो मेरा कलेजा मुंह

को आ जाता था। घर का काम जानवर जैसी मुस्तैदी से करती थी। मुंह-अंधेरे उठकर गोबर का ढेर डालना, गाय-बकरियों को दुहना। मुर्गियों को दड़बे से निकालना और जाने क्या-क्या ! मैं तो मैया बस पड़े-पड़े खाट तोड़ना था। जब सकोरे में गरमा-गरम चाय आती तभी रात की खुमारी निकलती। दोपहरी में वह मोली तोड़ने जंगल चली जाती और उसके गट्ठर बनाकर बसों के पास पड़ने वाले घने दरख्तों के पीछे छिपा कर रखती। बसों के ड्राइवर और कंडक्टर उसे दो तीन रुपये देकर सारी मोलियां बसों के ऊपर डालकर गट्ठर ले जाते थे। आखिरकार वह जंगल से तीन-चार बजे लौटती और मेरे हाथ पर सारे रुपये रख देती तो मैं उसे प्यार कर लेता और महुआ की दारू और कड़क मक्के की रोटी हम दोनों प्याज और नमक से खा लेते। इतनी मिहनत करने के बाद भी उसके चेहरे पर कभी किसी ने शिकन नहीं देखी।···दिन बीतते चले गए। किसी ने मुझे बताया कि एक बस के ड्राइवर ने लेन-देन के मामले में उससे कहा···साली अकड़ती है···दो रुपये के चार बनाती है। दो क्या तुझे देखने के दूं ! तो उसने बड़ा धांसू जवाब दिया था ····हां रे कुत्ते ! मां को देखने का दो ठऊं रुपया ही देगा क्या?' 'हट, साली कुत्ती !' ड्राइवर ने कहा था। जब मुझे मालूम हुआ, तो मेरा खून खौलने लगा था और मैं तीर-कमान लेकर उस कुत्ते को हमेशा के लिए सुलाने जाने लगा था। तभी उसने रोका —क्या करते हो मालिक ! उसके कहने से क्या मैं कुत्ती हो गई और फिर इन बाबुओं-सेठों की औरतें भी तो बाहर निकलती होंगी, तो कोई न कोई तो उनसे भी यही सब कहता होगा।' उसने मुझे लाजवाब कर दिया था। फिर मैंने उसके मामले में दखल देना बन्द कर दिया था। मैं समझ गया था, ताकतवर औरत है, निपट लेगी। फिर मोली में और पेड़ों में भी हिस्से लगने लगे थे। नाकेदार भी आ धमकता था, उसे भी दो-चार आने देने पड़ते थे। लोग अमली और नाकेदार को लेकर भी तरह-तरह की खबरें उड़ाया करते थे, लेकिन मैं तब अमली को काफी अच्छी तरह से समझने लगा था। मैं यह भी समझ गया कि बेपर की खबरें उड़ाना भी आदमी का धरम और सुख का साधन बन गया है।'

और दद्दा को एक भयंकर खांसी ने घेर लिया। खौं-खौं-खौं-खौं की आवाज पूरे झोंपड़े में फैल रही थी। बिरजू और ननकू ने उठकर बूढ़े की पीठ और छाती पर दाह मल दी तो उसे कुछ आराम मिल गया।

दद्दा ने दम साधकर कहा, 'इस साल की तरह बरस भी भयंकर सूखे का साल था। पेड़-पत्तियां सूख गई थीं…जो थोड़ा बहुत पानी बरसा था, वह ढलुआ जमीन होने के कारण बड़वानी की तरफ चला गया था। बैलों, बकरियों और बच्चों की ठठरियां निकल आई थीं। चारों ओर दरकती हुई जमीन दिखाई देती थी। धरती माता का गर्भ उजड़ गया था। आस-पास के बड़े जमीन के किसान बीज और मक्का देने के लिए तैयार नहीं थे। औरतें तालाब में आधे कपड़े से नहाती थीं और भीतर कंदमूल के बीज टटोलती थीं। घास की रोटियां बननी शुरू हो गई थीं। बच्चे औरतों की सूखी छाती में चिपके रहते। लेकिन वहां था क्या। नंगे बदन औरतें और बच्चे? लेकिन किसी को कोई होश नहीं था…ऐसे में गांव के सयानों ने ननकू ओझा को बुलाया था। उस दिन पूरी पंचायत बैठी हुई थी। सभी सयाने जुड़े हुए थे। अलाव सुलगाया गया। गांव से कौवे भागे जा रहे थे, क्योंकि अब उन्हें रसोई का कूड़ा-करकट भी नहीं मिल पा रहा था। विचार हुआ, कुछ बातें तय हुईं। जानवर और मुर्गियां बेचने का फैसला हुआ, जिससे कुछ रोज और काम चलाया जा सके। तुम तो जानते हो, अपनी राबड़ी कितनी ताकतवर होती है। घास के बीज नदी के तल में पाए जाने वाले जमीकंद की रोटियां, चट्टानों पर उगने वाला कुकुरमुत्ता चिड़ियों और मछली से पेट भरने का फैसला हुआ। जंगल में कहीं भी पत्तियां दिखे उसे लंगी से गिराने और औने-पौने दाम पर बेचकर सबसे पहले सारे गांव के बच्चों, गर्भवती औरतों और बूढ़ों को और बाद में गांव की दूसरी आबादी को खाना खिलाने का फैसला हुआ। हट्टे-कट्टे, तन्दुरुस्त लोग एक-दो रोज रह जाएं तो इसमें कोई हर्ज नहीं। कुछ जवान लोगों ने उस नेता की भी याद दिलाई जो कभी-कभार कागज की पर्ची डलवाने के लिए आया करता था। उसका ऊपर काफी दबदबा है। यह बात उन लोगों को उसी ने बताई थी और इन

लोगों ने उस पर भरोसा भी कर लिया था। मनकू से इस अकाल की वजह पूछी गई और इस भारी आफत को टालने का उपाय भी।

'मनकू ने दोनों हाथों को ऊपर उठाते हुए कहा, 'जब-जब धरती पर पाप ज्यादा बढ़ जाता है तब-तब अकाल पड़ जाता है। अपने गांव की हर गली अपवित्र हो गई है। उसके लिए हमें एक बड़ा चंडी-यज्ञ और जांबाज पद्मिनी औरत की बलि देनी पड़ेगी।' इतना सुनते ही गांव के सभी पंच और बूढ़े-बूढ़े जवान एक-दूसरे की ओर देखने लगे और फिर गांव के सयानों की निगाह उन सबड़ जवानों और औरतों पर पड़ी।

'रात को अमली ने मुझे बताया था, मुझे बड़े बुरे-बुरे सपने आते हैं जी।'

'मैंने जब उससे उन सपनों के बारे में पूछा तो उसने बताया —'मीता, मुझे कभी-कभी ऐसा सपना आता जैसे मैं भयानक फिर जंगल में खो गई होऊं''' आसपास बड़ा गहरा सन्नाटा है'' ऐसा सन्नाटा है कि किसी जंगली जानवर की आवाज भी बड़ी सहारा लगे—चलो, कोई तो संगी है। आस-पास के पेड़ों की सूड़ें ऐसी लगती हैं मीता जैसे फांसी का फंदा गर्दन पर कसे जा रहा हो।''' मैं ऐसे ही फिर जंगल में पानी के लिए किसी व्याकुल हिरनी की तरह भागी जा रही हूं। पेड़ों का आसरा भी बहुत अच्छा लग रहा है''' और एकाएक मुझे लगा जैसे मेरा पांव एक बड़े विषारी भयानक अजगर पर पड़ गया''' अरे बाप रे, कहती हुई मैं तो भागी, वर्ना मेरा पूरा शरीर फूल जाता और फिर गल-गलकर यह देह सड़ जाती। मैं भागती चली गई''' और एकाएक मैंने किसी आदमी की पदचाप सुनी''' और वह पदचाप मेरे पीछे 'चर्रचूं-चर्रचूं' जैसे बजने लगी'' और एकाएक वह भयानक आवाज—ठहर, हरामजादी! भागती कहां है? तेरी देह मेरी है'' और मैं सिर पर पैर लेकर भागती चली गई''' तार के खंभे, पेड़-पौधे सब पीछे छूटते चले गए। भागते-भागते मैं एक भयानक रेतीले मैदान में चलने लगी और टीले पर पहुंच गई, फिर भी आसपास कोई झोंपड़ी या मचान नजर नहीं आया जहां मैं चैन की सांस ले सकती'' जब मैं एक झुरमुट में छिपी थी तब वह खूंख्वार

दिन वे अपने दफ्तर में शाम को उनके यहां कौन-कौन आया था, इसका तफसीलवार ब्योरा देते—कल हमारे यहां एडीश-नल कलेक्टर, भैया साहब आए थे।" मैंने कहा, 'कुछ नाश्ता तो कर लीजिए।' उन्होंने कहा, 'भाई, मैं जरा जल्दी में हूं।' 'अच्छा तो थोड़ी चाय ले लीजिए, तब तक मैं आपको अपनी ताजा कविता सुनाए देता हूं।' उन्होंने मुझे टेलीफोन पर अपने कवि होने की बात बताई थी और शहर में कभी-कभी होने वाले प्रोग्रामों के निमंत्रण-पत्र न मिलने की शिकायत की थी। उनके दुश्मनों ने उनके बारे में निष्पक्षतौर पर यह बताया था—

मिस्टर पिसाल का जन्म मध्यप्रदेश के महू (अंग्रेजी में इसे एम० एच० ओ० डब्ल्यू० यानी मिलिटरी हेडक्वार्टर्स ऑफ वार कहा गया) में ऐसे समय हुआ जब आसमान पर पुच्छल तारा निकला था। पुच्छल तारा निकलने का मतलब होता है—किसी-न-किसी महापुरुष का इस धरती पर अवतरण या मौत। महायुद्ध के समय महू मुल्क का सबसे बड़ा मिलिटरी हेडक्वार्टर बना हुआ था। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता गया, वैसे-वैसे उसमें विलक्षण प्रतिभा के लक्षण दिखाई देने लगे थे। वह उस विशाल मिलिटरी जम्बूरी, अंग्रेजों के तम्बू, बंगले या परेड करने की जगह मंडराता रहता" वे जब मक्खन और सिगरेट के डिब्बे फेंकते तो उठाकर घर ले आता। वह देखता कि औरतों को वे अंग्रेज भूखे भेड़ियों की तरह देखते हैं। छावनी का सिनेमा छूटने के बाद अबोध बच्चों और औरतों के साथ जो भी जुल्म-ज्या-दतियां होतीं उसके लोमहर्षक किस्से वह सुन चुका था। लेकिन फिर भी उसे अंग्रेज देवदूत की तरह लगते थे और उसने कर्नल के बटलर से दोस्ती बढ़ाई। कर्नल साहब जिस दिन शिकार पर गए थे, उस दिन वह बटलर उसे बंगले के भीतर ले गया। ड्राइंगरूम में उसने देखा—सामने बढ़िया फर्नीचर, दीवार पर टंगी हिरण की खूंटियां, शेर का मुंह और ढेर सारी बड़ी-बड़ी तसवीरें, जिनमें कर्नल साहब शेर के मुंह पर हाथ रखे दिखाई देते हैं। उसने देखा, फिश-प्लेट दीवार को काटकर बना हुआ 'हार्थ' जिसमें से लाल-लाल लपटें निकल रही थीं। दो खूंखार कुत्ते, घोड़े, मोटर, बग्घी, दीवार पर लगी बन्दूक, कांटे-चम्मच-छुरियां, टब-बाथ, किचन गार्डन, गाउन, चमड़े की जर्किन,

[illegible] नहीं कैलोरी [illegible] की [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है, जो उन्होंने यहीं [illegible] से सीखा था।

[illegible] मिसेज़ [illegible] उन्होंने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और उसके [illegible] लोगों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थे वे लोगों को यह बताते थे कि उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। मिसेज़ [illegible] का [illegible] उन्होंने यह बताया कि उनके [illegible] [illegible] भी यह [illegible] हो सकती है और वे हिन्दुस्तान के कोने कोने में उस संदेश को ले जा सकते हैं। इसलिए वह दो चीज़ों को लेकर परेशान थे। एक तो आदर्श [illegible] को लेकर जिसके बारे में उनका कहना था कि [illegible] हो गया है और [illegible] है। इस [illegible] [illegible] के बारे में उनके [illegible] के लोगों ने अनेक [illegible] बताईं। दूसरी उनकी परेशानी उनकी [illegible] या नई बेटी के बारे में है जिसे [illegible] के [illegible] की चिन्ता हो रही है। वे अब भी लड़का ढूंढ़ने निकलते हैं, उनकी रुचि के अनुसार लड़की को [illegible] की कोशिश में जुटे रहते हैं। कुछ [illegible] के विभिन्न विषयों में [illegible] किए गए [illegible] का [illegible] किया करते थे और युनिवर्सिटी में बेटी के और मिसेज़ [illegible] के दूसरे या तीसरे नंबर पर आने की बात बताया करते थे।

एक दिन दोपहर को जब मैं उनके पास बैठा हुआ था तो वे ब्रेकफास्ट ले रहे थे।

थोड़ी देर तक हम लोगों के बीच कोई बात नहीं हुई, क्योंकि वे पोटाटो के एक-एक टुकड़े को काँटे और छुरी से अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बना रहे थे और मैं चाय पी रहा था। मिसेज़ पिसाल काफी समझदार हैं पोटाटो के लिए उन्होंने आग्रह नहीं किया, चाय ले आईं। मैं दीवार की ओर देखने लगा, जहाँ ६० डिग्री के कोण पर एक मॉडर्न आर्ट की पेंटिंग टंगी हुई थी।

मिसेज़ पिसाल अपना घर का काम पूरा करके आ गईं तो

उन्हें भी पिसाल ने अपनी बगलवाली कुर्सी दे दी। फिर बोले —'वाइफ, आज सुकांत भी आए हैं। इनके सामने कहता हूं अब जनसेवा करने का मौका आ गया है। सोचता हूं लायन्स इंटरनेशनल का मेम्बर बन जाऊं और आदिवासियों में जाकर काम करूं। बोलो, क्या कहती हो?'

'जरूर बन जाइए, उसमें मुझे क्या एतराज हो सकता है।'

'तुम क्या कहते हो, सुकांत!'

'नेकी और पूछ-पूछ। आपने ठीक फैसला किया है, फील्ड में जुट जाइए। एम० पी० या एम० एल० ए० बन ही जाएंगे। भगवान आपका भला करे।'

'क्या कहते हो, सुकांत! मुझे एम० पी० या एम० एल० ए० नहीं बनना है। मैं जहां हूं वहीं ठीक हूं। जिंदगी में सारी हसरतें पूरी हो गईं, बस एक ही मुराद बाकी रह गई थी—देशभक्ति की। बस, उसी मिशन पर जा रहा हूं। और उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर की ओर कर दिए थे।

अब बातचीत को और ज्यादा खींचने की हिम्मत मुझमें नहीं रह गई थी। उनसे मैंने विदा मांगी। मिस्टर और मिसेज पिसाल मुझे विदा देने के लिए उठ खड़े हुए। मेरे दरवाजा लांघते-लांघते उन्हें कुछ याद आया, बोले—'कल संडे है, क्या कर रहे हो?' मेरे कुछ नहीं कहने पर बोले —'कल यहां सुबह दस बजे लायन्स क्लब की नींव पड़ने वाली है, आना।' मैंने खामोशी से सिर हिला दिया और हाथ जोड़ दिए।

दूसरे दिन लायन्स के समारोह में मैं थोड़ी देर से पहुंचा था। डायस पर सूट-बूट-टाई में लायन्स के रोबीले पदाधिकारी बैठे थे। उनके कपड़े-लत्ते और चेहरे से लगता था कि उन्हें खाने-पीने या पहनने की कोई कमी नहीं है। मैं जब वहां पहुंचा तो क्लब के महामंत्री का भाषण चल रहा था।

भाषण आदि समाप्त होने के बाद लायन्स क्लब के उवाइंट सेक्रेटरी लायन्स के छोटे-छोटे गोल बैज लेकर नीचे आ गए। पहले पिसाल साहब का परिचय दिया गया, 'आप पिसाल साहब! यहां के अफसर हैं। जनता का काम आप तन-मन-धन से करते हैं। उनकी भलाई के बारे में रात-दिन सोचा करते हैं।

[illegible]

[illegible] हाथ छिपा रहे थे। कुछ लोगों के बन्दूक [illegible] की [illegible] है भाई! इनसे थोड़े-से बन्दूक कि इनसे मारे [illegible] के बाद आज ?... अब इन [illegible] को [illegible] की इतनी चीज भी देनी पड़ेगी [illegible] से मेज और हाथ में पिस्तौल-बट सवार आएगी।' [illegible] का रंग भी कुछ [illegible], पर वे शान्त ही गए थे।'

इससे पहले मानस्या के [illegible] का परिचय दिया जाता था। रिटायर्ड कर्नल हरदयाल मानस्याह। आपके [illegible] में आपकी प्राथमिक ट्रेनिंग थी। आपके साथ ब्रिटिश सेना के तत्कालीन कमाण्डर-इन-चीफ सर आचिनलेक भी थे।

अब कर्नल मानस्या की सेवा दे भी उन्हीं जोश-खरोश में मिल गए, जिससे उन्होंने जंग-मैदान में बहादुरी के करिश्मे दिखाए थे और आज उनके दम से ही अपने देश में मानस्या की यह १०२ वीं शाखा ओपन हो रही है।

दूसरे दिन से इन पदाधिकारियों की मोटरों पर 'एल' का साइनबोर्ड चमकने लगा था और ये लोग खुलेआम कहते मगर आ रहे थे कि शहर की रोटरी या दीगर संस्थाएं खामी डिनर देने के लिए बनी हुई हैं और लायन्स ही ऐसा क्लब है जो सेवा के मामले में अपना रिकार्ड कायम करके रहेगा। जिस दिन लायन्स का शुभारम्भ जिला सदर मुकाम पर होने जा रहा था, उस रोज एक छोटी-सी अप्रिय घटना हो गई थी। लायन्स की मोटरें नालछा की ओर घड़घड़ाती हुई आ रही थीं। लायन्स हमेशा टाइम के पाबंद होते हैं। मोटरों की स्पीड काफी थी। एक फटे कपड़े वाला लड़का कुचल गया था, उसका पैर गाड़ी के नीचे आ गया। लायन्स उतरे, उन्होंने उसे देखा, फिर अपनी घड़ी की ओर देखा और फिर टिंचर आयोडीन लगाकर और पांच रुपये देकर वे अपने मुकाम पर पहुंचे। इस एक अप्रिय घटना को यदि छोड़ दिया जाए तो लायन्स ने अपना काम धड़ल्ले से शुरू कर दिया था। उन सभों ने 'एल' के रंगीन बैजेज अपनी-अपनी मोटरों और स्कूटरों पर लगा दिए थे। एकाएक आपस में भी उनका भाईचारा और प्रेम-व्यवहार काफी बढ़ चला था, बैंक में उनके चेक जल्दी भुन जाते थे, पुलिस-स्टेशन पर अब उन्हें ज्यादा खड़ा नहीं रहना पड़ता। डिनर भी सदा-बहार हो जाते थे।

अमली ने बताया था— उसे रात बुरे-बुरे सपने आते हैं। किसी विषारी अजगर ने उसे अपनी गुंजलक में ले लिया है। इसके बावजूद वह उस बलात्कारी से बचने के लिए भागी जा रही है। कुत्ते भौंक रहे थे? क्या शेर आया था?...लेकिन आजकल गांव की आबादी बढ़ने से वह कभी कभार ही रास्ता भूलता है, वर्ना पास वाली नदी में पानी पीकर निकल जाता है। पत्तों में सरसराहट कैसे हुई? कोई ऊदबिलाव, सेई या लोमड़ी तो नहीं निकल गई? इतनी रात को उठकर कहीं जाने में अमली को कोई डर क्यों नहीं लगा? गांव वाले कहते हैं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उस रात जब तू कहाँ गई थी, [illegible]' मनकू ने पूछा।

मुझे कुछ भी दिखाई नहीं है क्योंकि अम्मी को मैं बहुत ही बेहद प्यार करता हूँ। अम्मी रात में बाहर मैं उठा तो अम्मी बिस्तर पर नहीं थी। मैं सोचने लगा अम्मी इस वक्त कहाँ गई होगी और बाहर कैसे जो है वह अभी तक ही मनकू सोता है उस की ओर वह था। मनकू की झोंपड़ी कोई ज्यादा दूर पर नहीं थी। उस झोंपड़ी के आसपास भी कोई बहुत ज्यादा झाड़ियाँ नहीं थीं। सामने ही आम का पेड़ था। बहुत अँधेरा था। मैं सोचे झोंपड़ी के पिछवाड़े के दाहिनी ओर की दीवार से सट गया। धीरे धीरे हवा भी बही जा रही थी। सन्नाटा था। बस बाहर से सियारों के चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। मैं सोचने लगा, अम्मी कहाँ गई? वह गई भी है या नहीं? तो क्या यदि गई है वह अब भी मनकू के साथ बैठकर सो रही है? क्या वह सुबह होने के पहले घर लौटेगी? क्या अब वह मनकू को मुझसे ज्यादा प्यार करने लगी है? क्या मानो सचमुच मनकू का बेटा हूँ, मेरा कोई भी नहीं? क्या सचमुच मैं उसे सम्मान देने के काबिल नहीं था?… और यदि मैं उसे सम्मान देने के काबिल नहीं था, तो मुझे इतनी रात को अम्मी की पहरेदारी करने की क्या जरूरत! यदि अम्मी रात को मेरा बिस्तर छोड़कर मनकू के पास आ गई … पहाड़ टूट पड़ा। मैं जानता था अम्मी कुछ … गंगा मैया की तरह पवित्र है। लेकिन इस … किसी की भी आवाज नहीं सुनाई दे रही है! क्या … और के यहाँ चली गई? इतने में ही झोंपड़ी के … । अम्मी ने कहा, 'अब जाने दे

मेनकू, मीता मेरी राह देख रहा होगा।'

'हरामजादी!' उसने अमली की कमर पर हाथ रखते हुए कहा था, 'सोती मेरे साथ है और नाम उसका लेती है।'

'हां रे, मरते दम तक मैं नाम तो उसी का लूंगी। साला हरामखोर!...खबरदार तूने मेरे मीता के बारे में कुछ भी कहा तो हंसिए से तेरी जुबान काट लूंगी।' और मनकू ने उसे छाती से लगा लिया था।

मैं सोच रहा था अजीब है इस अमली का प्यार भी। यह मेरे साथ भी सोती है, इतनी रात गए मनकू के पास भी चली आई और मेरे प्रति वफादार भी है। चांद-रात नहीं थी, वरना ये दोनों मुझे देख लेते।

'छोड़, छोड़, मुझे जाने दे, क्या अब भी तेरा जी नहीं भरा?'

'पता नहीं रात का कितना पहर बीत रहा है अमली, क्या तुझे छोड़ आऊं?'

'नहीं रे, भील की बच्ची हूं, जंगल का एकेक कोना मेरा देखा-भाला है, चली जाऊंगी।'

'मन नहीं मानता रे। अगर तुझे बीच रास्ते में शेर उठाकर ले जाए तो?'

'तुम दोनों का नुकसान होगा—आधा तेरा, आधा मेरे मीता का।'

'नुकसान उसका नहीं, मेरा होगा, पगली! उसने आखिर तुझे दिया ही क्या?'

'बहुत कुछ दिया, मनकू!'

'अरे पागल, दो वक्त की रोटी तो आदमी अपने कुत्ते के सामने भी फेंकता है और उसको रोटी तो तू खुद कमाती है रे। तुझे जो चाहिए था वह तो मैंने दिया।'

'हां रे, बहुत दिया! चल, परे हट। मेरे मीता का दिल बहुत बड़ा है, वरना गांव वालों के इतना कहने के बाद वह तुझे घर पर भी फटकने नहीं देता, समझा?'

थोड़ी देर ठहरकर अमली ने कहा, 'अच्छा मनकू, जाने दे। मैं चली।'

'कल कितने बजे आएगी?'

ाई थी। अमली को एक हाथ से पकड़कर झोंपड़ी का मैंने उढकाया था और उसे उसी खाट पर लिटा दिया ढबरी लाकर मैंने उसकी साड़ी ऊपर कर उसकी पिंड-तक देखा, कोई भी हिस्सा हरा नहीं नजर आता था। अमली का पैर किसी दूसरे ही रेंगने वाले जानवर पर ोगा और यदि सांप पर पड़ जाता और वह अमली को ता तो भी मैं उसके जहर को चूस लेता और मनकू ओझा र पढ़वाकर उसे अच्छा कर देता।

कुछ नहीं है अमली, तुम्हारे मन का भरम है बस।'

लेकिन वह सपना, मीता!'

पने कभी सच नहीं होते, पगली! रात बाकी है, सो जाओ तक आराम मिल जाएगा।'

मैं इतनी रात गए कहां गई थी, नहीं पूछोगी? अभी ी तो सारी बातें साफ-साफ बता दूंगी, कल शायद नहीं ऊंगी।'

तुम पर भरोसा है, सो जाओ…'

तो तुम भी मेरे बाजू में सो जाओ, मीता!'

और मैं उसकी बगल में सो गया था। ओने कैसे और तूफान मेरे दिल-दिमाग में बाघनी की लहर की तरह हहर कर रहे थे।

दद्दा, सचमुच आप बहुत बड़े ज्ञानी हैं।' बिरजू बोला था, के पैर छू लूं?'

मैं यह नहीं कहता कि मैं बड़ा हूं। हां, इतना कहता हूं कि ी अपना आपा नहीं खोता।'

हां, देखो ना दद्दा, मेरी औरत इसके पास चली गई तो हुत खुश हुआ, लेकिन जब वह और किसी के साथ चली ी रो रहा है?'

रोता नहीं हूं, ननकू! अपनी पीर बता रहा हूं। यदि बताया तो दिमाग पर बोझ बना रहता।'

हां, बिरजू ठीक कह रहा है, ननकू। आखिर मैं भी तो कर रहा हूं।'

'फिर क्या हुआ दद्दा?'

'फिर पंचायत बैठी थी। जनता की अदालत कुछ फैसले

'बस, इसी वक्त।'

'और पंचायत कब बैठेगी ?'

'बहुत जल्दी बैठने वाली है। इस दौर में यह हमारी आखिरी रात होगी।'

'अच्छा, तो चलती हूं मलकू !'

'जी तो नहीं करता तुझे छोड़ने को, दिल पर पत्थर रखे लेता हूं।'

और अमली वहां से रवाना हो गई। अच्छा हुआ मलकू बहुत देर तक फाटक पर खड़ा नहीं रहा वरना मेरा घर लौटना मुश्किल हो जाता। मैं थोड़ा फासले पर चल रहा था…पेड़ों के साए में छिपता-छिपाता। अमली कभी-कभी पीछे पलटकर देख लेती लेकिन उसे यह गुमान भी नहीं हो सकता था कि कोई इतनी रात गए भी उसका पीछा कर रहा होगा। झींगुरों की आवाजें थीं पेड़ से डराने वाले साए थे और मुझे अमली का सपना याद आ रहा था… उसने कहा था, 'मौला, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक किसी जंगल में से गुजर रही हूं और एकाएक मेरा पैर एक विषधारी अजगर पर पड़ गया है। उफ ! एक के बाद एक आफत चली आ रही है। मेरे पीछे एक बलात्कारी भागा जा रहा है और मैं एक झाड़ी के पीछे छिप गई हूं। यदि पत्तों में सरसराहट भी होती तो वह मुझे पा जाता।'

मैं समझ नहीं पा रहा हूं…अमली की वफादारी किसकी ओर है। अमली का असली मर्द कौन है ! मैं उन भौंरों में से नहीं हूं जो बेकार ही खून बहाते हैं। वह बार-बार पीछे पलटकर देखती है और मैं बचता हुआ चलता हूं। अब एक ही सवाल मेरे दिमाग में चक्कर काट रहा है—अमली से पहले घर कैसे पहुंचूं ? और यदि मैं छुपते-छिपते बाद में पहुंचा तो उसे क्या जवाब दूंगा ? इसी गुन्ताड़े में मैं चला जा रहा था कि अमली जोरों से चीखी…और मैंने आगे बढ़कर उसे अपनी गोद में उठा लिया था। उसका पैर किसी जानवर पर पड़ गया था और वह 'सांप ! सांप !' चिल्ला उठी थी। 'कौन है ?…कौन है ?' वह हलके-से चिल्लाई थी और 'मैं हूं, पगली !' मैं बोला था—'चल, घर चल ! यदि सांप ने भी काटा होगा तो मैं जहर अपने मुंह से खींच लूंगा।' अपने झोंपड़े में पीछे से कूदने की नौबत

ई थी। अमली को एक हाथ से पकड़कर झोंपड़ी का
ने उढ़काया था और उसे उसी खाट पर लिटा दिया
बरी लाकर मैंने उसकी साड़ी ऊपर कर उसकी पिंड-
क देखा, कोई भी हिस्सा हरा नहीं नजर आता था।
मली का पैर किसी दूसरे ही रेंगने वाले जानवर पर
ा और यदि सांप पर पड़ जाता और वह अमली को
ा तो भी मैं उसके जहर को चूस लेता और मनकू ओझा
पढ़वाकर उसे अच्छा कर देता।
छ नहीं है अमली, तुम्हारे मन का भरम है बस।'
किन वह सपना, मीता!'
पने कभी सच नहीं होते, पगली! रात बाकी है, सो जाओ
क आराम मिल जाएगा।'
इतनी रात गए कहां गई थी, नहीं पूछोगी? अभी
तो सारी बातें साफ-साफ बता दूंगी, कल शायद नहीं
ऊंगी।'
म पर भरोसा है, सो जाओ…'
ी तुम भी मेरे बाजू में सो जाओ, मीता!'
ौर मैं उसकी बगल में सो गया था। जाने कैसे और
तूफान मेरे दिल-दिमाग में बाघनी की लहर की तरह
हर कर रहे थे।
द्दा, सचमुच आप बहुत बड़े ज्ञानी हैं।' बिरजू बोला था,
पैर छू लूं?'
ैं यह नहीं कहता कि मैं बड़ा हूं। हां, इतना कहता हूं कि
अपना आपा नहीं खोता।'
ा, देखो ना दद्दा, मेरी औरत इसके पास चली गई तो
ुत खुश हुआ, लेकिन जब वह और किसी के साथ चली
रो रहा है?'
ोता नहीं हूं, ननकू! अपनी पीर बता रहा हूं। यदि
ताया तो दिमाग पर बोझ बना रहता।'
हां, बिरजू ठीक कह रहा है, ननकू। आखिर मैं भी तो
र रहा हूं।'
फिर क्या हुआ दद्दा?'
फिर पंचायत बैठी थी। जनता की अदालत कुछ फैसले

जिस्मों में रहते हैं, उनसे भी मिलेंगे।'

'हां, वे ही नहीं, मनीस्टर और छापावाले के आदमियों और कोमुनिस्टों से भी मिलना चाहिए।'

'हमें सत्यनारायण भगवान की कथा और चंडी यज्ञ भी करना चाहिए।'

'सत्यनारायण की कथा-वाचन में तो हमें कम पैसा लगेगा लेकिन चंडी यज्ञ के लिए हमें बहुत सारा घी और लकड़ी चाहिए।'

'लकड़ी की इतनी समस्या नहीं है भाई···सारा जंगल हमारे बाप-दादाओं ने लगाया था। उसकी निगरानी हमीं करते हैं। वर्ना मुट्ठी-भर नाकेदारों में यह दम नहीं कि वे शहर में चोरी-छिपे पार होने वाले लकड़ी के ट्रकों को रोकें ?'

सुझाव ज्यादा नहीं थे। नदी-नालों में मछलियां भी ज्यादा नहीं थीं। जगत-पुत्रों के मासूम चेहरों पर भूख, डर, आतंक और तरह-तरह की शंकाकुशंका का भाव था। वे अंधेरे में टटोल रहे थे। तभी मनकू ओझा बोला था—'इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है और इसलिए यह भयंकर अकाल पड़ा है। धरती जब दरकती है तो वह दिन हम लोगों के लिए बहुत भयानक होता है।'

'पंचो, मैं कुछ कहूं।'

'हां-हां, बोलो नरसू ?'

'मनकू मेरा दोस्त है। उससे मेरी दांत-काटी रोटी है। उससे पूछा जाए उसने मेरी औरत को क्यों बहकाया ? उससे पूछा जाए वह मेरी औरत को रात को अपने झोंपड़े में क्यों बुलाता है ? उससे पूछा जाए वह अपनी करनी यहां क्यों नहीं बताता ?'

पंचायत में एक अजीब-सा सन्नाटा खिंच गया था। सबके चेहरे पर एक अजीब भारीपन आ गया था। किसीने पूछा, 'मनकू ओझा, तुम कहते हो कि इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है। ठीक है। अब तुम्हारी नीयत के बारे में पूछा जा रहा है, पहले उसका जवाब दो।'

'यह झूठ है, सफेद झूठ। मैं रात में दूसरों की औरत को क्यों बुलाने लगा !'

[illegible] कहीं [illegible] कि [illegible] हो। मगनू [illegible] की [illegible] मगनू ने [illegible]।

[illegible] की [illegible] सको [illegible] कहा।' मगनू ने [illegible] दिया।

"नहीं नहीं नहीं !" [illegible] औरतों के [illegible] से [illegible] पड़ी [illegible] मगनू के [illegible] थी। [illegible] मगनू का कोई [illegible] नहीं है।'

इस [illegible] से [illegible] बात [illegible] गई। [illegible] मगनू, [illegible] है कि वह [illegible] तुम्हारे [illegible] और [illegible] नहीं [illegible] हो।'

इतना बार ही [illegible] पड़ गई थी। मगनू का दिल भी [illegible] गया था। उसने कभी यह भी नहीं सोचा था कि [illegible] का दुख और नारी का [illegible] कर दे। आखिर [illegible] के लिए कहना कहा तक ठीक है? और बात भी [illegible] की दुख होती है दूसरे की दुख जो यह मगनू का [illegible] पड़ा। आखिर [illegible] वह बाहर [illegible] पर ही तो बैठा रहता था। दस मिनट, पन्द्रह मिनट और फिर आया और [illegible] बैठा। [illegible] अभी [illegible] है। यदि कामो न हो तो उसका [illegible] करेगा? [illegible] उसके मन में भी [illegible] था। मगनू ने उसका [illegible] गया था, इसलिए वह चाहता यह था कि वह इस गांव से बाहर चला जाए। लेकिन यह बात उसने अच्छी नहीं की थी, क्योंकि कमली ने यदि कोई दूसरा मरद रख लिया तो? उसने मगनू का क्या बुरा था? लेकिन अक्सर बुरा था। आखिर [illegible] यह कहने की क्या जरूरत पड़ गई थी कि गांव में पाप बहुत बढ़ गया है, इसलिए यह धरती दरक गई है! क्या वह नहीं जानता था कि वह दूसरे की औरत के साथ है और यह पाप है, जुर्म है। फिर वो इतनी नाक लगा रहा था? लेकिन यह क्या हो गया? जिसे वह जान से भी ज्यादा चाहता था वह चली जाएगी? [illegible]क!

मनकू भी हक्का-बक्का रह गया था। वह सोच नहीं पा
था कि यह क्या हो गया ?…उसे लॉटरी मिली या सजा?
ी बहुत सुन्दर थी। उसके तीखे नाक-नक्श, उसके हाथ-
व बेहद अच्छे और सुडौल थे। वह चलती तो जैसे गाज
रही हो। लेकिन वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी के लिए तैयार
था। उसे यही अच्छा लगता था कि अमली नरसू की
त बनी रहे। वह उसकी सारी जिम्मेदारी उठाता रहे और
उसके काम भी आती रहे। लेकिन भगत तो कहता था कि
त सारे जंजाल की जड़ होती है, और बहुत गलीज ! यदि
सुन्दर से सुन्दर औरत का नर-ककाल देख ले तो उलटे
भाग जाएगा। लेकिन सच पूछो तो वह भी अमली पर जान
कने लगा था। उसके लिए वह सब कुछ कुर्बान करने के
तैयार था। वह चला जाएगा…इस गांव की छांह से भी
निकल जाएगा…सब कुछ छोड़-छाड़कर। अब इस गांव में
ही क्या है ?…नदी-नालों का पानी सूख गया है, मछ-
ी भी नहीं हैं कद-मूल कुछ भी तो नहीं है खाने को…मुर्ग-
रियों की ठठरियां निकल आई हैं…मुझे प्यार था तो सिर्फ
नरसू और उसकी औरत से !

लेकिन आज इस नरसू को क्या हो गया ? क्यों उसने अपने
झाड़ लिए ? मैं भी तो उसकी जूठन ही खा रहा था, तो
मेरी जूठन से क्या एतराज !

घर जाने पर अमली को लगा जैसे वह डार से बिछुड़ गई
उसने नरसू के दोनों पांव पकड़कर कहा, 'मुझे माफ कर दो
ता, माफ कर दो। क्यों घर से निकाल रहे हो ?'

'मैंने वही किया पगली, जो मुझे करना चाहिए था। और
ज ही नहीं, मुझे यह काम बहुत पहले ही करना चाहिए
।'

'क्या तुम्हें मेरे और मनकू के बारे में पता था ?'

'मुझे अच्छी तरह से पता था, पगली ! और मैं सोचता भी
कि जब एक आदमी के दो औरतें हो सकती हैं तो एक औरत
दो मरद क्यों नहीं हो सकते ? लेकिन गांव वालों की बातों
मैं तंग आ चुका था। मुझे कोई-न-कोई रास्ता निकालना
था।'

थी। उन्होंने अपनी मूंछों पर ताव देते हुए कहा, 'अरे, पुलिस वाले अपने बाप के भी नहीं होते !'

इस जुमले का सिलसिला पकड़ पाना पुलिस वालों के लिए जरा मुश्किल था। इसलिए दारोगाजी ने बात को साफ करते हुए कहा, 'मेरा मतलब यह था कि यदि मैं नहीं तो मेरा बाप कोई और इन बदमाशों को ठिकाने लगा देता।'

'ऐसा नहीं है, हुजूर ! वरना पिछले दारोगाजी के सामने ये बदमाश इतना सिर नहीं उठा सकते थे !'

'अच्छा भाई, मैं चलूं !' कहते हुए दारोगाजी थाना-कम्पाउण्ड में बने अपने क्वार्टर में चले गए। लोगों ने उठकर खट-खट सेल्यूट दिया। जाते समय उनकी चाल में फर्क आ गया था।

दारोगा ने भद्दूसिंह को जीप से भिजवाया था। जिस गाड़ी पर भद्दूसिंह को बैठना पड़ा था, उसका ड्राइवर उसे पहचानता था। यह ड्राइवर हर साल बीड़ी वालों के साथ आता था और कभी-कभी दारू वगैरह पीने के लिए उसने गांव में भाईचारा पैदा कर लिया था। बोला, 'क्यों भद्दू सेठ, साला दारोगा बहुत मक्खन मारता था, क्या बात है ? कोई सांठ-गांठ हो गई क्या ? कहीं तुम्हें यह इन्फार्मर तो नहीं बनाना चाहता ?' उसने थोड़ी देर के लिए जीप रोकी। दो बीड़ी सुलगाईं। एक भद्दूसिंह को पेश की।

भद्दूसिंह का ध्यान उसकी बातचीत में नहीं रम रहा था। अनमने भाव से बोला, 'कुछ समझ में नहीं आता, आखिर यह आदमी मुझसे चाहता क्या है ?'

'यह भी खूब कही, भद्दूसिंह ! अंधा क्या चाहे, बस दो आंखें ! वह चाहता है कि उसके इलाके में जुए, सट्टे और चकलेखाने के फड़ जमते रहें। सेठों और बनियों के छौने चकलेखाने आबाद करते रहें और उसे पैसे मिलते रहें !'

'जानता हूं, जानता हूं, ड्राइवर साहब ! लेकिन ये सब फालतू बातें मुझसे करने से क्या मतलब ?'

'वाह रे मेरे भोले राजा !' बीड़ी का एक लम्बा कश खींचते हुए उसने कहा, 'तो क्या तुम समझते हो यह सारा काम पुलिस

[illegible] । वे अपने थाने [illegible] पुलिस के जुल्म करते हैं [illegible] । और [illegible] अन्याय है मैं कुछ उनके जुल्म [illegible] । पुल के पार की [illegible] [illegible] ।"

यह भी सुनने नहीं देगा।'

पुलिसवालों [illegible] बड़े [illegible] । यहाँ पर [illegible] न जिसने [illegible] सामने [illegible] । पुलिस के [illegible] यहाँ और [illegible] है। और ! इसका [illegible] केवल [illegible] किया जा सकता है, क्योंकि उनके [illegible] का मूल होता है।'

ठीक कहते हो भैया ! मुझे भी ये [illegible] होगा।'

रोटी की [illegible] का [illegible] पता नहीं चल सका।

मद्दूसिंह ने देखा अपनी ओर उनके अपनी [illegible] के [illegible] पीछे का [illegible] की [illegible] पर [illegible] देख रहे थे। उन्होंने [illegible] का [illegible] और [illegible] किया लेकिन [illegible] से 'निर्दोष' कहकर वह चला गया।

इसी बीच वे सब जमा हो गए। 'क्यों ? क्या बोल रहा था दारोगाजी ?' सब लोगों ने एक साथ पूछना शुरू किया।

'कहाँ है वह चाचा जो तुम लोग पर क्यों नहीं गए ?'

'मद्दू भैया हम लोगों को यह डर था कि कहीं वह जालिम तुम्हें पकड़ न ले। अमली आँखें मलते हुए बोली।

'यदि वह भैया को पकड़ता तो यह तीर उसके सीने के पार हो जाता।' कालिया बोला।

'अरे, ठीक है ठीक है। बस रहने दे, आगे की सोचें।'

'क्या ?'

'मैं सोच रहा था, अब अपने लोग दुर्गादास पत्रकार के यहाँ चलकर उनसे पूरी बात कहें। वे लोग बड़े बीवट के होते हैं।'

थोड़ी ही देर में यह काफिला दुर्गादास के घर पर था। दरवाजा भीतर से बन्द था। मद्दूसिंह ने आवाज लगाई, तो उनकी पत्नी ने दरवाजा खोला और पूछने पर बताया कि वे बड़े कलेक्टर साहब से मिलने गए हैं। लेकिन तभी उनके छोटे लड़के ने उनके ऊपर सोये रहने की जानकारी दी।

[illegible], उन्हें उठाइए। हम पर बहुत जुलुम हुआ है।'

भद्दू बोला।

'जुलुम, अत्याचार···' वे दर्द-भरे स्वर में बोलीं—'मैं अभी उठाये देती हूं।'

लेकिन उन्हें इसकी जहमत नहीं उठानी पड़ी। लंबे-चौड़े और गोल-मटोल चेहरे के मालिक दुर्गालालजी नंगे बदन, बस एक अदद लुंगी और एक अदद कान में जनेऊ डाले नीचे आ रहे थे। वे एक तरह से त्रिकालदर्शी थे। छूटते ही बोले—'मैं जानता हूं भद्दूसिंह, अमली के साथ जो कुछ भी हुआ वह प्रजा-राज पर कलंक है। तुम लोग बैठो। इनमें से अमली किसका नाम है?'

अब अमली सामने आ गई थी। उन्होंने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—'अमली, तुम हमें अपना भाई समझो और तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ, उसका बयान करो।'

अमली ने बलात्कार की कोशिश का तमाम किस्सा बयान करते हुए कहा—'पंडितजी महाराज, वह कहता था कि तुम्हारा पति अब तुम्हें वह सुख नहीं दे सकता जो जमादारजी या दारोगाजी दे सकते हैं। उन लोगों ने तो मुझे एकदम नीचे गिरा दिया, हुजूर! वह तो अच्छा हुआ, ऐन मौके पर रामसिंह आ गया, वर्ना मैं तो कहीं की नहीं रहती।'

'ठीक है, ठीक है अमली!' और फिर एकाएक भद्दूसिंह की ओर मुखातिब होते हुए बोले, 'अब क्या करना है भद्दूसिंह?'

'हम तो आपसे ही दिशादर्शन लेने के लिए आए हैं देवता!'

'मैं अभी कल साले हरामजादों का भंडाफोड़ करता हूं। अखबार में छपते ही राजधानी में भूकंप मच जाएगा और फिर इन हरामजादों का पत्ता यहां से साफ समझो।'

एकाएक उन्होंने भद्दूसिंह के कंधे पर हाथ रखकर कहा—'थोड़ा पैसा जमा कर लो···मीटिंग होगी, भोंपू लगाना पड़ेगा, गली-गली कूचे-कूचे में पोस्टर लगाना होगा—'सच्चे का बोलबाला, पुलिस का मुंह काला', 'बच्चा-बच्चा कह रहा है, दारोगाजी नाले में बह रहा है।' अखबारों में बड़े-बड़े हेडिंग में छपेगा—'पुलिस का भयंकर अत्याचार···' राजधानी में जाना पड़ेगा—मैं पन्द्रह रोज में साले की छुट्टी करवाकर रहूंगा।

साले को जीप से नहीं उतार दिया तो मेरा नाम भी दुर्गालाल नहीं।

भद्दूसिंह ने चिल्लाकर कहा, 'बोलो पंडित दुर्गालालजी की जय !'

और आदिवासी मर्द-औरतों ने भी जोर से उनकी जय-जयकार के नारे लगा दिए।

पंडित दुर्गालालजी भी खुश थे। उन्होंने किसी महान ऋषि की तरह अपना हाथ उठाकर कहा—'भाइयो, शांत हो जाइए। शांति, शांति। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। अब या तो दारोगाजी रहेंगे या हम। आप सब लोग घर जाकर आराम से सो जाइए। सारी जिम्मेदारी मेरी। आप का दुःख-दर्द अब मैंने अपने सिर पर उठा लिया है।'

जब सब लोग पंडितजी से विदा होने लगे तो उन्होंने भद्दूसिंह के कानों में कुछ कहा 'इसकी फिक्र मत कीजिए पंडितजी, बस आपका आशीर्वाद चाहिए।' भद्दूसिंह ने आश्वासन दिया।

पूरा काफिला वहां से चलता बना। रास्ते में आबकारी ठेकेदार का नौकर रतनलाल मिला, उसने छूटते ही कहा—'क्यों भद्दूसिंह, ये एक-से-एक माल बटोरकर कहां ले गया था ?'

'तेरे बाप के पास !' भद्दूसिंह कड़ककर बोला।

'क्या बोल रहा है उस्ताद ?' रतनलाल बोला।

'क्यों, सवेरे-सवेरे लगा ली है क्या ? ठेकेदार साहब से बोलना पड़ेगा—रतना आधी पी जाता है और पानी मिलाकर हिसाब पूरा कर देता है !'

तेरे पैर पड़ता हूं, उस्ताद ! ऐसा मत करना। लाला का बच्चा बहुत हरामखोर है। अपने लड़के-बहू को भी नहीं छोड़ता। एक-एक पैसे का हिसाब रखता है। साला मेरी छुट्टी कर देगा। बाल-बच्चे भूखे मर जाएंगे।'

'अच्छा, जा, आज छोड़ दिया। ये सब तेरी अम्मा हैं, समझा ! आइंदा ऐसी हरकत की तो छुट्टी।'

'समझ गया, उस्ताद समझ गया ! रात को दुकान पर आना। गरम-गरम पकौड़ों और चने के साथ छानेंगे।'

'देखा जाएगा। अब तू अपने रास्ते लग और हम लोग अपने रास्ते चलते हैं।'

रतन चौराहे से कट गया। मद्‌दूसिंह, अमली का मर्द और गांव वाले अपनी राह लगे। वे लोग थोड़ी दूर ही चले होंगे कि रास्ते में ही जैसवाल लाला मिला।

'क्यों रे, कहां से आ रहे हो तुम लोग?' उसने मालिकाना अंदाज में कहा। सभी लोगों ने लाला को हाथ जोड़ दिए थे।

'कहीं से नहीं लालाजी, जरा यूं ही बस्ती तक चले गए थे।' मद्‌दूसिंह बोला।

'उड़ो मत। मुझे सब मालूम है। अमली की खींचातानी हुई थी। तुम लोग साले इतने कम कपड़े पहनते हो कि विश्वामित्र की नीयत भी डोल जाए।' और वह 'खी-खी' कर हंसने लगा।

लाला में सूअर से ज्यादा चर्बी थी, वह तोंदियल था और हंसता तो और बुरा लगता। उसकी फतुही और पुरानी धोती उसको और भद्दा बना देती थी। उसे बस पैसे गिनने का शौक था। आदिवासियों को लगने वाले साड़ी, धोती, फेंटा और मोटे कपड़े की दुकान उसने लगा रखी थी। वह अनाप-शनाप दामों पर कपड़ा बेचता था, ब्याजखोरी करता था, गहने हजम कर लेता था, शराब बेचता था।

'कपड़ा खरीदने के लिए पैसा भी तो चाहिए, लालाजी!' मद्‌दूसिंह बोला।

'कांचली और फेंटा देगा, लाला? चल, कल हम तेरी दुकान पर आते हैं।' अमली बोली।

'तो मैंने कब मना किया तुम लोगों को?'

'लेकिन पैसे अगली दीवाली को मिलेंगे?'

'अरे, तो पैसे कौन मड़ुआ अभी मांगता है! दे देना। बस, कभी-कभार आकर घर का काम कर देना।'

'ठीक है, लालाजी!'

'आप तो सब जानते हैं फिर क्यों पूछ रहे हैं। जानना ही चाहते हो तो बता दूं, हम लोग थाने से आ रहे हैं।' मद्‌दूसिंह बोला।

'शिव-शिव, शिव-शिव! क्या म्लेच्छ बात करते हो? अरे, दारोगा साहब तो देवता आदमी हैं। उनसे लड़ाई-झगड़ा मत करना भाई, वर्ना पीसकर रख देंगे!'

'और फिर दुर्गालाल पत्रकार के यहाँ भी गए थे।'

'वे भी देवता आदमी हैं, भद्दूसिंह !···क्यों, कोई खास बात हो गई क्या ?' लालाजी ने प्रेम से सने-पगे स्वर में पूछा।

'लालाजी यदि आपकी औरत को कोई घर से खींचकर ले जाए या कोई घर में घुसकर बलात्कार करने की कोशिश करे तो आपको क्या कुछ भी नहीं लगेगा ?'

'छि छि छिः ! कैसी बातें करते हो, भद्दूसिंह ! इनकी-गवार औरतों से तुम शरीफ घरों की औरतों की बराबरी करते हो। यह सब तुम्हें शोभा नहीं देता। खैर, छोड़ो इन बातों को। भैया, मैं तो बस दारोगा साहब और दुर्गालालजी का भक्त हूं। चट्टान से सिर टकराने से अपना ही सिर फूटता है। मेरी मानो तो दुर्गालालजी जैसे महान पत्रकार को भी इस झमेले में मत डालो और वैसे भी वे ऐसे फटीचर मामलों में अपनी टांग नहीं अड़ाते क्यों, दुर्गालालजी तो कुछ भी नहीं बोले होंगे !'

'क्यों न बोलते भला ! वे दोगले थोड़े हैं कि गंगा गए तो गंगाराम और जमना गए तो जमनाराम !'

लाला समझ गए भद्दूसिंह गुस्से में है और गुस्से में आदमी बड़े आदमियों को भी कुछ बोल जाता है। बस खाते हुए और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले—'मैं वही तो पूछ रहा हूं कि उन्होंने क्या कहा ?'

'उन्होंने कहा कि थाने टिनपटिए की खटिया खड़ी करवा देंगे··· थाने का दस दिन में बिस्तर बंधवा देंगे। आज जो कुछ भी बसती के साथ हुआ है कल वही सब कुछ उनकी औरत के साथ भी हो सकता है। उन्होंने चंदा जमा करने के लिए कहा है। फिर भयंकर मठाकोड़ा होगा। पहले इस शहर में, फिर कौशल में अनशन होगा, पोस्टर छापे जाएंगे।'

'अरे मेरी मां !' लालाजी बोले, देखो भैया, हम दुर्गालाल जी के भक्त जरूर हैं, वे बड़े आदमी हैं, हमारा क्या जाते हैं। लेकिन तुम लोग चंदे वगैरह के फेर में मत पड़ो।'

अरे भद्दूसिंह ! तू तो भैया लालाजी को भी अपना यार समझ रहा है।' ··· बोला।

थाने के लिए मुड़े ही थे कि लालाजी ने सामने ··· कुछ ··· देखकर चूर-चूर हो गए।

होगे। बोलो, भेज दूं पचास बोतल ?'

'पैसा नहीं है, लालाजी !'

'अरे, हम पैसा थोड़े माग रहे हैं। बस, आकर अंगूठा लगा देना। पैसा साल भर बाद आ जाएगा। साले तुम लोग भी बड़े छछूंदर हो। अबे, तुम लोगों के पास जब भी कोई नया जीव आता है तो शराब की नदियां कौन बहाता है ? जब तक हमारी जान में जान है, तुमको जंगल में मंगल करने से रोका किसने है ? आज तुम लोग बड़े-बड़े आदमियों से मिलकर आ रहे हो, हो जाए कुछ ! अभी एक घंटे में ही उस हरामखोर को बोतलें लेकर भेजता हूं। दिन से लेना शुरू करो और रात बारह बजे खत्म करो।'

'ठीक है, लालाजी ! भेज देना। आज जश्न हो जाएगा।' कालिया बोला।

सुबह भद्दूसिंह देर से उठा। लेकिन फिर भी वह सतर्क था। कल की बात के बारे में ही सोच रहा था। पुलिस का मुखबिर तो वह हरगिज-हरगिज नहीं बनेगा। यह सच है कि वह आदिवासी नहीं है, लेकिन आज से पन्द्रह साल पहले जब वह यहां आया था तो भूख से निढाल था। बस के अड्डे पर मांगने पर भी उसे किसीने एक पैसा भी नहीं दिया था। एक आदिवासी मर्द-औरत अपनी गंदी पोटली खोलकर मक्के की रोटी तोड़-तोड़कर खा रहे थे, उन लोगों ने बड़े प्यार से बुलाया और उसे प्याज-रोटी दी थी। इसके बाद दो लोटे पानी पीकर उसे कितनी तृप्ति मिली थी। कुछ रोज वह होटल में कप-प्लेट धोने का काम करता रहा। दिन-भर तोड़-तोड़ मेहनत करता, जिससे उसे दो जून का खाना मिल जाता था। उसे अपनी जिंदगी से कोई शिकवा नहीं था, आखिर उसे दो जून का खाना ही तो चाहिए था। फिर उसने पान का एक ठेला किराये पर ले लिया था और पानवाला बन गया। उसी समय से उसकी दुकान पर रईस, बनिये, अखबार वाले, पुलिसवाले, नेता—सभी लोग आने-जाने लगे थे।

उसे पुलिस से घृणा थी। उनके हथकंडों से वह पूरी तरह से वाकिफ भी था भद्दू के मां-बाप कौन थे, वह कहां से आया

'और फिर दुर्गालाल पत्रकार के यहां भी गए थे।'

'वे भी देवता आदमी हैं, भद्दूसिंह!...क्यों, कोई खास बात हो गई क्या?' लालाजी ने प्रेम में सने-पगे स्वर में पूछा।

'लालाजी यदि आपकी औरत को कोई घर से खींचकर ले जाए या कोई घर में घुसकर बलात्कार करने की कोशिश करे तो आपको क्या कुछ भी नहीं लगेगा?'

'छि: छि: छि:! कैसी बातें करते हो, भद्दूसिंह! इन छोड़-गंवार औरतों से तुम शरीफ घरों की औरतों की बराबरी करते हो। यह सब तुम्हें शोभा नहीं देता। खैर, छोड़ो इन बातों को। भैया, मैं तो बस दारोगा साहब और दुर्गालालजी का भक्त हूं। चट्टान से सिर टकराने से अपना ही सिर फूटता है। मेरी मानो तो दुर्गालालजी जैसे महान पत्रकार को भी इस झमेले में मत डालो और वैसे भी वे ऐसे फटियल मामलों में अपनी टांग नहीं अड़ाते। क्यों, दुर्गालालजी तो कुछ भी नहीं बोले होंगे!'

'क्यों न बोलते भला! वे दोगले थोड़े हैं कि गंगा गए तो गंगाराम और जमना गए तो जमनाराम!'

लाला समझ गए, भद्दूसिंह गुस्से में है और गुस्से में आदमी बड़े आदमियों को भी कुछ बोल जाता है। कम खाते हुए और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले—'मैं वही तो पूछ रहा हूं कि उन्होंने क्या कहा?'

'उन्होंने कहा कि साले टिनपटिए की खटिया खड़ी करवा देंगे...साले का दस दिन में बिस्तर बंधवा देंगे। आज जो कुछ भी अमली के साथ हुआ है, कल वही सब कुछ उनकी औरत के साथ भी हो सकता है। उन्होंने चंदा जमा करने के लिए कहा है। फिर भयंकर भंडाफोड़ा होगा। पहले इस शहर में, फिर भोपाल में सत्याग्रह होगा, पोस्टर छापे जाएंगे।'

'अरे मेरी मां!' लालाजी बोले, 'देखो भैया, हम दुर्गालाल जी के भक्त जरूर हैं, वे बड़े आदमी हैं, हलाल का खाते हैं। लेकिन तुम लोग चंदे वगैरह के फेर में मत पड़ो।'

'अरे भद्दूसिंह! चलो भैया, लालाजी को भी अपना धंधा-पंदा करने दो।' कालिया बोला।

वे लोग सब जाने के लिए मुड़े ही थे कि लालाजी ने दाना डाला, 'अरे, आज तो तुम सब लोग थककर चूर-चूर हो गए

होंगे। बोलो, भेज दूं पचास बोतल ?'

'पैसा नहीं है, लालाजी !'

'अरे, हम *पैसा* थोड़े मांग रहे हैं। बस, आकर अंगूठा लगा देना। पैसा सालभर बाद आ जाएगा। साले तुम लोग भी बड़े छछूंदर हो। अबे, तुम लोगों के पास जब भी कोई नया जीव आता है तो शराब की नदियां कौन बहाता है ? जब तक हमारी जान में जान है, तुमको जंगल में मंगल करने से रोका किसने है ? आज तुम लोग बड़े-बड़े आदमियों से मिलकर आ रहे हो, हो जाए कुछ ! अभी एक घंटे में ही उस हरामखोर को बोतलें लेकर भेजता हूं। दिन से लेना शुरू करो और रात बारह बजे खत्म करो।'

'ठीक है, लालाजी ! भेज देना। आज जश्न हो जाएगा।' कालिया बोला।

सुबह भद्दूसिंह देर से उठा। लेकिन फिर भी वह सतर्क था। कल की बात के बारे में ही सोच रहा था। पुलिस का मुखबिर तो वह हरगिज-हरगिज नहीं बनेगा। यह सच है कि वह आदिवासी नहीं है, लेकिन आज से पन्द्रह साल पहले जब वह यहां आया था तो भूख से निढाल था। बस के अड्डे पर मांगने पर भी उसे किसीने एक पैसा भी नहीं दिया था। एक आदिवासी मर्द-औरत अपनी गंदी पोटली खोलकर मक्के की रोटी तोड़-तोड़कर खा रहे थे। उन लोगों ने बड़े प्यार से बुलाया और उसे प्याज-रोटी दी थी। इसके बाद दो लोटे पानी पीकर उसे कितनी तृप्ति मिली थी। कुछ रोज वह होटल में कप-प्लेट धोने का काम करता रहा। दिन-भर जी-तोड़ मेहनत करता, जिससे उसे दो जून का खाना मिल जाता था। उसे अपनी जिंदगी से कोई शिकवा नहीं था, आखिर उसे दो जून का खाना ही तो चाहिए था। फिर उसने पान का एक ठेला किराये पर ले लिया था और पानवाला बन गया। उसी समय से उसकी दुकान पर रईस, बनिये, अखबार वाले, पुलिसवाले, नेता—सभी लोग आने-जाने लगे थे।

उसे पुलिस से घृणा थी। *उनके हथकंडों से वह* पूरी तरह से वाकिफ भी था भद्दू के मां-बाप कौन थे, वह कहां से आया

'और फिर दुर्गालाल पत्रकार के यहां भी गए थे।'

'वे भी देवता आदमी हैं, भद्दूसिंह !···क्यों, कोई खास बात हो गई क्या ?' लालाजी ने प्रेम से सने-पगे स्वर में पूछा।

'लालाजी यदि आपकी औरत को कोई घर से खींचकर ले भागे या कोई घर में घुसकर बलात्कार करने की कोशिश करे तो आपको क्या कुछ भी नहीं लगेगा ?'

'छि छि छि: ! कैसी बातें करते हो, भद्दूसिंह ! इन गोंड़-गंवार औरतों से तुम शरीफ घरों की औरतों की बराबरी करते हो। यह सब तुम्हें शोभा नहीं देता। खैर, छोड़ो इन बातों को। भैया, मैं तो बस दारोगा साहब और दुर्गालालजी का भक्त हूं। चट्टान से सिर टकराने से अपना ही सिर फूटता है। मेरी मानो तो दुर्गालालजी जैसे महान पत्रकार को भी इस झमेले में मत डालो और वैसे भी वे ऐसे फटियल मामलों में अपनी टांग नहीं अड़ाते। क्यों, दुर्गालालजी तो कुछ भी नहीं बोले होंगे !'

'क्यों न बोलते भला ! वे दोगले घोड़े हैं कि गंगा गए तो गंगाराम और जमना गए तो जमनाराम !'

लाला समझ गए, भद्दूसिंह गुस्से में है और गुस्से में आदमी बड़े आदमियों को भी कुछ बोल जाता है। गम खाते हुए और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले—'मैं यही तो पूछ रहा हूं कि उन्होंने क्या कहा ?'

'उन्होंने कहा कि साले टिनपटिए की खटिया खड़ी करवा देंगे···साले का दस दिन में बिस्तर बंधवा देंगे। आज जो कुछ भी असली के साथ हुआ है, कल वही सब कुछ उनकी औरत के साथ भी हो सकता है। उन्होंने चंदा जमा करने के लिए कहा है। फिर भयंकर भंडाफोड़ होगा। पहले इस शहर में, फिर भोपाल में सत्याग्रह होगा, पोस्टर छापे जाएंगे।'

'अरे मेरी मां !' लालाजी बोले, 'देखो भैया, हम दुर्गालाल जी के भक्त जरूर हैं, वे बड़े आदमी हैं, हलाल का खाते हैं। लेकिन तुम लोग चंदे वगैरह के फेर में मत पड़ो।'

'अरे भद्दूसिंह ! चलो भैया, लालाजी को भी अपना धंधा-चंदा करने दो।' कालिया बोला।

वे लोग सब जाने के लिए मुड़े ही थे ~
डाला, 'अरे, आज तो तुम सब लोग

होंगे। बोलो, भेज दूं पचास बोतल ?'

'पैसा नहीं है, लालाजी !'

'अरे, हम पैसा थोड़े मांग रहे हैं। बस, आकर अंगूठा लगा देना। पैसा सालभर बाद आ जाएगा। साले तुम लोग भी बड़े छछूंदर हो। अबे, तुम लोगों के पास जब भी कोई नया जीव आता है तो शराब की नदियां कौन बहाता है ? जब तक हमारी जान में जान है, तुमको जंगल में मंगल करने से रोका किसने है ? आज तुम लोग बड़े-बड़े आदमियों से मिलकर आ रहे हो, हो जाए कुछ ! अभी एक घंटे में ही उस हरामखोर को बोतलें लेकर भेजता हूं। दिन से लेना शुरू करो और रात बारह बजे खत्म करो।'

'ठीक है, लालाजी ! भेज देना। आज जश्न हो जाएगा।' कालिया बोला।

सुबह भद्दूसिंह देर से उठा। लेकिन फिर भी वह सतर्क था। कल की बात के बारे में ही सोच रहा था। पुलिस का मुखबिर तो वह हरगिज-हरगिज नहीं बनेगा। यह सच है कि वह आदिवासी नहीं है, लेकिन आज से पन्द्रह साल पहले जब वह यहां आया था तो भूख से निढाल था। बस के अड्डे पर मांगने पर भी उसे किसीने एक पैसा भी नहीं दिया था। एक आदिवासी मर्द-औरत अपनी गंदी पोटली खोलकर मक्के की रोटी तोड़-तोड़कर खा रहे थे। उन लोगों ने बड़े प्यार से बुलाया और उसे प्याज-रोटी दी थी। इसके बाद दो लोटे पानी पीकर उसे कितनी तृप्ति मिली थी। कुछ रोज वह होटल में कप-बसी धोने का काम करता रहा। दिन-भर जी-तोड़ मेहनत करता, जिससे उसे दो जून का खाना मिल जाता था। उसे अपनी जिंदगी से कोई शिकवा नहीं था, आखिर उसे दो जून का खाना ही तो चाहिए था। फिर उसने पान का एक ठेला किराये पर ले लिया था और पानवाला बन गया। उसी समय से उसकी दुकान पर रईस, बनिये, अखबार वाले, पुलिसवाले, नेता—सभी लोग आने-जाने लगे थे।

उसे पुलिस से घृणा थी। उनके हथकंडों से वह पूरी तरह से वाकिफ भी था भद्दू के मां-बाप कौन थे,

था, इसकी कोई जानकारी किसी को भी नहीं थी। शायद उसे भी नहीं। अस्पताल में ही उसकी माँ ने दम तोड़ दिया था, बाप का कोई पता था नहीं। आई-समाज में वह पला और बढ़ा। और फिर एक दिन न जाने क्या हुआ कि भाग निकला और भटकते ही यहाँ के बस-अड्डे पर उतर पड़ा था। पन्द्रह साल और आज का दिन — कहीं कुछ भी तो नहीं बदला है। बस, थोड़ा-सा सरकारी अमला बढ़ गया है···पुलिस थाना और बी० डी० ओ० ऑफिस, रेस्ट हाउस कुछ आदिवासी होस्टल, व्यापारियों के कुछ दो मंजिले मकान और दुकानें इधर-उधर उग आई हैं। सब कहीं कुछ भी तो नहीं बदला है। बस, एक दरोगा आता है और चला जाता है। पहले दिन उसे एक आदिवासी ने रूखी-सूखी रोटियां खिलाई थीं, तब से वह यहीं बस गया और उनके हर दुख-सुख में शामिल हो गया। धीरे-धीरे उसका रात का ठेला भी छूट गया था और तब से उसने फोटोग्राफर का धंधा पकड़ लिया था। वह मेलों-ठेलों में जाता और जो कुछ भी कमाकर लाता, उससे उसके बारहों महीनों की रोटियां चलतीं। भोले-भाले आदिवासियों के बीच खुली हवा में जीना उसे बहुत अच्छा लगने लगा था।

अमनी की इज्जत पर हमला ! उसे बहुत बुरा लगा था। वह इसका बदला चुकाना चाहता था और इसीलिए वह पुलिस स्टेशन गया भी था। यदि दारोगाजी से उसे न्याय मिल जाता तो भी उसे तसल्ली हो जाती। लेकिन यहां उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसपर भी जाल फेंका जा रहा है और इसलिए दुर्गालालजी के यहां जाना पड़ा। दुर्गालाल हिम्मत के धनी हैं, किसी से कुछ भी नहीं समझते। दुश्मन को तीन पलटियां खिला देते हैं। लेकिन सवाल आ गया पैसों का। उसने सभी लोगों से सलाह-मशवरा किया और वे सब मिलकर दूसरे दिन रमनैया के पास पहुंचे। रमनैया मद्रास बैंक के नाम से साहूकारी चलाता है। यह कोई बैंक-वैंक नहीं था। कुछ नये आए मद्रासियों ने लेन-देन का धंधा शुरू करके यह नाम रख लिया था।

'तुम्हारा साहूकार कौन है ?' रमनैया ने पूछा था।

'आज तो कोई नहीं है। किसी जमाने में रामकिशन सेठ थे।'

'कौन रामकिशन सेठ ?'

'रामकिशन सेठ बड़े आदमी हैं। गुल्ली, महुआ, इमली वग़ैरह-सी चीजें खरीदकर बम्बई-कलकत्ता भेजते हैं। अमली के बाप को जब उनके खेत का बीस हजार रुपया मुआवजा मिला था, तब भी उसने वह रुपया सेठ के पास ही जमा रखवा दिया था। जब भी उसको पैसे की जरूरत पड़ती तो वह अपनी जमा में से पैसे उधार उठाता, अपनी साख के लिए उसने साहूकार से अपना पूरा पैसा कभी नहीं उठाया।' भद्दूसिंह ने रमनैया को समझाया।

अब गोल चेहरे, आवनूसी रंग और चौड़ी नाक वाले रमनैया की बारी थी। उसने लुंगी ऊपर बांध रखी थी। उसने कहा, 'हम चोटाई का धंधा कभी नहीं करते। कंगाल बैंक और मद्रास बैंक के लोग ही ईमानदारी का चोखा धंधा करते हैं। यदि तुम्हारे पास कोई जेवर या भांडा-कूंडा ही तो ले आओ।'

'वह सब तो हम लोगों के पास नहीं है, सेठ!' सभी एक स्वर से बोले।

'तो फिर खाली-पीली बोम मारता है। हमारा ईमानदारी का धंधा डूबेगा तो कैसे चलेगा? हमारा बाल-बच्चा भूखों नहीं मर जाएगा। रमनैया बोला था।

सभी लोगों के चेहरे पर उदासी घिर आई। भद्दूसिंह सबके साथ उठकर जाने लगा तो रमनैया बोला, 'लगता है तुम लोगों की जरूरत बहुत बड़ा है कितना रुपया चाहिए?'

'यही कोई तीन सौ रुपया लगेगा!' भद्दूसिंह ने सलाह-मशविरा करने के बाद कहा था।

'ऐसा करो, ले जाओ। लेकिन लिखा-पढ़ी सात सौ रुपये की करो और जब तक तुम ये रुपया वापस नहीं कर दोगे तब तक अमली के खेत की फसल मेरी रहेगी।...बोलो, मंजूर? जरा सोच-समझ लो, फिर जवाब दो।'

भद्दू, अमली और सभी लोग बाहर गए। और कहीं से रुपया मिलना मुश्किल था। अमली की इज्जत सबकी इज्जत थी। आखिरकार सबने मिलकर फैसला किया। अमली ने अंगूठा लगा दिया और रुपये लेकर यह काफिला खुशी-खुशी अपने

गांव वापस गया।

दुर्गालालजी पत्रकार के पास तीन सौ रुपये थे। किसी तूफान से टकरा जाने का साहस था। किसीको भी, चाहे वह मिनिस्टर हो या पटवारी, पगड़ी खिसका देने की ताकत थी। उनकी चालाकी, मक्कारी और मुंहफटपने से इलाके में हड़कंप मचा हुआ था। पत्नी से फरमाइश पूछकर वे सुबह की बस से राजधानी के लिए निकल पड़े। वहां वे दोपहरी में पहुंचे और टैक्सी लेकर पगोडा में डेरा डाल दिया। दो-तीन घंटे की नींद निकालकर वे सत्य-तूफान कार्यालय में पहुंचे। तांगे को उन्होंने मधुपी सिनेमा के पास रोका और दस बारह पान की गिलो-रियां और ५५५ सिगरेट का एक टिन और दियासलाई लेकर वे कार्यालय के सामने थे। एक सकरे जीने से वे ऊपर पहुंचे। तब तक प्रोप्राइटर दयाबन्धुजी दफ्तर नहीं पधारे थे। वे साप्ता-हिक के प्रधान सम्पादक भी थे। उनकी कलम का लोहा कलम-कारों को छोड़कर सभी मानते थे। उनकी लेखनीय में यह कमाल पाया जाता था कि वे अपना वार किसी और पर करना चाहते, लेकिन वह घोनरसा हो जाता, इसलिए शहर के बड़े-बड़े मगरमच्छ से लेकर गांव-कस्बे के प्रतिष्ठित जनों पर भी उनका दबदबा था। दुर्गालाल भी एक ऊंची चीज थे। वे अपने काम को बखूबी अंजाम देना चाहते थे। वे अपने समाचारों के प्रकाशन के लिए संपादकीय विभाग के हर सदस्य को पटाए हुए थे, यहां तक कि कम्पोजिटरों तक को उन्होंने अपनी गिरफ्त मे लिया हुआ था। संपादकीय कमरे में बैठे सभी लोगों को उन्होंने गिलोरिया और सिगरेट पेश की और अपने आने का मकसद बताया। उनसे अपने शहर आने का आग्रह किया। सबने यह आश्वासन दिया कि समाचार बड़े बोल्ड अक्षरों मे तीन-चार कॉलम मे आएगा और गवर्नमेंट उस दारोगाजी को उलटा कर देगी। थोड़ी ही देर मे सिल्क का कुर्ता, मर्सराइज की धोती और सुनहरी कमान का चश्मा धारण किए दयाबंधुजी पधारे और अपने केबिन मे चले गए। उनके जाने के पांच मिनट बाद दुर्गालालजी भी चिट लेकर वहां पहुंच गए। दुर्गा-लालजी ने अपना झोला नीचे रखा और दयाबंधुजी के चरणों

पर गिर पड़े।

'क्यों ? क्यों ? खैरियत तो है ना ?' दयाबन्धुजी ने स्नेह-पूर्वक उन्हें उठाया।

'सर, क्या बताऊं, गांव-कस्बे में तो भयकर अत्याचार हो रहा है। दिन-दहाड़े बलात्कार हो जाता है और कोई कुछ देखने-सुनने वाला नहीं है। मुझसे यह सब देखा नहीं जाता।' दुर्गालालजी ने भर्राई हुई आवाज में कहा।

'ऐसी क्या बात है, पुलिस को रिपोर्ट कीजिए। कलेक्टर, एस० पी० से संपर्क साधिए। उन्हें 'नया तूफान' का रेफरेन्स दीजिए।'

'सर, जब बाड़ ही खेत को खा जाए, तो रखवाली कैसे हो ?'

'यानी ?' दयाबन्धुजी ने चश्मे के भीतर से झांकते हुए कहा।

'सरकार, हमारे यहां की एक भीलनी पर दारोगाजी की निगाह पड़ गई। बस, फिर क्या था। उसने उसकी इज्जत लूटने की हर चन्द कोशिश की।'

'अरे, उसकी यह मजाल ! प्रजातन्त्र है, कोई उसके बाप का राज नहीं है। कहो तो अभी पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल या होम मिनिस्टर से बात करूं ?'

'सरकार, चींटी को मारने के लिए हाथी की जरूरत नहीं है। *अभी तो सिर्फ इतना ही चाहता हूं कि डबल कॉलम में समा*-चार छप जाए और अखबार वहां गली-गली में बंट जाए। फिर भी साले का यदि कुछ नहीं बिगड़ा तो आपसे नहीं तो किससे कहूंगे, सर !'

'ठीक है, ठीक है। आप चेतकजी के पास जाइए और उनसे ये सारी बातें कह दीजिए। कहना—मैंने कहा है कि यह समा-चार फ्रंट पेज पर छपना चाहिए।'

दुर्गालाल हाथ जोड़कर उठने वाले ही थे कि दयाबन्धुजी ने उन्हें बैठने का इशारा करते हुए कहा, 'दुर्गालाल, तुम्हारे इलाके में *बनिया-बक्काल बहुत हैं न ? इन लोगों ने आदि*-वासियों का खून चूस-चूसकर काफी पैसा इकट्ठा कर लिया है। क्यों, सच है ना ?'

है। माले भाड़ लगा साले को दस जूते…' थोड़ी ही देर में नींबू का पानी आया…उलटी होने लगी…आधा घंटे में कुछ हालत सुधरी तो वे लोग एक-दूसरे के पैरों पर गिरने लगे। एक ने मुंह धुलाते हुए बेयरा से पूछा, 'आप कौन हैं और किसलिए आए हैं ?…समझ गया, फरिश्ता हो। हाथ धुलाओ… यारो, खाना खा लो। दुर्गालालजी, माफ करना यार !' खाने से निपटते-निपटते रात के बारह बज गए। अब चेतकजी बोले, 'यारो, अब हमारे दोस्त दुर्गालालजी भी अपने साथ चमेली जान के कोठे पर चलेंगे, उसका गाना सुनेंगे। मान्दो तानसेन को भी एक किनारे पर रखती है और फिर हम लोग सब टैक्सियों पर अपने-अपने घर चलेंगे।'

'अरे भाई, टैक्सियों का पैसा कौन देगा ? हमारी जेब में तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं।'

'कैसी बच्चों जैसी बात की है मेरे यार ने। अरे, क्या दुर्गालालजी मर गए ? क्यों दुर्गालालजी ?' चेतकजी ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

'हां-हां, जरूर।' दुर्गालाल ने कहा, 'जरा मैं पेशाबघर से आ जाऊं।'

'जाइए, जरूर जाइए, वरना चमेलीजान दो जूते लगा देगी !'

दुर्गालाल फौरन बाहर गया और एक किनारे पर जाकर नोट गिनने लगे। आज उनकी खैर नहीं थी। किन गुंडों के जाल में आज वे फंस गए थे, उनके साथ ऐसा आज तक नहीं हुआ था। उनको थोड़ी देर के लिए लगा, पुलिस स्टेशन फोन करके हरामजादों को पकड़वा दें। फिर उन्होंने यह खयाल छोड़ दिया… फिर लगा कि कोई गैबी ताकत इन सबको इसी वक्त मार डाले तो वे इस आफत से बच सकते हैं। वरना दूसरे दिन बीवी-बच्चों के लिए कुछ तोहफे ले जाने की बात तो दूर, घर जाने का किराया भी किसी और से लेना होगा। क्या करें, कैसे करें, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वे जल्दी ही ईश्वर का नाम लेते हुए वापस हुए। डरते-डरते उन्होंने चेतकजी से कहा, 'बड़े भैया, आप सब लोग यहीं सो जाइए या मैं टैक्सी बुलवाने का इंतजाम करता हूं। चमेलीजान के यहां इस वक्त जाना ठीक

नहीं है, क्योंकि यह आपकी इज्जत का सवाल है। आप लो शहर के राजा आदमी हैं और इस वक्त चमेलीजान के यह जाएंगे तो कल शहर में हल्ला हो जाएगा।'

'हां-हां, लौंडा ठीक कहता है। आज हम चमेलीजान के क्या, किसी भी जान के यहां नहीं जाएंगे। बुला बे टैक्सी और सुन रे हरामखोर, पैसे दे देना, समझा ?' दुर्गालाल को आदेश देते हुए चेतकजी बोले।

दुर्गालाल ने राहत की सांस ली। उन्हें एकाएक ऐसे लगा जैसे वे अभी चमगादड़ की तरह उलटे लटके हुए थे और अब उनका उद्धार हुआ हो। वे एकदम बाहर गए और सामने के स्टैण्ड से टैक्सी बुलवाई। चेतक और उनके चार दोस्त आगे-आगे होटल के सामने के दरवाजे की ओर बढ़े। उनमें से एक होटल की सीढ़ियों पर ठिठका और उसने दुर्गालाल से कहा, 'जल्दी मेरे सीने पर हाथ रखकर कह—जब भी आएगा अपने बाप को नहीं भूलेगा…'

'चलो भाई, चलो। साला यह क्या भूलेगा ! यदि भूलेगा तो साले की चमड़ी खींच लूंगा ! क्यों बे !' चेतकजी ने स्नेह से दुर्गालाल के सिर पर हाथ रखते हुए कहा और टैक्सी पर बैठ गए। और लोग भी उसमें घुस गए। टैक्सी बढ़ने तक उनकी जान में जान नहीं थी। वे अन्दर जाकर सो गए। मच्छरों और खटमलों के होने के बावजूद उन्हें गहरी नींद आ गई।

'नया तूफान' का अंक आते ही बाग में तहलका मच गया। फ्रंट पेज पर मोटे-मोटे अक्षरों में 'असली बलात्कार कांड' छपा था… पुलिस के जुल्म की दास्तान जितने चटपटे ढंग से कही जा सकती थी, कही गई थी। आज सौ कॉपियां और मंगवा ली गई थीं। हर गली-कूचे में बस उसी की चर्चा थी। दुर्गालाल के यहां भद्दूसिंह आया हुआ था। बीच में एक होटल में वह चाय पीने के लिए रुका था। वहां दो-चार नेता और स्टूडेंट टाइप बैल-बॉटम वाले चार नौजवान 'नया तूफान' की ही चर्चा कर रहे थे। अनेक लोग दुर्गालालजी की शेरदिली की तारीफ कर रहे थे। … दबी जुबान से यह भी कह रहे थे कि अब उसकी … भी उसे पानी की एक-एक बूंद के लिए

तरसा-तरसाकर मार डालेंगे। कब कौन से कांड में फांस दें, दुर्गालाल तो क्या उसके बाप को भी नहीं मालूम होगा। किसी ने बताया कि सुबह दारोगाजी किसी से कह रहे थे,"साला जर्नलिस्ट की दुम बना फिरता है। पत्रकारी का बिल्ला न उसकी दुम में घुसेड़ दिया तो मेरा नाम बदल देना। मैंने ऐसे ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे' दो कौड़ी के पत्रकार बहुत देखे हैं। मैं सब जानता हूं। साला उस भोंडन से तीन सौ रुपये लेकर भोपाल गया, दारू पीकर मौज मारी और मुझे धमकाता है बदज़ात !

कोई कह रहा था कि दुर्गालाल सी० एम० और तमाम एम० एल० ए० साहबों से मिलकर आ रहा है। दारोगा को चित करके ही दम लेगा···कोई कहता—मिनिस्टर और एम० एल० ए० खुद दुर्गालालजी को छोड़ने अपने बंगले के गेट तक आए थे। मिनिस्टर साहब ने अपने ड्राइवर से कहा था कि उन्हें बस के अड्डे तक छोड़ आए। बंगले में उनकी खूब खातिर-तवज्जो की गई और यह आश्वासन भी दिया गया कि अब दारोगाजी को प्रदेश के काले पानी में—मतलब झाबुआ-बस्तर में तैरने के लिए भेज दिया जाएगा। साले को पुलिस की वर्दी नहीं पहनने दी जाएगी। घूमो बेटा तीन कौड़ी की खटरा साइकिल पर। अभी जो तंबाकू वालों और ठेकेदारों की जीप मिल जाती है, फिर लेना ! कोई कुत्ता नहीं पूछेगा ? मजलूमों को बहुत सताया है। ईश्वर के यहां देर है, अन्धेर नहीं।

शहर में अफवाहें थीं, अफवाहों का बाजार था। लोग यहां तक कहते कि जल्द ही शहर में भोपाल से मंत्रीजी और कुछ उच्च अधिकारियों का एक अध्ययन-दल जांच के लिए आ रहा है।

इस मुर्दा शहर में एकाएक जान आ गई। 'नया तूफान' ने नगर में एक सनसनीखेज हंगामा खड़ा कर दिया था। शहर के इज्जतदार आदमी दोनों मगरमच्छों के बीच एक समझौता या संतुलन कायम करना चाहते थे, इसलिए वे दारोगाजी और दुर्गालाल दोनों के पास जाते, समझाते लेकिन आग बुझने के बजाय बेकाबू होती जा रही थी। दुर्गालाल से वे कहते, 'दुर्गालालजी, आप तो विद्वान हैं, कलम के धनी हैं, फिर आप बेचारे दारोगा साहब के पीछे क्यों पड़ गए हैं ?'

[illegible]
गए, ऐसी दरन्दगी की कि बच्चू ज़िन्दगी-भर याद रखेगा !'

इसपर कोई सीधा जवाब कुलीनाथ नहीं दे पाते, क्योंकि [illegible] विनय ही मन थे। वे अत्यन्त भावुक होकर कहते, 'भाई, अ[illegible] दारोगा साहब को समझाइए। हम भी चाहते हैं कि उन[illegible] कोशिश न जाने पाए। वे कोई हिन्दुस्तान से थोड़े गए हैं[illegible] उनके भी बाल-बच्चे हैं और मैं किसी के पेट पर लात न[illegible] मारना चाहता, यदि उनको या उनके बाल-बच्चों को कुछ[illegible] गया तो हम पापों को ही तो भुगतना पड़ेगा कि नहीं ?'

उधर जब दारोगाजी को ये सब बातें बताई जातीं तो [illegible] कहते 'भला तो उसका पुराना यार है, वे अपने बाल-बच्चों के लिए क्यों [illegible] नहीं पड़ेगी। मरेमान मारे को दम [illegible] [illegible] हुआ समझता क्या है ?'

कुल मिलाकर यह मरघट की शान्ति-सी थी। भद्दूसिंह उनके यहां करीब दस बजे सुबह पहुंचे। पर आराम फर्माई तो बताया गया कि वे एक-दो रोज किसी से मिलना नहीं चाहते। भद्दू ने रहस्यपूर्ण ढंग से भीतर उन्हें इतना भर कह दें कि भद्दूसिंह आया है। थोड़ी ही देर में वह अन्दर या और वे मालिश का बदन पोंछते हुए आए। भद्दू उन्हें देखकर खड़ा हो गया तो उन्हें सलाम हाथ के इशारे से उन्हें बिठा दिया। जब वे खाट पर बैठ गए तो भद्दू ने कहा, 'गुरु ! ऐसा मारा साले को कि चारों खाने चित। हरामखोर जिंदगी भर याद रखेगा। गली-गली में थू-थू हो रही है। उसका एक अर्दली बता रहा था कि उसकी रातों की नींद हराम हो गई है। सुनार से मजबूत चाबुक बनाने के लिए कह रहा था। क्यों गुरु, इसीलिए तो आप कसरत-पानी नहीं कर रहे हैं ?'

और कोई वक्त होता तो वे खिलखिलाकर हंसते। लेकिन वे इस समय भी भावुक थे। बोले—'अफसोस तो यह है कि मेरे हाथों से एक चींटी का खून हो गया। गवर्नमेंट उस पर कड़ी-से-कड़ी कार्यवाही करने की सोच रही है। जांच-कमीशन बैठ रहा है। मुझे उसके बाल-बच्चों की फिक्र लगी है। उनकी हाय को मैं कैसे बर्दाश्त करूंगा⋯बताओ भद्दू !'

अब भद्दू का मन भी पिघल गया था। उसने गद्गद् होकर कहा, 'आप सचमुच महान् हैं, दुर्गालालजी। आपको अभी भी दुश्मन के दाल-बच्चों की चिंता व्याप रही है।'

'आप महान् हैं। मुझे याद है। आप नगरपालिका के चुनाव में खड़े हुए थे और आपका बहुत जोर था। घबराकर आपका विरोधी आपके पास आया और उसने अपने बच्चे की बीमारी की खबर आपको दी और आप बैठ गए।'

'हां, हम बैठ गए, क्योंकि हमें लगा कि वह बीमारी और चुनाव इन दोनों मोर्चों पर एक साथ नहीं भिड़ सकता था। उसके बच्चे की तकलीफ हमसे देखी नहीं गई। फिर हमसे लड़ना हैजे से लड़ने जैसे है।' दुर्गालालजी के चेहरे पर अथाह जीव-दया और अतीत में लौटने का भाव तैर रहा था। उन्होंने कुर्सी पर अपनी गर्दन टिकाकर अपनी आंखें मूद लीं।

कमरे में थोड़ी देर के लिए चुप्पी रही। फिर एकाएक उन्होंने आंखें खोलते हुए कहा, 'तुमने कुछ कहा?'

भद्दूसिंह ने दरअसल कुछ भी नहीं कहा था, लेकिन शायद बातचीत के सिलसिले को जोड़ना चाहते थे। भद्दू समझ गया। बोला 'लोग भी आप जैसे महापुरुषों के बारे में क्या-क्या फैलाते रहते हैं?'

'क्या?'

'इन बदमाशों ने उड़वा दिया था कि मुनसीपालटी के चुनाव में आप एक हजार रुपये लेकर बैठे थे। लोगों ने यह भी फैला दिया कि आप यदि आ जाते तो कम-से-कम वार्ड की एक-एक फैमिली पर दस-बीस रुपये महीने का खर्च और बैठ जाता।'

'क्या मतलब?'

'मतलब यह था कि हर घर से आप दस-बीस रुपया महीना सफाई के नाम पर खा जाते।'

'राम-राम! छि:-छि:! मारे जलन के लोग क्या वाही-तबाही बकते हैं। ठीक है, ठीक है, ये छिपे हुए दुश्मन हैं, पीछे से वार करते हैं। इनसे तो दारोगा साहब अच्छे दुश्मन हैं··· सामने हैं··· बहादुर हैं···मुकाबला करेंगे···। यदि बलात्कार का प्रकरण न होता और उसमें तुम बीच में न होते भद्दू, तो इनसे

रिश्तेदारों के शादी-ब्याह में भी ऐसे ही सज-धजकर जाते थे। वे हुस्ना टोली के आखिरी मेंबर थे। इस हुस्ना टोली का भी अपना एक दिलचस्प इतिहास है। राजा साहब के यहां एक-से-एक खूबसूरत लड़कों का हुजूम इकट्ठा था। खूबसूरती और चिकनाई देखकर ही इस टोली में लड़के भर्ती किए जाते थे। उन्हें अच्छी-से-अच्छी नौकरी दिलाई जाती थी···इस टोली के कुछ लोग बाद में बड़े-बड़े ओहदों पर पहुंच गए थे।

सांकल खटखटाने के थोड़ी देर बाद ही दरवाजा खुद दुर्गानालजी ने खोला। पूछा, 'कहिए, कैसे तकलीफ की ?'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं। सुना, दारोगा हाकिम से कुछ खटपटी हो गई तो मिज़ाज पूछने के लिए चला आया।'

'आपकी मेहरबानी का, शुक्रिया !'

'क्या दिन आ गए हैं। अपने ही टुकड़ों पर पलने वाले लोग अपने पर रोब डालते हैं।'

बीच में मद्दू बोल उठा, 'खां साहब, लगता है, आपने आज का 'नया तूफान' नहीं देखा। साले की हड्डी-पसली एक कर दी गई है।'

'हां-हां, हमने देखा है। अरे, आज अमली की इज्जत पर हमला हुआ, कल पत्रकार मियां की घरवाली पर और परसों फूल पर भी हो सकता है !' उन्होंने जवाब तो मद्दू को दिया, लेकिन वे देखते रहे दुर्गानालजी की ओर।

दुर्गानाल को बड़ी कोफ्त हुई। वे जानते थे कि बूढ़ा बड़ा चामड़ है। गोंद की तरह चिपक गया है। बोले, 'आप फिक्र न करें, बड़े मियां, उनसे निपट लेंगे। पहले आप फरमाइए, कैसे तकलीफ की ?'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं। बस, यूं ही चला आया। इक्कीस तारीख को बटेरों की लड़ाई है दशहरा मैदान पर। एक-से-एक बटेरें आ रही हैं, मेरा बटेर भी उसी दिन मैदाने जंग में उतर रहा है। उसे निखालिस स्वर्ण भस्म खिला रहा हूं। जरा न्यूज-व्यूज दे देना अखबार में।'

'बिलकुल, बिलकुल ! आप निशाखातिर रहें।'

'और हां, अब की उस मैदान पर आने के लिए दारोगा साहब को कोई न्यौता नहीं देंगे ?'

हमारा कोई लेना-देना नहीं था। हम दारोगा साहब से मिल जाते और इन सालों की हड्डी-पसली तुड़वा देते। ख़ैर, हम तो भैया सबके सिद्धान्तवादी आदमी हैं, अपना धरम नहीं छोड़ेंगे। अब हमें अपने दारोगा साहब के बीवी-बच्चों की पड़ी हुई है। कोई बता रहा था कि उनकी बीवीजी कह रही थीं कि यदि उन्हें कुछ हो गया तो वह अपने सारे बच्चे-बच्चों को मेरे घर बिठा देंगी। समझ में नहीं आता, क्या करूं क्या न करूं?'

लेकिन अब कुर्सी के पीछे गर्दन डालने का मौका नहीं आया। भद्दूसिंह को भी कुछ बोलने का मौका नहीं मिला। पत्रकार को अब नई फिक्र खा रही थी। उसके लिए भी हालात और उन हालातों से पैदा होने वाली नई सिलसिलेवार मुसीबतें काफी दहशतनाक हो चुकी थीं, लेकिन वह बहुत होशियार था। चीजों को सूंघ रहा था। इसी बीच दरवाजे की कुंडी बज उठी।

'भद्दू, देख तो कौन है? कमबख्त चैन नहीं लेने देते। जब से 'नया तूफान' में वह खौफनाक मामला छपा है, कोई-न-कोई आ धमकता है। रात को अपनी बीवी के साथ चैन की नींद भी नहीं सो सकता।'

भद्दू उठकर दरवाजे की ओर बढ़ा। बाहर एक मरियल घोड़ी पर नवाब कल्लन मियां थे। उन्होंने राह चलते एक लौंडे से सांकल खड़खड़ाई थी।

भद्दू को वे पहचानते थे। 'क्यों भद्दू, बड़े मियां बंगले पर ही तशरीफ रखते हैं ना?'

'जी हां…हैं तो।'

बस, फिर क्या था! वे फौरन घोड़ी पर से नीचे कूदकर 'आदाब अर्ज है, हुजूर, आदाब अर्ज है' कहते हुए घर के भीतर दाखिल हुए।

'आइए, आइए, खां साहब!' दुर्गालाल ने उठकर उनका अभिवादन किया।

वे आकर भद्दूसिंह की कुर्सी पर विराजमान हो गए। भद्दू पास की खाट पर बैठ गया। कल्लन मियां खूब गहरा मेकअप किए हुए थे। चेहरे पर पाउडर और रूज, आंखों में काजल और हाथों में दो चूड़ियां भी डाले हुए थे। वे अपने नाते-

रिश्तेदारों के शादी-ब्याह में भी ऐसे ही सज-धजकर जाते थे। वे हुस्ना टोली के आखिरी मेंबर थे। इस हुस्ना टोली का भी अपना एक दिलचस्प इतिहास है। राजा साहब के यहां एक-से-एक खूबसूरत लड़कों का हुजूम इकट्ठा था। खूबसूरती और चिकनाई देखकर ही इस टोली में लड़के भर्ती किए जाते थे। उन्हें अच्छी-से-अच्छी नौकरी दिलाई जाती थी'''इस टोली के कुछ लोग बाद में बड़े-बड़े ओहदों पर पहुंच गए थे।

सांकल खटखटाने के थोड़ी देर बाद ही दरवाजा खुद दुर्गालालजी ने खोला। पूछा, 'कहिए, कैसे तकलीफ की ?'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं। सुना, दारोगा हाकिम से कुछ खटपटी हो गई तो मिजाज पूछने के लिए चला आया।'

'आपकी मेहरबानी का, शुक्रिया !'

'क्या दिन आ गए हैं। अपने ही टुकड़ों पर पलने वाले लोग अपने पर रोब डालते हैं।'

बीच में भद्दू बोल उठा, 'खां साहब, लगता है, आपने आज का 'नया तूफान' नहीं देखा। साले की हड्डी-पसली एक कर दी गई है।'

'हां-हां, हमने देखा है। अरे, आज अमली की इज्जत पर हमला हुआ, कल पत्रकार मियां की घरवाली पर और परसों मुझ पर भी हो सकता है !' उन्होंने जवाब तो भद्दू को दिया, लेकिन वे देखते रहे दुर्गालालजी की ओर।

दुर्गालाल को बड़ी कोफ्त हुई। वे जानते थे कि बूढ़ा बड़ा चामड़ है। गोंद की तरह चिपक गया है। बोले, 'आप फिक्र न करें, बड़े मियां, उनसे निपट लेंगे। पहले आप फरमाइए, कैसे तकलीफ की ?'

'कुछ नहीं, कुछ नहीं। बस, यूं ही चला आया। इकतीस तारीख को बटेरों की लड़ाई है दशहरा मैदान पर। एक-से-एक बटेरें आ रही हैं, मेरा बटेर भी उसी दिन मैदाने जंग में उतर रहा है। उसे निखालिस स्वर्ण भस्म खिला रहा हूं। जरा न्यूज-व्यूज दे देना अखबार में।'

'बिलकुल, बिलकुल ! आप निशाखातिर रहें।'

'और हां, अब की उस मैदान पर आने के लिए दारोगा साहब को कोई न्यौता नहीं देंगे ?'

'नवाब साहब, आप जानें और आपका काम। मुझे उनसे कोई लेना-देना नहीं !'

'अरे ना, आप भी कैसी बातें करते हैं ! अरे भाई, आप जनता के नुमाइंदे हैं, दशहरा मैदान भी आपका और बटेरें भी आपकी। आपका ! यदि आप नहीं आए तो क्या काले-चोर आएंगे। यह सब मेल-तमाशे तो आप लोगों की फरमाइश पर होते हैं।'

'मेरी फरमाइश पर ?'

'मेरा मतलब है जनता की फरमाइश पर ? आप तो जनता के नुमाइंदे हैं।'

'है ना !' भद्दूसिंह ने हंसते हुए कहा, 'जब आप एक काम कीजिए···अपनी उस जलसे में दारोगा साहब को भी बुला लीजिए।'

'क्यों ? क्या वे भी कोई तीतर या बटेर हैं ?' नवाब साहब ने चूड़ियां खनकाते हुए कहा।

'नहीं, यह बात नहीं है। वे आजकल बहुत परेशान हैं। मुझे खुद उनकी नौकरी की चिंता खा रही है। मैं सोचता हूं यदि गवर्नमेंट ने उन्हें निकाल बाहर कर दिया तो उनके बाल-बच्चों का क्या होगा ? उन्हें बुलाएंगे तो उनका भी थोड़ा दिल बहल जाएगा।'

'जैसा आप फरमाएं !···तो मैं चलूं ! अखबार में तो आ जाएगा ना !' उठते हुए उन्होंने दुर्गालाल के घुटने छूते हुए कहा।

'बिलकुल आ जाएगा आप चलिए।'

नवाब साहब को छोड़ने के लिए वे बाहर तक आए। उन्होंने जब घोड़ी को दुलकी चाल से जाते देखा तो भीतर आए। उन्होंने देखा कि भद्दू भी चलने की तैयारी में है। बोले, 'भद्दूसिंह, देखा साले जनखे को ! अब मैं अबसे अखबार में इन हरामखोरों के तीतर-बटेरों की खबरें देता रहूं। समझता क्या है साला अपने को !'

'अरे, छोड़िए भी। पुराने वक्तों के लोग हैं, इन्हें छेड़ना बेकार है। मैं आपसे बस एक बात कहने के लिए आया था।'

'क्या ?'

'हम लोगों पर आपने बड़ा उपकार किया। यदि पुलिस ने आप पर हाथ भी डाला तो उनकी ईंट-से-ईंट बजा दी जाएगी।'

'घबराने की कोई बात नहीं है, भद्दूसिंह ! दुर्गालाल ने भी कोई कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं ! प्रांत में दारोगाजी के बाप की गवर्नमेंट नहीं चल रही है। यदि ऐसा मौका आ भी गया तो तुम फौरन राजधानी जाकर 'नया तूफान' के दयाबघुजी और चेतनजी से मिल लेना। सी० एम० और आई० जी० साहब से उनकी दांत-काटी रोटी है। सब ठीक हो जाएगा।'

'जैसा आप चाहेंगे वैसा ही होगा ! गांव में घबराहट है। लेकिन सब ठीक कर लूंगा, आप बिलकुल बेफिक्र रहें।'

घबराने की कोई जरूरत नहीं है। वह डाल डाल तो हम पात-पात। हमें अपने दिमाग को ठंडा रखना पड़ेगा, बस।'

'हूं।' दुर्गालालजी बोले थे। इसके बाद वे खामोश हो गए।

दोनों ओर चुप्पी छा गई थी। लग रहा था, जैसे अब बातचीत के लिए फिलहाल कुछ नहीं बचा है। इसलिए भद्दूसिंह उठा और उसने आदरपूर्वक लेकिन लुभाने ढंग से कहा, 'अब मैं चलूं ?'

'हां-हां, तुम चलो। जैसा भी होगा, देख लेंगे।'

'इस गांव को हमारे बाप-दादाओं ने अपने खून से सींचा है, भद्दू। हम इसे हरगिज इस डर से खाली नहीं करेंगे कि दारोगा साहब सदलबल आकर हमारे झोपड़ों में आग लगा देंगे।' रात को अलाव के नीचे बातें चल रही थीं।

और सचमुच इस गांव का इतिहास करीब डेढ़ सौ साल पुराना था। इसका कोई पुरखा गोंडवाना से यहां आया था और उसने किसी भीलनी से शादी करके अपना घर बसा लिया था। जंगल के काटे पत्ते ह तोड़कर उसने अपनी एक झोंपड़ी डाल ली थी। चारों तरफ वीरानी-ही-वीरानी थी। वह जहां चाहता, खेती करता, फसल काट लेता। उसने दूध और गोश्त के लिए कुछ भेड़-बकरियां और मुर्गियां पाल ली थीं। जंगल में लक-

किसों की इजाजत भी नहीं थी, जिनके आगे-पीछे की कोई नहीं नहीं चलती थी। गाँव के पास में सबसे बड़ी हाट में जब यह बात की उनसे मुलाकात हुए और मोरों से हुई। उनके यह पूछने पर कि वह कहाँ रहता है वह जिनमें मोरों की बस्ती है जो उनके बताता कि उस ओर में सिवाय उनके और कोई नहीं रहता। मोरों की इजाजत नहीं है, पानी है और मारकर खाने के लिए ढेर सारे जानवर हैं। उनने उन्हें भी वहीं पास में बस जाने का न्योता दिया। उनमें से तीन-चार परिवार इस बात के लिए राजी हुए। और तब उस गाँव में एक के बजाय पाँच झोंपड़ियाँ दिखाई देने लगीं। पाँचों के पास मोरनें थीं। उनके बच्चे बड़े हुए, आपस में शादी-ब्याह हुए, मेल-जोल बढ़ी और झोंपड़ियाँ बढ़ीं। इसी पुरखे के नाम पर इस गाँव का नाम पड़ा था —आमार। उस समय कोई जमींदार नहीं था, कोई पटवारी नहीं था, कोई पुलिस नहीं थी। सारी जमीन उनकी थी। जब चाहते, झोंपड़े और खेती एक जगह से उजाड़कर दूसरी जगह बसा लेते। मनमौजी लोग थे, खूब अच्छा गाते थे, जंगल में नाचते गाते, देवता की पूजा करते, महुए से शराब उतारते और मौज करते। बहादुर थे, सांप को अपने हाथों से पकड़कर उसे घुमाकर फेंक देते, शेर को लाठियों से मार डालते। आजादी की लड़ाई में यहाँ के लोग राजा बख्तावरसिंह की तरफ से लड़े थे और अंग्रेजों के छक्के छूट गए थे।

'हाँ-हाँ, हम उन्हीं की सन्तान हैं। देवता की कसम, यदि यह हमारे झोंपड़े जलाएगा तो हम इसे जिंदा जला देंगे।' लम्बी नाक, मोटे माथे और सूखे हुए चेहरे का तीस वर्षीय हलकैया बोला। उसकी बंडी फटी हुई थी। वह एक लंगोटी पहने हुए था। एकाएक वह उठा और थोड़ी दूर पर जाकर उसने आग के ऊपर से पलटी खाई और फिर उठकर खड़ा होकर बोला, 'इस तरह मैं दीवार फांदकर उसके घर घुस जाऊंगा और उसके बाल-बच्चों तक को साफ कर दूंगा।'

'अरे हमें उसके बाल-बच्चों से कोई लेना-देना नहीं है। साले ... लाएंगे। उसके सारे कपड़े उतारकर ... पेड़ पर लटका देंगे और हर आदमी उस पर ... हालत हम किसी मरे हुए जानवर की तरह कर

देंगे, बस।' किसी दूसरे की आवाज थी।

'एक बात याद है, ननकू।' हलकैयां ने हंसते हुए कहा।

'क्या ?'

'उस रेंजर साहब को हमने यहीं आम के पेड़ से उलटा चमगादड़ की तरह लटका दिया था।'

'हां, यार!' और वह एक खौफनाक हंसी हंसा था।

'हां, लेकिन हम उसके बाल-बच्चों को नहीं छुएंगे। क्यों भद्दूसिंह !'

'हां। दुर्गालालजी भी उसके बाल-बच्चों के बारे में फिकिर में हैं। कह रहे थे कि 'नया तूफान' में दरोगाजी बहुत छीछा-लेदर हुई है और अब गोरमेंट उसे नहीं छोड़ेगी। मनीस्टर साहब का राज है। वह आव देखते हैं न ताव! बस निकाल बाहर करते हैं और पचों में नाम निकाल देते हैं।'

'तो हमें क्या करना चाहिए ?'

'दुर्गालालजी महापुरुष हैं, त्रिकालदर्शी हैं। वे इन तमाम बातों के बारे में सोचते हैं। हमें उसके बाल-बच्चों का कुछ भी नहीं करना है। यदि दरोगाजी नौकरी से निकाले जाते हैं तो हम चंदा करके दुर्गालालजी को दे देंगे। फिलहाल तो हमें उन सब चीजों की तैयारी कर लेनी चाहिए जिससे अपना बचाव हो सके, क्योंकि कुचला हुआ सांप बड़ा भयानक होता है।'

'हमारे लिए क्या हुकुम है, दादा ?' हलकैयां ने पूछा।

'हमें रात को पहरा लगाना होगा, क्योंकि हमारे झोंपड़ों में कोई दिन को अगार तो नहीं लगा सकता। दूसरे यह देखना होगा कि हमारे खेतों में कोई ढोर-डंगर लाकर न डाल दे, वरना हम बरबाद हो जाएंगे। तीसरे, हममें से कोई भी कहीं भी अपना अंगूठा नहीं लगाएगा। गांव के बड़े कुएं पर चौकसी रखनी होगी, क्योंकि हम वहीं से पानी लेते हैं। हाट-बाजार जाते समय औरतें और मर्द झुंड बनाकर ही चलें तो अच्छा।'

'ठीक है, दादा।' हलकैयां बोला।

कुछ देर तक चुप्पी रही। फिर एकाएक भद्दूसिंह ने ही चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'चलो भैया, काफी रात हो गई है। आराम से सोए। लेकिन आज से गांव में कोई-न-कोई पहरे पर रहे।'

'ठीक है, बाबा !' हरकेशी बोला।
और वह और सोरनें गली बड़ गए।

धरमसिंह के दोनों के ही में बिजली जल रही थी। उसने अपनी सोसिंग मशीन पर कपड़ी बिछाई और सो गया। कुछ देर तक वह नार के ऊपर टंगे हुए धुंधले बल्ब की ओर और उस पर पड़े कुछ कीड़ों की तरफ देखता रहा। उसे अचानक याद आया, श्यामनारायण मास्टर रैली में कितना अच्छा बोलते थे—'अंग्रेज जाएगा और जरूर जाएगा और अपने देश में फिर से रामराज आ जाएगा। अपनी तकदीर हम खुद बनाएंगे। गरीब गरीब नहीं रहेगा। धनी में ताकत नहीं रहेगी...' और मास्टर एक रोज मर गए। वह भागते रहे और पुलिस उनका पीछा करती रही थी। उन्होंने बाहर लेवा। के बाहर पर इनाम थी। नाम बदलकर किसी दफ्तर कारखाने में मजदूरी की। गोरे-चिट्टे, नाटे कद के नजरों अंग्रेजों के मालिक श्यामनारायण मर गए, लेकिन सारी गरीबी दूर नहीं हुई।

श्यामनारायण के साथ हीरालाल पिसनवा भी आते थे और हरमुनिया से 'झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' गाते थे। हाफपैंट पहनकर एक हरमुनिया गले में लटका लेते थे और बड़े सुर और ताल से गाते थे। कैसा जोश चढ़ जाता था। एकदम लगता था कि किसी अंग्रेज की छाती पर चढ़कर उसकी टें बुलवा दें और सारा वह सीधा किसी गोरी मेमिया को लेकर भागता नजर आए। लेकिन साला अंग्रेज बहादुर भी कितना चतरा था, मुट्ठी-भर लोग इतने बड़े हिन्दुस्तान पर डेढ़ सौ साल राज करते रहे। और आज ! ऐसा लगता है कि इन ब्याजखोरों की छाती पर चढ़ जाऊं और फिर अपने ही बाल नोचने लगूं। इन बेईमानों से अंग्रेज बच्चा अच्छा था।

और अब तो श्यामनारायण मास्टर भी नहीं हैं, अंग्रेज भी नहीं। बस, ये सेठ हैं और हम। वह सोच रहा था—इन निर्जन
डियों के बारे में, पास में कल-कल बहती हुई बाग
में ! फिर एकाएक उसे अपनी मां का खयाल
ड़ियों का दामन कितना ठंडा होती है जैसे मां की
मां ? शायद उसकी लाश को भी गीध-

कौवे खा गए होंगे। और मैं उसकी हाड़-मांस-मज्जा से बना भद्दू कुछ भी तो नहीं कर सका उसके लिए। शायद कुछ कर भी नहीं सकता था। अस्पताल के मेहतर उसे ले गए होंगे, उसकी कुछ हड्डियां स्टूडेंटों की पढ़ाई के लिए चली गई होंगी। ···वह सोच रहा था —अपने झोपड़े से आकाश दिखता है··· दूर-दूर तक फैली हुई निर्जन पहाड़ियां, कल-कल बहती हुई बाघ नदी और उसका साफ पानी·· मछलियां साफ तैरती हुई दिखाई देती हैं · पहाड़ियों के दामन में उगे हुए रंग-बिरंगे जंगली फूल। सुनते हैं बड़े-बड़े अफसरों की एक टीम यहां आने वाली है। वह अपनी रिपोर्ट गोरमेंट को देगी। सूखा क्यों आता है, बारों महीना काम कैसे मिले, सूअर और भेड़ पालने की योजना, सिंचाई योजना, और जाने क्या-क्या ? हमारे फटे हुए कपड़ों को देखकर सूखा टीम का हिया पसीजेगा और बहुत सारा पैसा भेजेगा। वह पैसा गोरमेंट और उसके मनीजर के पास आ जाएगा। एकदम करिश्मा हो जाएगा। इन स्साले काले आदमी की हालत बदलेगी। हमारे पहले ठेकेदारों, साहूकारों और छोटे-मोटे नेताओं की हालत बदलेगी·· स्साला सब इन्नी है···भूसी-चोकर हमारे हाथ लगेगा···लेकिन यह सब कब तक चलेगा—कब तक ! पिछले दिनों भी सूखा टीम आई थी···कुसी-टांडा, बाग, निसरपुर सभी दूर घूम गया···हम लोगों के तन पर भी कपड़े नहीं थे ··मुझसे किसी ने कहा था भद्दूसिंहजी अपनी क्रांतिकारी भावना से दल को अवगत कराएंगे ? लोग अच्छे थे, पूरी बात सुन लिए, मामूली खाना खाया, इसी जंगल रेस्ट-हाउस में रखे सूखे मेवे को हाथ भी नहीं लगाया ···उनके साथ कुछ बड़े-बड़े छापाखाने के लोग भी आए थे··· गाय-भैंसों की हड्डियां निकल आई थीं, बच्चों के पेट निकल आए थे। वह दल आया और गया। फिर और दो दल आए··· उसमें एक एम०एल०ए० साहेबान का दल था। उन्होंने राहत-कार्य भी देखे थे ·मैं कौन सी क्रांतिकारी भावनाओं से उन्हें अवगत कराता ? क्या कहता ?·· गांव-गांव में बनिया जोंक की तरह फैला है, राहत-कार्य में मजूरी का पैसा लेते वक्त भी वह ब्याज वसूलने के लिए हाजिर हो जाता है। गुल्श···महुआ ···औरत···बच्चे—सब तो इसके हाथों पर गिरवी हैं। गांधी

बाबा सोचते थे —जब तक एक भी हिन्दुस्तानी आदमी की आंखों में आंसू का एक कतरा भी रहेगा तब तक यह आजादी सच्ची नहीं है। क्या बताऊं बाबा, आप तो गोलोकवासी हो गए और हम नर्क में सड़ रहे हैं और सड़ते रहेंगे···नर्क ! और फिर मद्दू को एकाएक लगा कि जैसे बहुत-से सिपाही काले नकाबें ओढ़कर हाथों में मशालें लेकर गांव की ओर आ रहे हों और उन्होंने झोंपड़ों में आग लगा दी हो ! सब लोग अपने सामने ही धधकती हुई चिता देख रहे हैं। इस भयंकर आग को कौन बुझा सकता है ? असली इस वक्त कहां होगी ? उसने सोचा — आखिर असली उसकी है कौन, जो उसके बारे में वह इतना सोचा करता है। एक इन्सान की दूसरे इन्सान के साथ हमदर्दी है, बस। क्या सचमुच यह हमदर्दी ही है, क्या उसके दिल-दिमाग में असली को लेकर कभी तूफान नहीं मचा? असली के कारण नत्थू और सनद्द ओझा पर काफी कुछ बीत चुका था। बलात्कार करने की कोशिश करने वाले हेड साहब या उसके कमाहिममंद थानेदार को वह मजा चखाना चाह रहा था। लेकिन ऐसा वह क्यों सोचता है ? कहीं असली के लिए उसके मन में चाहत तो नहीं पैदा हो गई थी ?

गांव के बाहर बरगद की छाया में उन लोगों ने अपना डेरा जमा रखा था। उन लोगों के साथ एक सफेद चमड़ी वाली मेम भी थी। एक गोरी चमड़ी वाला भी। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वह उसकी गोरी चमडी पर फब भी रही थी। गले में वह कैमरा डाले हुए था। कपड़ों की ओर से वे लोग लापरवाह थे और हिन्दुस्तान की आबोहवा ने उनकी हालत को जरा और खराब कर रखा था। दरअसल वे उन हिप्पियों में से एक था, जो मुल्क के कोने-कोने में फैले हुए थे। इनमें से कुछ की हालत बहुत खराब थी। कुछ हिप्पिनें रास्ते में ही गर्भवती हो गईं और वे अपने बच्चे की गठरी बनाए महानगरों की सड़कों पर घूमती नजर आती थीं। उन बच्चों के बाप का कहीं अता-पता नहीं था और कोई दूसरा उनका हाथ थामने के लिए

ठहरा ... होता ...।

... वे लोग एल०एस०डी० ले रहे थे। ग्लये दम

मिटे गम,' 'अलख निरंजन', 'जय भोले शम्भू' के नारे हवा में तैर रहे थे। ये लोग शिप-ट्रिप पर थे···झूम रहे थे।

पैट्रिक ने 'रोज, रोज' की आवाज लगाई और उसके चबूतरे पर आते ही उसे अपने पास खींचकर बिठाते हुए बोला, 'कम अलांग डार्लिंग, हैव ए शिप-ट्रिप !'

'इन लोगों के साथ ?' रोज बोली।

'फिर किनके साथ ! भूल जाओ हालैंड को। अभी हम यहां का दाना-पानी और हवा खा रहा है। इस मिट्टी पर बैठा है। ये लोग हमारा भाई-बंद हैं, मरेगा तो ये ही लोग मिट्टी देगा।' हिप्पी की आंखों से एक अच्छा आदमी झांक रहा था।

सभी लोगों ने एल०एस०डी० का इस्तेमाल किया। इसमें थोड़ी ही देर में काली और मोटी चमड़ी का भेद मिट गया। रोज भी झूमने लगी थी। उसने पैट्रिक के गले में बांहें डालते हुए कहा, 'पैट्रिक डियर, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। दुनिया में काला-गोरा कुछ नहीं होता, बस एक आदमी आदमी होता है—मैन···किंग ऑफ आल किंग्ज।'

और रोज नाचने लगी और सबके गले में बांहें डालकर कहने लगी, 'बिरादर, बिरादर ! काला आदमी दुनिया में सबसे अच्छा और बेजोड़ होता है।' नाचते-नाचते जब वह बिलकुल थककर चूर हो गई तो पैट्रिक ने उसे आराम से लिटा दिया और फिर वह चबूतरे पर आकर बैठ गया।

पैट्रिक, रोज, बाबा, रामसिंह और सभी लोगों को गहरा नशा आ गया था। उनके कदम लड़खड़ा रहे थे। रामसिंह ने देखा, पास ही रोज चित्त पड़ी है और उसकी उठती-गिरती सांसों के कारण उसका वक्षस्थल नीचे-ऊपर हो रहा है। वह स्कर्ट पहने हुए थी, जिससे उसकी पिंडलियां तक साफ दिखाई दे रही थीं। वह भयंकर नशे में था और उस नशे में सुलग रहा था। उसे खयाल आया कि उसका पेड़ू बुरी तरह से जल रहा था। उसके मन में बार-बार बलात्कार करने की बात उठ रही थी, लेकिन उसने अपने मन पर वैसे ही काबू कर लिया था जैसे एक भयंकर घोड़े को पहाड़ी से गिरने से पहले रोक लिया जाए। फिर पैट्रिक जाग रहा था, उसके साथी भी और उसका जमीर भी। वह चुपचाप जाकर अपने साथियों के साथ पेट के

बल लेट गया था। थोड़ी देर में ही उसने करवट बदली और चित्त हो गया। साफ-सुथरे आकाश पर दूधिया चांदनी नहा रही थी। बड़ा जादूभरा समां था। उसने देखा—पैंट्रिक और उसके साथी खर्राटे भर रहे हैं। उसने रोज की तरफ देखा। बड़ा अजीब-सा सौन्दर्य था उसका। नीम के पत्ते हवा के झोंके से हिलते नजर आ रहे थे। पल भर के लिए उसके मन में आया कि यदि वह पैंट्रिक और उसके साथियों को खत्म कर दे और रोज को लेकर कहीं चला जाए तो उसका कौन क्या बिगाड़ लेगा ? लेकिन उसने बिरादर कहा था। कुछ भी हो, बलात्कार है बुरी चीज ! पूरे दिल-दिमाग को जंगल की आग की तरह झुलसा देती है। चाची के साथ उस दिन दोपहर को जो हुआ, वह कितना भयानक था। और उसी दिन वह भाग गया था और भागता ही चला गया था। यह सोचते-सोचते एकाएक वह दांत भींचने लगा था—कहां है वह दरांती…और वह एकाएक उठकर खड़ा हो गया। पेड़ के पास गया, उस जगह की उसने एक बार और शिनाख्त कर ली। वह दिन आज भी नहीं भूला…। वह तब से आज तक जिंदा जलता रहा है। उसे होश नहीं रह गया था और तब से आज तक वह भागता चला जा रहा है। काकी चिल्ला रही थी—'साले, हरामजादे, अपनी मां-बहनिया के साथ जिना कर। मेरी इज्जत बिगाड़ेगा तो तेरी आंखें नुचवा दूंगी। तेरी हड्डी-पसली चकना-चूर कर दूंगी !' लगता है कि जमादार और उसके आदमी पिटे हुए कुत्ते की तरह वहां से चले गए हैं। उसके बाद क्या हुआ, उसे नहीं मालूम, क्योंकि वह जंगल-जंगल भागता हुआ जोवट पहुंचा था और दो-तीन साल से भटक रहा था। काका-काकी का पता वह लगाता रहा। यह भी उसे मालूम था कि वे दोनों दरोगाजी और जमादारजी से बदला चुकाने के लिए काफी उठा-पटक कर रहे हैं। भद्दूसिंह और गांव वाले काकी को बड़ी मदद पहुंचा रहे हैं। किसी अखबार वाले ने भी वह मामला उठाया था लेकिन वह मर तो हुआ। अब उसे भी कुछ करना है, इन दो-तीन सालों में उसने भी काफी कुछ सीखा है। जंगल-जंगल भागता हुआ जब वह जोवट पहुंचा तो उसे काफी भूख लग आई थी। लोगों ने उसे खाना दिया था। एक पादरी के

यहां भी उसे कुछ रोज के लिए आसरा मिल गया था। लेकिन तहसील हेड क्वार्टर होने की वजह से उसे वहां से भी भागना पड़ा। वह एक जंगली गांव मेडा पहुंच गया। वहां ईसाइयों का एक स्कूल था, थोड़ी बहुत खेती थी। वह वहां बर्तन मांजने का काम करने लगा और विक्टर नाम से रहने लगा। आदिवासी बच्चों को उस साफ-सुथरे स्कूल में पढ़ते देखकर उसे बहुत अच्छा लगता। पादरी और सिस्टर्स बड़े प्यार से सबको पढ़ाते थे, उसे भी पढ़ाने लगे। जंगल में सियार की 'हुहाऊ हुहाऊ' और लोमड़ी की आवाजें थी।

जोबट में वह एक मीटिंग में भी गया था, जहां नारायणी बाब। ने बताया था कि जिंदगी जीने के लिए होती है और यदि जिंदा रहना है तो उसकी पहली शर्त यही है कि दुनिया की किसी भी बड़ी-से-बड़ी ताकत से हौला न खाया जाए। उस दिन उसके दिमाग में भारी हलचल मची हुई थी। फिर उसकी दोस्ती कालू से हुई थी। कालू पहाड़ी की गोद में दो नदियों के बीच बसे हुए कल्याणपुर के एक झोंपड़े में रहता था, जहां भीलों के नौ-दस झोंपड़े थे। उसकी सात औरतें थीं—एक-से-एक सुन्दर और बहादुर। कालू के पास अब भी एक तलवार रहा करती थी—वह उन्हें कालू काका कहा करता था। उसे काका और इन काकियों का बहुत प्यार मिला था। जब भी कोई पुलिस वाला आकर उन्हें धमकाता तो वे कहतीं—'कुत्ते, तेरी बोटियां चीरकर चील-कौओं को खिला दूंगी, समझा!' लेकिन कालू ने अब अहिंसा का व्रत ले लिया था। वह कहता, 'राम-सिंह, मैंने इन्हीं हाथों से बहुत लोगों का खून किया है। बात-बात में मैं तीर चलाकर लोगों का खात्मा कर देता था। लेकिन अब किसी को मारने का मन नहीं होता।' और वह लाल-लाल आंखों से जवाब देता, 'लेकिन काका, मेरा तमाम बदन टूट रहा है। जब तक मैं अपनी काकी की इज्जत का बदला नहीं चुका लूंगा, तब तक मैं चैन की नींद नहीं सो सकता।' वे मेरी पीठ पर एक धमाका मारकर कहते—'रामू, तुझे जो करना है कर डाल, बक-बक मत कर। दीवार के भी कान होते हैं। लेकिन मेरी एक बात याद रखना—जो पकड़ा जाए वह चोर! यदि तुझे उसका खून भी करना है तो कर डाल और उसकी लाश

बच गैर गया था। थोड़ी देर में ही उसने करवट बदली और निढाल हो गया। साफ-सुथरे आकाश पर दूधिया चांदनी बरस रही थी। बड़ा लुभावना लगा था। उसने देखा—पैड्रिक और उसके साथी मज़ाक कर रहे हैं। उसने दांत भी भरपूर देखा। बड़ा अजीब सा सौन्दर्य था उसका। नीम के पत्ते हवा के झोंके से हिलते नज़र आ रहे थे। पल भर के लिए उसके मन में आया कि यदि वह पैड्रिक और उसके साथियों को ख़त्म कर दे और चोर को लेकर कहीं चला जाए तो उसका कौन क्या बिगाड़ लेगा? लेकिन उसने बिरादर कहा था। कुछ भी हो, बदला बुरी चीज़ है। पूरे दिल-दिमाग को अंगार की आग की तरह झुलसा देती है। काकी के साथ उन दिन दोपहर को जो हुआ, वह कितना भयानक था। और उसी दिन वह भाग गया था और भागता ही चला गया था। यह सोचते-सोचते एकाएक वह दांत पीसने लगा था—कहां है वह दरोगा···और वह एकाएक उठकर खड़ा हो गया। पेड़ के पास गया, उस जगह को उसने एक बार और शिनाख्त कर ली। वह दिन आज भी नहीं भूला···। वह तब से आज तक ज़िदा जलता रहा है। उसे होश नहीं रह गया था और तब से आज तक वह भागता चला जा रहा है। काकी चिल्ला रही थी—'साले, हरामजादे, अपनी मां-बहनियों के साथ ज़िना कर। मेरी इज्जत बिगाड़ेगा तो तेरी आंखें नुचवा दूंगी। तेरी हड्डी-पसली चकनाचूर कर दूंगी!' लगता है कि जमादार और उसके आदमी पिटे हुए कुत्ते की तरह वहां से चले गए हैं। उसके बाद क्या हुआ, उसे नहीं मालूम, क्योंकि वह जंगल-जंगल भागता हुआ जोबट पहुंचा था और दो-तीन साल से भटक रहा था। काका-काकी का पता वह लगाता रहा। यह भी उसे मालूम था कि वे दोनों दरोगाजी और जमादारजी से बदला चुकाने के लिए काफी उठा-पटक कर रहे हैं। भद्दूसिंह और गांव वाले काकी की बड़ी मदद पहुंचा रहे हैं। किसी अखबार वाले ने भी वह मामला उठाया था लेकिन वह सब तो हुआ। अब उसे भी कुछ करना है, इन दो-तीन सालों में उसने भी काफी कुछ सीखा है। जंगल-जंगल भागता हुआ जब वह जोबट पहुंचा तो उसे काफी भूख लग आई थी। लोगों ने उसे खाना दिया था। एक पादरी के

यहां भी उसे कुछ रोज के लिए आसरा मिल गया था। लेकिन तहसील हेड क्वार्टर होने की वजह से उसे वहां से भी भागना पड़ा। वह एक जंगली गांव मेडा पहुंच गया। वहां ईसाइयों का एक स्कूल था, थोड़ी बहुत खेती थी। वह वहां बर्तन मांजने का काम करने लगा और विक्टर नाम से रहने लगा। आदिवासी बच्चों को उस साफ-सुथरे स्कूल में रहते देखकर उसे बहुत अच्छा लगता। पादरी और सिस्टर्स बड़े प्यार से सबको पढ़ाते थे, उसे भी पढ़ाने लगे। जंगल में सियार की 'हुहाऊ हुहाऊ' और लोमड़ी की आवाजें थीं।

जोबट में वह एक मीटिंग में भी गया था, जहां नारायणी बाबा ने बताया था कि जिंदगी जीने के लिए होती है और यदि जिंदा रहना है तो उसकी पहली शर्त यही है कि दुनिया की किसी भी बड़ी-से-बड़ी ताकत से हौसला न खाया जाए। उस दिन उसके दिमाग में भारी हलचल मची हुई थी। फिर उसकी दोस्ती कालू से हुई थी। कालू पहाड़ी की गोद में दो नदियों के बीच बसे हुए कल्याणपुर के एक झोंपड़े में रहता था, जहां भीलों के नौ-दस झोंपड़े थे। उसकी सात औरतें थीं—एक-से-एक सुन्दर और बहादुर। कालू के पास अब भी एक तलवार रहा करती थी—वह उन्हें कालू काका कहा करता था। उसे काका और इन काकियों का बहुत प्यार मिला था। जब भी कोई पुलिस वाला आकर उन्हें धमकाता तो वे कहतीं—'कुत्ते, तेरी बोटियां चीरकर चील-कौओं को खिला दूंगी, समझा।' लेकिन कालू ने अब अहिंसा का व्रत ले लिया था। वह कहता, 'रामसिंह, मैंने इन्हीं हाथों से बहुत लोगों का खून किया है। बात-बात में मैं तीर चलाकर लोगों का खात्मा कर देता था। लेकिन अब किसी को मारने का मन नहीं होता।' और वह लाल-लाल आंखों से जवाब देता, 'लेकिन काका, मेरा तमाम बदन टूट रहा है। जब तक मैं अपनी काकी की इज्जत का बदला नहीं चुका लूंगा, तब तक मैं चैन की नींद नहीं सो सकता।' वे मेरी पीठ पर एक धमाका मारकर कहते—'रामू, तुझे जो करना है कर डाल, बक-बक मत कर। दीवार के भी कान होते हैं। लेकिन मेरी एक बात याद रखना—जो पकड़ा जाए वह चोर! यदि तुझे उसका खून भी करना है तो कर डाल और उसकी लाश

देखे नहीं चलने मैं ढूँढ़ के रहूँगा उसका पता थानेदार
को मिल सके।' और उसने अपने सगन बापू के पैर छू लिए। व
इसके बाद वह डकैतियों की एक टोली में मिल गया। उ
मशहूर था कि आदिवासी को मारने-पीटने की कोई कमी न
हो सकता था। पैसों पर मजुआ और मुन्नी नाची है। पु
पुलिस को ऐसे बताया जा सकता है। शहर के बाबू यही कह
है कि आदिवासी चोर होता है। लेकिन आदिवासी भूखों
मरने के अलावा कुछ भी नहीं चुराता। बड़े चोर कोई दूस
ही होते हैं। डकैतियों की इस कम्पनी में चोरी चकारी बाल
पैदिक और उसकी बीवी दोनों भी मिल गए। पैदिक पहले सा
वाली एम॰एस॰डी॰ भी गाता था। और इन्हीं सब लोगों मे
बाद वह बाग पड़ा आ गया था। अपनी जन्मभूमि में लौट
हुआ है लोगों के साथ एम॰एस॰डी॰ का नशा खूब गहरा होत
चला आ रहा था।

एकाएक उसे लगा जैसे उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए
हों। दोनों टुकड़ों ने दो दिशाओं में चलना शुरू किया। पीपल के
पेड़ के पास रखी दराँती को उसने खोदकर निकाला। बाल का
कन्धा-कन्धा ढककर पहनावा हुआ था। वह चल पड़ा। उन
दिनों चाँद आसमान पर था। थोड़ा चलने के बाद ही उसे
रेस्ट हाउस दिखाई दिया। रेस्ट-हाउस के पड़ोस में ही थाना
बना हुआ था। थाने के भीतर वाले अहाते में कुछ मामूली-से
क्वार्टर बने हुए थे। किसी एक क्वार्टर में वह मक्कार हेड साहब
रहा करता था और उसके थाने के भीतर घुसने के पहले अच्छी
तरह से देख लिया। उसने देखा—थाने का संतरी बन्दूक लेकर
गश्त लगा रहा है। बाकी लोग ऊँघ रहे थे। सामने से घुसना
बहुत खतरनाक था। वह थाने के पिछवाड़े गया और पीछे वाले
आँगन से कूद पड़ा। भीतर घुसते ही उसने देखा, आँगन में
बहुत-सी खाटें लगी हुई हैं। उन खाटों पर हेड साहब के
बच्चे भी सोए हुए थे। उसने बच्चों की ओर देखा। उसे लगा
कि यदि वह थोड़ी देर भी वहाँ खड़ा रहेगा तो शायद उसे
। आखिरी खाट पर जमादार सोया हुआ
अच्छी तरह से महसूस किया और दबे
। उसने दराँती ऊपर उठाई और

उसकी गरदन को हलाल कर दिया। जब हेड साहब की जोर-दार चीख निकली तो वह जिस रास्ते से आया था वहीं से भाग गया।

'मार डाला, इस कुत्ते को भी मार डाला—और अब दूसरा कुत्ता भी उस दरांती से नहीं बच सकेगा।'

'पानी……पानी…' एकाएक उसने महसूस किया जैसे उसके साथी उसे बहुत जोरों से हिला-हिलाकर कह रहे हैं, 'रामसिंह, क्या हुआ?' वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसके साथियों ने उसकी आंखों पर पानी के छींटे मारे, 'क्या हुआ, रामसिंह?' उसके साथियों ने फिर पूछा।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं! मैं ट्रिप-ट्रिप पर था।' इसके बाद वे सब सो गए थे। लेकिन रामसिंह को नींद नहीं आ रही थी। वह सोचने लगा—एल० एस० डी० कितनी अजीब है। उसे बहुत बेचैनी होने लगी। उस हालत में वह पीपल के पेड़ के पास पहुंचा। गड्ढे को थोड़ा खोदने पर ही उसे दरांती दिखाई दी। आज यदि वह हेड साहब का कत्ल कर देता तो उसे बड़ी खुशी होती, लेकिन इस बस्ती में एक तूफान-सा आ जाता। पुलिस की मोटरें उसका पीछा कर रही होतीं और वह फिर जंगल-ही-जंगल भागता नजर आता। इसके बाद उसने दो-तीन लोटे पानी पिया और रोज की तरफ देखा। पैट्रिक और अपने साथियों की तरफ निगाहें दौड़ाईं। रोज के चेहरे पर एक अजीब किस्म की शांति थी। वह उसे देखता ही रहा और फिर चुपचाप आकर अपनी जगह पर लेट गया। लेकिन नींद उससे कोसों दूर थी। वह सोचता रहा और सोचता रहा। वह अब पुराना रामू नहीं था। ईसाई स्कूल में काफी होशियार हो चुका था। बदला भी उसे ठंडे दिमाग से लेना होगा। उसके लिए योजना बनानी होगी।

दूसरे दिन सुबह उसने अपने साथियों से विदा ली और आगर की ओर चल पड़ा। इस वक्त उसके दिमाग में केवल एक ही बात है और वह है काकी से मिलना। काकी के पैर पकड़-कर पूछना, 'काकी, तुझे ज्वार माता की सौगंध, बता दे—क्या मेरे जाने के बाद उन खूंखार जानवरों ने तुम्हारी इज्जत ले ली?' और सचमुच थोड़ी देर बाद ही वह उस मुकाम तक पहुंच गया था जहां वह भयानक घटना हुई थी। उसने ओसारे

ऐसे नदी-नाले में फेंक दे, जहाँ उसका पता खाली मगरमच्छों को मिल सके।' और उसने जाते समय कालू के पैर छू लिए थे। उसके बाद वह गंजेड़ियों की एक टोली में मिल गया। उसे मालूम था कि आदिवासी को खाने-पीने की कोई कमी नहीं हो सकता था। पेड़ों पर महुआ और गुल्ली लगती है। मुर्गी चुराकर भी पेट भरा जा सकता है। शहर के बाबू यही कहते हैं कि आदिवासी चोर होता है। लेकिन आदिवासी मुर्गी और बकरी के अलावा कुछ भी नहीं चुराता। बड़े चोर कोई दूसरे ही होते हैं। गंजेड़ियों की इस कम्पनी में गोरी चमड़ी वाला पैट्रिक और उसकी बीवी रोज भी मिल गए। पैट्रिक अपने साथ काफी एल०एम०डी० भी लाया था। और इन्हीं सब लोगों के साथ वह आज यहाँ आ गया था। अपनी जन्मभूमि में ताजी हवा के झोंकों के साथ एल०एस०डी० का नशा खूब गहरा होता चला जा रहा था।

एकाएक उसे लगा जैसे उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए हों। दोनों टुकड़ों ने दो हिस्सों में चलना शुरू किया। पीपल के पेड़ के पास रखी दराँती को उसने खोदकर निकाला। वन का चप्पा-चप्पा उसका पहचाना हुआ था। वह चल पड़ा। उस वक्त चाँद आसमान पर था। थोड़ा चलने के बाद ही उसे रेस्ट हाउस दिखाई दिया। रेस्ट-हाउस के पड़ोस में ही थाना बना हुआ था। थाने के भीतर वाले अहाते में कुछ मामूली से क्वार्टर बने हुए थे। किसी एक क्वार्टर में वह मक्कार हेड साहब रहा करता था और उसने थाने के भीतर घुसने के पहले अच्छी तरह से देख लिया। उसने देखा—थाने का संतरी बन्दूक लेकर चक्कर लगा रहा है। बाकी लोग ऊंघ रहे थे। सामने से घुसना बहुत खतरनाक था। वह थाने के पिछवाड़े गया और पीछे वाले आँगन में कूद पड़ा। भीतर घुसते ही उसने देखा, आँगन में बहुत सी खाटें लगी हैं। उन खाटों पर हेड साहब के बच्चे भी सोए ... बच्चों की ओर देखा। उसे लगा कि यदि ... तो शायद उसे ... सोया हुआ ... पर और उसे ... और

उसकी गरदन को हलाल कर दिया। जब हैड साहब की ओर-दार चीख निकली तो वह जिस रास्ते से आया था वहीं से भाग गया।

'मार डाला, इस कुत्ते को भी मार डाला—और अब दूसरा कुत्ता भी उस दरांती से नहीं बच सकेगा।'

'पानी……पानी…' एकाएक उसने महसूस किया जैसे उसके साथी उसे बहुत जोरों से हिला-हिलाकर कह रहे हैं, 'रामसिंह, क्या हुआ?' वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसके साथियों ने उसकी आंखों पर पानी के छींटे मारे, 'क्या हुआ, रामसिंह?' उसके साथियों ने फिर पूछा।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं! मैं शिप-ट्रिप पर था।' इसके बाद वे सब सो गए थे। लेकिन रामसिंह को नींद नहीं आ रही थी। वह सोचने लगा—एल० एस० डी० कितनी अजीब है। उसे बहुत बेचैनी होने लगी। उस हालत में वह पीपल के पेड़ के पास पहुंचा। गड्ढे को थोड़ा खोदने पर ही उसे दरांती दिखाई दी। काश यदि वह हैड साहब का कत्ल कर देता तो उसे बड़ी खुशी होती, लेकिन इस बस्ती में एक तूफान-सा आ जाता। पुलिस की मोटरें उसका पीछा कर रही होतीं और वह फिर जंगल-ही-जंगल भागता नजर आता। इसके बाद उसने दो-तीन घूंट पानी पिया और रोज की तरफ देखा। पैट्रिक और अपने साथियों की तरफ निगाहें दौड़ाईं। रोज के चेहरे पर एक अजीब किस्म की शांति थी। वह उसे देखता ही रहा और फिर चुपचाप आकर अपनी जगह पर लेट गया। लेकिन नींद उससे कोसों दूर थी। वह सोचता रहा और सोचता रहा। वह अब पुराना रामू नहीं था। ईसाई स्कूल में काफी होशियार हो चुका था। बदला भी उसे ठंडे दिमाग से लेना होगा। इसके लिए योजना बनानी होगी।

दूसरे दिन सुबह उसने अपने साथियों से विदा ली और काशी की ओर चल पड़ा। इस वक्त उसके दिमाग में केवल एक ही बात है और वह है काशी से मिलना। काशी के पैर पकड़कर पूछना, 'काशी, तुम्हें प्यार माता की सौगंध, बता दे—क्या मेरे जाने के बाद उन खूंखार जानवरों ने तुम्हारी इज्जत से खेला था?' और वाकई थोड़ी देर बाद ही वह उस मुकाम तक पहुंच गया था जहां यह भयानक घटना हुई थी। उसने बोसारे

सब लोग रामसिंह को अपने बीच पाकर बहुत खुश थे। सारा जश्न हो चुका तो रामसिंह ने सब लोगों से कहा, सोचता हूं कि हम सब एकजुट होकर काम करें, ब्याज पर कर्ज बिलकुल न लें। बाग जाकर मैं बी० डी० ओ० साहब से हूं। ट्रैक्टर से जमीन की जुड़ाई करेंगे और खेती के लिए बीज लेंगे। खाने के लिए कुछ-न-कुछ पैदा हो ही जाएगा। इसके बाद कुछ अंबर चर्खे भी ले आएंगे। अपने गुजारे के लिए कपड़ा भी मिल सकेगा।'

'रामसिंह तू इस गांव का बच्चा है। गांव-गांव का पानी पीकर होशियार बन गया है। तू जैसा चाहेगा, हम वैसा ही करेंगे।'

पंढरीनाथ गुप्ता के बाद ही उनके विरोधी लोग भी टीम से मिले थे। विरोधी दल के नेता जॉनसन ने टीम को बताया था—'सर, यह पंढरीनाथ भयंकर भ्रष्ट आदमी है। इसने पचास रुपये में नगरपालिका के फंड से उल्लू खरीदा और नगरपालिका के सामने टांग दिया। पूछने पर इसने बड़ी बदतमीजी से कहा—'यह उल्लू इसलिए टांगा गया है कि लोगों को समझ रहे कि वे भी इसी जमात के हैं।' इसके बाद उसने उल्लू को मरवा डाला और उसकी हड्डियां अपने आंगन में गाड़ दीं। आप इसकी बातों में न आएं।'

अखबार वालों ने भी अपनी बात टीम के सामने रखी। नेता लोग अलग-अलग कलेक्टर से भी मिले थे और उन्होंने कलेक्टर को साफ-साफ बता दिया था कि सूखे के नाम पर यह बर्दाश्त नहीं होगा कि कुछ नदी और तालाब मातबर लोगों के गली-मोहल्ले में खोद दिए जाएं।

संघ के बाद यह दल निमरपुर पहुंचा जहां उसने लिफ्ट-सिंचाई की योजना देखी। वहां भी दल की जय-जयकार हुई। कुछ नेताओं ने मेमोरेंडम दिए। इसके बाद वह डही पहुंचा। डही के रास्ते में कुछ फटेहाल मजदूर सड़क की खुदाई का काम कर रहे थे। वहीं लाल कुर्ताधारी मीफर बाहक भी मिला था। बाहक को कलेक्टर ने रेस्ट हाउस आने को कहा। डही के अगल रेस्ट हाउस में कुछ फल-चाय वगैरह का इन्तजाम था। दल के सदस्यों ने कुछ भी नहीं लिया। वहीं बाहक और उसके दल के लोग आ गए थे। बाहक से कलेक्टर ने कहा—'बाहक साहब कृपया अपनी भावनाओं से टीम को अवगत कराइए।' और बाहक एकाएक चिल्ला पड़ा—'सूखा टीम जिन्दाबाद! सरकारी जुल्म-ज्यादती नहीं चलेगी नहीं चलेगी!'

इसके बाद वे चले गए थे। बाहक सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे। चुनाव में तीन-चार बार उनकी जमानत जब्त हो चुकी थी। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी।

को बताना चाहता था कि बाग और उसके आसपास की
ी सूखे से हरक चुकी है। थोड़े ही दिनों में औरतें आदमी,
ा, जानवर तड़ातड़ मरने लगेंगे। वह अपने मन में सोचता
कि इस भयानक भुखमरी का अन्दाजा बाहर के लोगों को
हो सकता। लिहाजा वह, भद्दूसिंह और गांव के बहुत-से
ा बाग जाने वाली सड़क पर खड़े हो गए। उसे बताया गया
कि टीम में बड़े-बड़े आदमी हैं। उनका स्वागत-सत्कार भी
या जाना चाहिए। लिहाजा उसने अमराई में एक-दो कुर्सी-
लें लगा रखी थीं। हार-फूल, काजू-किसमिस और थोड़ा-सा
य-पानी का इंतजाम भी कर रखा था। बाग के हाकिमों ने
से यही समझाया था। उस दिन उन लोगों ने पूरे तीन घंटे
क टीम का इंतजार किया था। लेकिन ज्यादा टाइम न होने
कारण गाड़ियां फर्राटे से निकल गई थीं। वह कुछ भी नहीं
र सका था, लेकिन उसके हौसले बुलन्द थे। एकबारगी ही
सने यह फैसला कर लिया था कि वह किसी को भी भूखों
रने नहीं देगा।

सरकार भी सजग थी। एक बड़ा प्लान बनाया गया, जिसमें भारत सरकार का सूखा उन्मूलन प्रोग्राम भी शामिल था। दो-तीन करोड़ रुपयों की इस योजना में इन हलकों में छोटी और मझोली सिंचाई योजनाओं, सड़कों आदि का जाल बिछाया जाना था, जिनमें इन लोगों को काम और मजदूरी मिलती। बाग, निसरपुर और दीगर जगहों पर प्रोजेक्ट खुल गए थे। मोली काटकर बेचने की पाबंदी नहीं थी। बाहर से मल्टी विटामिन टैबलेट्स लाई गई थीं। पांच किलोमीटर की रेडियस के भीतर कोई भी आदमी बिना काम के वापस न जाने पाए, इसका पक्का इंतजाम किया गया था।

आगर में रात को सभा हुई थी।

१

गुंडे हर मंगलवार को पैसे वसूल करने को आ जाते हैं, रामसिंह इस बात से बहुत दुःखी था। उसने बुधवार कुछ फैसला किया और अपने साथियों के साथ पेमेंट की जगह पर पहुंच गया। उसे देखते ही दलाल और गुंडे वापस हो गए। पैसा आदिवासियों की जेब में आया। मुर्गे-रावडी और कुछ ठर्रे का इंतजाम हुआ। इस बार पहली बार रुपये की पूरी तनख्वाह मिली थी। रामसिंह चाहता था कि सब लोग मिलकर थोड़ा-थोड़ा पैसा बचाएं, ताकि शहर में और भी बनाव सजाकर रखा जा सके। आज आखर में आदिवासी जश्न मना रहे थे। लेकिन रामसिंह को चैन नहीं था। वह उन्हें हंसते-खिलखिलाते, मौज-मस्ती में देख रहा था। उनकी यह प्यारी खिलखिलाहट कैसे बनी रहे बस वह यही सोचता था।

'क्यों रे, मुंह लटकाए क्यों बैठा है ?' धमनी ने पूछा।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं, बस यूं ही …' और वह सोचता रहा काली कितनी सुन्दर है। शहर की औरतें और रोज भी इतनी सुन्दर नहीं थीं। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, चौड़ा ललाट और बड़ा टीका कितना अच्छा लगता है।

रोज, पैट्रिक और अपने बुरे दिनों के उन साथियों को याद करके अचानक उसे उन दिनों की याद हो आई। रोज को कंधे पर उठाते हुए उसे कैसा-कैसा महसूस हो रहा था। लेकिन गोरी और काली चमड़ी में बड़ा फर्क होता है उसे काली चमड़ी और चमड़ी मटकाती औरतें ही पसन्द हैं। वह उनके साथ नाचना चाहता था। धमनी काली भी नाच रही थी कुछ दूसरी औरतों को रामसिंह को उठाने का इशारा कर रही थी। तभी कुछ औरतों ने आकर उसे घेर लिया और मानो कैसे मोरचा पर उनके पैर भी अपने आप थिरकने लगे और वह मस्त होकर नाचने लगा।

पहाड़ियों के इस पार एक दूसरा पार निकल आता था और वहीं काम बनाए जा रही थी। जिन्दगी धीरे के लिए है

दूसरे दिन बाग के हनुमान मंदिर में दाल-बाफले की दावत थी। इसमें सभी सेठ-साहूकार शामिल हुए थे। वहां खाना खाने और थोड़ा-सा आराम करने के बाद उनकी एक गुप्त सभा हुई। आदिवासियों से पैसा वसूलने के तौर-तरीकों पर विचार हुआ। उसके लिए सबसे ज्यादा परेशान करने वाली दो बातें थीं— एक-तो नया साहूकार वर्ग उभर आया था जो खुद हाट में जाकर गिरवी-गांठों का धंधा करता और हफ्तेवारी पैसा वसूलता। ये लोग पैसा वसूलने के लिए मोटर साइकिलों पर जाते और एकाध गुंडा उनके पीछे बैठा रहता। मद्रास बैंक और कमाल बैंक के नाम से एक दूसरा साहूकारी तबका भी इस कारोबार में पनप रहा था। ये साहूकार इन पुश्तैनी धंधा करने वालों के खिलाफ सरकार को, कलेक्टर को और पुलिस को गुमनामी चिट्ठी लिख रहे थे, जिसके कारण उन पर पुलिस का शिकंजा कसता जा रहा था। पुलिसवालों से तो खैर वे निपट लेते, लेकिन अपने ही प्रतिद्वंद्वी साहूकारों से निपटना उनके लिए बड़ा मुश्किल काम था। उनको अपने पैसों की वसूली भी मुश्किल जान पड़ रही थी, हालांकि वे सूद में एक रुपये का हजार रुपया वसूल कर चुके थे, लेकिन असल और उसके सूद की वसूली फिर भी बाकी थी। राहत-कार्य खुलने से उन्हें अपना रुपया वसूल करने की पूरी उम्मीद हो चुकी थी। इसलिए ये लोग हफ्तावारी चुकाने के दिन अपने आदमी को जहां भी काम चल रहा होता वहां भेज देते। लेकिन रामसिंह के आने से हालात बदल चुकी थी। उसने अपने इर्द-गिर्द काफी लोग इकट्ठे कर लिए थे। उसके आदमी चुकारे के दिन उन जगहों पर खड़े रहते। दो-तीन जगहों से इन सेठों के आदमी वापस हो गए थे, मद्रासी साहूकारों को भी इससे बड़ी खुशी हुई थी। महाजनों ने आपस में सलाह-मशविरा किया। कोई कहता—अगर रामसिंह का गढ़ है, वहां हर झोंपड़े में आग लगा देनी चाहिए। कोई राम-

सिंह को मारने का और कोई उसके हाथ-पैर तोड़ देने की पेश-कश करता।

कोई बुजुर्ग साहूकार धीरे से कहता— 'भाइयों, क्या आप लोगों का दिमाग खराब हो गया? क्यों मौत के कुएं में छलांग लगा रहे हो? कोई अपने बाप का राज तो अब नहीं रहा। जेल जाकर चक्की पीसनी पड़ेगी!' बुजुर्ग की इस बात पर सब लोग ठंडे दिमाग से सोचने के लिए मजबूर हो गए। इस शैतानी सोच-विचार को शाम की ठंडी बयार से और पैने पत्ते मिले। उन लोगों में से रतनलाल सेठ ने बुजुर्ग की ओर देखते हुए कहा—'तो दद्दा, आप ही कोई हल निकालिए।'

दद्दा ने अपनी अनुभवी आंखों को घुमाते और एक अंगुली को सामने करते हुए कहा—'बेटे, हमने अपनी जिन्दगी में एक ही बात सीखी है। यदि दुश्मन शक्कर से मर सकता है तो उसे जहर देने की कोई जरूरत नहीं। रामसिंह को जीतने की कोशिश करो। उसे अपना लीडर बना लो। तब वह आदि-वासियों का लीडर नहीं रह जाएगा।'

दद्दा की बात पर लोग सोचने विचारने लगे। एक दूसरे बुजुर्ग ने कहा 'खंडेलवालजी ठीक कह रहे हैं। इसकी एक सूरत यह भी हो सकती है कि हम रामसिंह के मुकाबले एक दूसरा लीडर पैदा कर लें। पहले तो हमें इन नये साहूकारों को अपनी ओर मिलाना होगा, तभी यह सारा काम जम सकता है।'

अब खंडेलवालजी बोले—'देखो भाई, अपने सामने दो-तीन रास्ते हैं। एक रास्ता है रामसिंह के हाथ-पैर तोड़ डालने का या उसकी हत्या कर देने का। लेकिन इससे कुछ बनेगा नहीं। यदि वह जिन्दा बच गया तो बड़ा लीडर बन जाएगा। दूसरा रास्ता है उसके मुकाबले कोई नया लीडर पैदा करने का लेकिन मुझे फिलहाल इसकी कोई जरूरत महसूस नहीं होती। रामसिंह की अध्यक्षता में ही अपनी सभाएं तथा जलसे आसानी से किए जा सकते हैं। ज्यादा-से-ज्यादा उसे यह छूट भी दी जा सकती है कि वह हम लोगों के खिलाफ जितना चाहे बोले, इससे वह उनका लीडर भी बना रह सकता है और हमारा तो रहेगा ही। तीसरा रास्ता है—नये साहूकारों को अपने में मिलाने का। यानी रोटी को मिल-बांटकर खाना होगा। इस

उसे भगाने के लिए एक सहस्र चंडी महायज्ञ भी कर सकते हैं।'

'बिलकुल ठीक कह रहे हैं दद्दा। हमें लगे हाथ यज्ञ का आयोजन कर लेना चाहिए। उसमें बीस-पचीस लाख रुपये खर्च भी हो जाएं तो कोई बात नहीं। यह काम किसी बाबा के जिम्मे किया जा सकता है। इस यज्ञ में रामसिंह और उसके साथियों को भी उलझाया जा सकता है। बड़े आदमियों को भी लाने की कोशिश करेंगे। हमें बस यही देखना है कि यज्ञ-स्थल से कोई भी आदमी भूखा न जाने पाए। इससे सरकारी तालाबों और सड़कों के काम भी ठप्प किए जा सकते हैं। आदिवासी वहां काम करने के लिए नहीं जाएंगे और झख मारकर हमारी शरण में आ जाएंगे। भाइयों, इन सारी बातों पर सोच-विचार कर लो। इसके बाद ही कोई कदम उठाना ठीक होगा।'

दद्दा, आपका कहना सवा सोलह आना ठीक है। यह चमत्कारों का देश है। यदि हम एक बाबा और एक यज्ञ का इंतजाम कर दें तो इस सूखे इलाके में पानी-ही-पानी बरस जाएगा और हमारी तिजोरियां भी भर जाएंगी।'

बात बड़े शैतानी ढंग से कही गई थी। लेकिन सब लोग इसका मतलब समझ गए थे। प्लान मजबूत था। सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे।

दद्दा ने इस प्लान को ठीक ढंग से अमल में लाने के लिए चार-पांच आदमियों की एक कमेटी बना दी। उन्होंने अपनी ओर से यह आश्वासन भी दिया था कि वे सलाह-मशविरे के लिए हमेशा तैयार मिलेंगे। मीटिंग खत्म होने पर घरों की ओर लौटते हुए भी वे आपस में चर्चा करते रहे।

इस गुप्त मीटिंग पर अनेक लोगों की निगाहें लगी हुई थीं। मद्रास बैंक और बंगाल बैंक के रमनैया, नरसिंहराव और हफ्तावारी वसूली करने वाले नये साहूकारों का ग्रुप भी काफी सतर्क निगाहों से इनकी चालबाजियों को तोल रहा था। यह ग्रुप यह जानता था कि सारी-की-सारी मलाई ये लोग खा चुके

है, यहां तक कि जिन आदिवासियों की अपनी ज़मीन और बैलों का जानों का दुकानदार साहूकार की ओर से लिया है लोग उन तरह पूरी को भी इन साहूकारों के पास रखे हुए थे। जिनके बैल साहूकार के पास रहन पर रखा जाता था, उनकी ही बड़ी हैसियत इस आदिवासी की मानी जाती थी। अब बैलों की जब-रदस्ती से आदिवासी अपने बैलों को वापस न लौटाकर उधारी के बैल लेता। वे साहूकार इन बैलों के रखने का लगान भी लिया करते थे। साहूकार इन बैलों को और ज्यादा साहूकारी करने का ज़रिया बनाने में लगा देते थे। इनकी शर्तों की दुकानें भी थीं। उनमें भी जो बारे का कोने का कपड़ा चार रुपये में बेचा जाता। इन सब बातों को देखते हुए रमनैया और उसके साथी इस नतीजे पर पहुंच चुके थे कि अब केवल शस्त्र ही बची हुई है जिसे मौका पड़ने पर उठा लेना चाहिए। इन मजामी साहू-कारों को सबसे ज्यादा खतरा जितराम इन बचे हुए साहूकारों से ही था। जितराम ने उनकी हर हरकत पर कड़ी नजर रखे हुए थे। आदिवासी मीटिंग को वे केवल हाथ-धाकने की मीटिंग नहीं मानते थे। इसमें वे एक भारी षड्यंत्र सूंघ रहे थे। उस दिन नलरा एक खूनी जैसा दिखने वाला आदमी वहीं आसपास मंडरा रहा था।

इधर पुलिस भी हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी थी। उसकी ओर से भी सादे कपड़े पहने एक आदमी मीटिंग के बाहर चक्कर काट रहा था। जब से इस इलाके में सूखा पड़ा, तब से पुलिस काफी सतर्क हो चुकी थी। एक तो दिन भर ये सेठ-साहूकार पुलिस-थाने पर जाते और अपनी जान-माल की रक्षा के लिए दारोगा साहब से विनती करते, 'सर ये आदिवासी बड़े चोर और लुटेरे हैं। कभी हम लोगों की जान-माल को खतरा हो सकता है। इन दिनों तो परिस्थिति और भी ज्यादा नाजुक हो चली है। हमारी रात की नींद हराम हो गई है। हमारे भी छोटे-छोटे बच्चे हैं, साहिब !'

और दारोगा साहब हंसते हुए जवाब देते, 'सेठजी, आपके वे लकड़ी-पटे वाले वालंटियर कहां गए?' और सेठजी बड़े विनम्र ढंग से अपने एक हाथ से दारोगाजी के घुटने दबाते हुए कहते, 'सरकार, कहीं दाई से पेट छिपता है—वे तो साले दूध-

घी खाकर मुस्टंडे और नाकारा हो गए हैं। अगर एक आदिवासी तीर-कमान लेकर आ जाए तो सालों की हाफ-पैंट गीली हो जाए। आप तो जानते हैं सरकार, वे तो बस कोई फंक्शन-बंक्शन हो तो बस शोभा के लिए लेफ्ट-राइट, लेफ्ट-राइट कर देते हैं और किसी भी वी० आई० पी० के आने पर उसे लाठियों के तोरण में गुजार देते हैं। बस, हम तो सरकार आपको जानते हैं।'

'ठीक है, ठीक है, खंडेलवालजी ! मैं किस काबिल हूं। लेकिन जब आप जैसे इज्जतदार शहरी मेरी शरण में आए हैं तो मुझे भी आपको अभयदान तो देना होगा। और क्या हाल हैं सेठजी?'

'सरकार, वह रामसिंह नेता भी हमें बड़ा परेशान कर रहा है। बड़ा फितरती और चालाक इंसान है। हमारे आदमी जब तालाब की शोभा देखने जाते हैं तो वह उनको भी मारकर भगा देता है। गोंड-गवारों का जमाना आ गया है, सरकार।'

दारोगा साहब ने हंसते हुए कहा, 'सेठजी, ये सब आप लोगों के पाप हैं जो सिर पर चढ़कर बोल रहे हैं। मुझे बहुत पहले से लगता था कि आप लोगों के लौंडे बिगड़ रहे हैं। आदिवासी औरतों से बदचलनी कर रहे हैं। सेठ साहब ! इस बदचलनी की बदौलत जो संतान पैदा हुई और परवान चढ़ी वह क्या आपको माला पहनाएगी !'

दारोगा साहब की बात से खंडेलवालजी हतप्रभ हो गए। पहले तो उन्होंने कुछ भी न समझने का नाटक किया। लेकिन तत्काल वे समझ गए कि यहां नादानी जाहिर करने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि उनका सामान एक बहुत ही मंजे हुए इंस्पेक्टर से पड़ा है।

'हें-हें' करते, खींसे निपोरते हुए बोले, 'आप बजा फरमाते हैं, हुजूर !'

दारोगा साहब ने सेठजी की छुट्टी करते हुए कहा, 'आप चलिए, खंडेलवालजी ! आपकी फिक्र आपसे ज्यादा मुझे है।' यह सुनकर भी खंडेलवालजी कुर्सी पर ही जमे रहे। बोले, 'सर वह रामसिंह…'

'ऐसा है, खंडेलवालजी, आपके जो आदमी हवा खाने या

तालाब की शोभा देखने के लिए तालाब पर जाते हैं, उनसे कह दीजिए कि वहां कोई झगड़ा-फसाद न करें वरना उन्हें भी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाएगा।'

अब खंडेलवाल का माथा ठनका। उन्होंने कहा, 'तो मैं चलूं, सरकार ?'

'हां-हां, चलिए, खंडेलवालजी ! दारोगा ने उत्साहपूर्वक कहा, 'अरे भाई, आप जैसे नेकबख्त और बाइज्जत शहरियों के कारण ही तो बाग की रौनक बरकरार है।'

'हें, हें, हें···मैं किस काबिल हूं, सरकार !'. इतना कहते हुए वे उठे और दरवाजे की ओर बढ़े। दरवाजे के बाहर उन्हें हैड साहब मिले। हैड साहब ने उन्हें नमस्ते करते लगभग घुमाते हुए कहा, 'नमस्ते,नमस्ते। आज तो साहब से खूब छन रही थी, क्या बात है ?'

इसका जवाब खंडेलवालजी ने हंसते-हंसते दिया, 'अरे सरकार, हमारे लिए तो आप और दारोगाजी दोनों ही बराबर हैं।

हैड साहब को यह बात सुनकर खुशी हुई। घुटे हुए आदमी थे। तीस साल तक पुलिस डिपार्टमेंट में भाड़ झोंकी थी। हंसते हुए रोजनामचा लेकर निकल गए। सामने खंडेलवालजी को कोई पुलिसवाला नजर आया। उस पुलिसवाले से भी उन्होंने बड़े हंसकर बात की।

सूखे की खबर ने जहां एक ओर प्रांत की राजधानी को हिला दिया था, वहीं दूसरी ओर लायन्स, रोटेरी और दूसरी संस्थाएं भी हड़बड़ाकर जाग पड़ी थीं। लायन्स के प्रख्यात गवर्नर रिटायर्ड कर्नल हरदयाल लालचन्द ने खुद धार आकर लायन्स की एक मीटिंग में भाषण करते हुए कहा था, 'लायन्स, मुझसे धार के लोगों की हालत देखी नहीं जा रही है। धार तो क्या, अगर दुनिया के किसी भी मुल्क में सूखा पड़ता या तूफान आता तो भी हम लायन्स का यह फर्ज हो जाता कि हम उनके रेस्क्यू के लिए जाएं या तन-मन-धन से जो भी मदद होने दें।···

थोड़ी देर के लिए गवर्नर साहब का भाषण रुक गया था। एक सूटधारी व्यक्ति ऊपर स्टेज पर चढ़ आया था। उन्होंने

घबराहट में उससे पूछा, 'व्हाट हैपण्ड, ब्वॉय ?'

उसने जवाब में कहा, 'एवरीथिंग इज ओ० के०, सर!'

गवर्नर साहब के चेहरे पर रौनक लौट आई। सुबह एक ट्रेजेडी हो गई थी। उनकी मोटर के तले एक लड़का आ गया था। मामला रफा-दफा हो गया था। गवर्नर साहब ने अपना ओजस्वी भाषण का टुकड़ा सामने रखा, 'तो दोस्तों, उठो, जागो और बाग चलो! यही हमारा आज का नारा है।'

रात को उनकी शान में एक जबर्दस्त डिनर रखा गया था। शानदार वेजिटेरियन और नॉन-वेजिटेरियन खाने का इंतजाम था।

मुर्गे की एक बोटी मुह में रखते हुए वे बोले, 'क्या खाएगा मेन, जब इसान ही सफर कर रहा हो तो हमारे खाने का कोई मतलब ही नहीं।'

'हाय, इसे कहते हैं इंसानियत!' मिसेज इरफान ने कहा।

मिसेज इरफान को काटते हुए मिसेज मेहरोत्रा बोलीं, 'इंसानियत!, बहुत छोटी बात कह दी, मिसेज इरफान। कर्नल साहब की दरियादिली के किस्सों को कौन नहीं जानता।'

अब मिसेज इरफान की बारी थी। बालों को एक झटके से पीछे करते हुए वे बोली, 'आप उन सारी चीजों को क्या कहेंगी जिसके लिए कर्नल साहब ने अपनी पूरी जिंदगी दांव पर लगा दी।'

'नो-नो, व्हाट आई मीन वाज टोटली डिफरेन्ट!' मिसेज मेहरोत्रा बोलीं।

दोनों एक-दूसरे को खूब समझती थीं, मौके-बेमौके एक-दूसरे को काटती थीं, लेकिन अपमान जाहिर करने में उन दोनों का कोई जवाब नहीं था। यह मौका लड़ने का भी नहीं था। फिर बहुत-सी औरतों ने आकर उन लोगों को घेर लिया। दोनों हंस-हंसकर बातें करने लगीं।

टेबुल के पास सरसराहट-सी थी। लोग तीन-तीन, चार-चार के ग्रुप में तजकिरा कर रहे थे। अमेरिका, चीन, रूस और तीसरी दुनिया के बारे में बातें चल रही थीं।

मिस्टर प्राणनाथ कह रहे थे, 'शक्तियों का पोलराइजेशन हो रहा है। उधर चीन-अमेरिका के रिश्ते, इधर रूस-हिन्दुस्तान

है और फिर एशिया के राष्ट्रों के आपसी झगड़े और फिर अरबों-इज़राइलियों और अरब जगत के राष्ट्रों के बीच उनके आपसी झगड़े···अजीब-सा समीकरण है। दुनिया का पॉलिटिक्स भी तार पर कपड़े लगाकर चलने जैसा है।'

'वाह-वाह, क्या बात है साहब !' मिस्टर सिंघल ने कहा।

'लेकिन बात कहने का ढंग कोई आपसे ही तो नहीं ले गया है, सिंघल साहब ?'

'अरे साहब, इसको ऐसे भी तो कहा जा सकता है कि यह ठेका सिर्फ सिंघल साहब ने ही ले रखा है तो ज्यादा अच्छा होगा ?' चौधरी साहब ने कहा और वे आगे एक दूसरे ग्रुप की ओर बढ़ गए।

सिंघल साहब इस बात से गद्‌गद्‌ हो गए।

दूसरे ग्रुप में सिंघल साहब की तारीफ हो रही थी। कोई बता रहा था कि उनके पास सात रंगीन टेलीफोन हैं। कोई बता रहा था कि उनके पद के पीछे से एडीशनल नाम हट गया है और उसके उद्घाटन में उनके नाम से एक जीप आ गई है। कोई बता रहा था कि उनकी बेटी ने नम्बर लाने में यूनिवर्सिटी का रिकार्ड तोड़ दिया है। कोई उनके कुत्ते टिकू की बात कर रहा था जो उनकी बीबी के पलंग पर ही सोता था और जिसे वे अपने बाप का अवतार मानते थे। बातों का खंडन-मंडन—दोनों चल रहा था।

कुछ लोग कर्नल साहब को घेरकर खड़े थे। उन्होंने कर्नल साहब से विद्यार्थी का चेहरा बनाकर विनीत ढंग से पूछा 'सर, आप हमें गाइड कीजिए, ताकि हम बाग में अपना काम शुरू कर दें। क्योंकि आपको ऐसे कामों का बहुत बड़ा अनुभव है।'

कर्नल साहब ने धीर-गंभीर वाणी में अपनी बात शुरू की, 'प्लीज ! यह काम बड़ी जिम्मेवारी का है। पहले आप वहां जाएं और उनके सामने बिना खाए-पिए पहुंच जाएं। उन जगहों को आइडेंटीफाई कर लें जहां यह प्रॉब्लम सबसे ज्यादा एक्यूट है। इसके बाद उन औरतों-मर्दों-बच्चों-बूढ़ों को आइडेंटीफाई कर लें जो सचमुच भूख से मर रहे हैं। उनकी लिस्ट बना लें। जानवरों का तखमीना लगा लें। वहां मुर्गी-पालन का धंधा भी होता होगा देख लें कहीं रानीखेत की बीमारी तो वहां नहीं फैल

रही है। यदि हां तो फौरन जानवरों के डॉक्टर को बुला लें। आइडेंटीफाई कर चुकने के बाद कहीं अच्छी जगह पर अपने तम्बू गाड़ दें और वहां से ऑपरेशन-रिलीफ शुरू करें। और हां जब भी आप कोई बड़ा काम हाथ में लें तो उसका जलसा वगैरह जरूर करें। किसी बी० आई० पी० को बुलवा लें। कलेक्टर साहब का और दूसरे फंक्शनरीज का सहयोग लें। मैं सब अफसरान को डी० ओ० लिख दूंगा। हां, आप लोग मेरी एक बात गांठ में बांध लें...' किसी ने भी नहीं पूछा कि वह कौन-सी बात है, तो उन्होंने खुद उसका जवाब देते हुए कहा, 'आप लोग इस गांव को गोद ले रहे हैं। यू अंडरस्टैंड। इससे आपका उस गांव के साथ एक रिश्ता बनता है।

कर्नल साहब की इस बात का लायन्स पर गहरा असर हुआ। डिनर के बाद जब वे अपनी गाड़ी पर जाने लगे तो करीब-करीब पूरी भीड़ ने ही उनसे हाथ मिला लिया था।

लायन्स क्लब के इस जलसे के बाद ही उनकी टीम ने गांव में डेरा डाल दिया था। इसमें डॉक्टर, वकील, व्यापारी और बहुत सारे लोग शामिल थे। इनके बड़े तम्बू बाग में गड़ चुके थे। कुछ लोग रेस्ट हाउस में और स्कूलों में भी डेरा जमाए हुए थे। ये अपनी मोटरों और फटफटियों पर 'एल' का निशान लगाए रहते थे। गांव के लोग इन्हें 'शेर-क्लब' का मेम्बर बता रहे थे। कुछ लोग 'एल' का मतलब 'लर्निंग-लायसेन्स' से ले रहे थे बहरहाल इन्होंने अपने काम-काज के बारे में सोचना शुरू कर दिया था। वे इसे जल्द-से-जल्द अंजाम देना चाहते थे। उनके पास कुछ दूध-दलिया, गेहूं और मल्टीविटामिन टेबलेट्स का जखीरा था। इन लोगों को धानी में ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जा रहा काम पसन्द नहीं आ रहा था। ये खुलेआम कहते कि अंग्रेज तो चला गया, लेकिन ये पादरी देश को भ्रष्ट कर रहे हैं। रोटियां बांटने के बहाने धर्म परिवर्तन करते हैं और विदेशी पैसों में जासूसी करते हैं। हिन्दुस्तान के मिलिटरी के अड्डे और एटम बम के फार्मूले बाहर भिजवाते हैं। पता नहीं इन पर सरकार की कड़ी नजर क्यों नहीं है।

रामसिंह बड़े पशोपेश में है। उसकी दिन-रात की नींद हराम है। वह चकरघिन्नी की तरह यहाँ से वहाँ चक्कर काटता है। गाँव के मजदूरों का कम-से-कम प्रोटेस्ट मार्केट पर साहू-कारों से सही मिल गई। उसके बाद यह रिपोर्ट आ गई थी कि अब यहाँ पैसा बाँटने के लिए साहूकारों के आदमी नहीं आते। लेकिन वह बेहद चौकन्ना था। पता नहीं साहूकारों के दिमाग में क्या पक रहा है! कहीं यह तूफान आने के पहले की शान्ति तो नहीं है। मीत उसे तरह-तरह की रिपोर्टें देते। उसे यह भी बता दिया गया था कि साहूकारों का इरादा चाहे जैसे भी हो उसे गाँव से हटा देने का है। काकी ने उसे खाना खिलाते समय कहा भी था—रामसिंह, देख तो अपनी क्या हालत बना रखी है तूने। जब से तू यहाँ आया है, हम लोग तुझे कोई सुख नहीं दे सके।'

'सुख की बात करती है, काकी। आदिवासी के जीवन में सुख है कहाँ?'

'बहुत सुख है रे, ऐसा सुख जो धनी-मानी लोगों के नसीब में भी नहीं होता। हम सुखी हवाओं में रहते हैं। थोड़े-से आटे और प्यार के टुकड़ों से खूब मजे से नाचते-गाते अपनी जिंदगी गुजार देते हैं।'

'सच कह काकी! मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती, तुम लोग इतनी परेशानियों में भी कैसे सुखी रह लेते हो?'

'असली बोली, 'चल, उठ, कुछ पेट में डाल ले और तब अपने काम-धन्धे पर जाना।'

काकी ने बड़े प्यार से खिलाया। खाना खाकर पेट पर हाथ फेरते हुए वह बोला 'काकी, मेरी अब एक ही इच्छा है अगले जनम में तुम्हारी कोख से जन्म लेने की।' इतना कहकर वह चलता बना।

वह चला जा रहा था। रास्ते उसके जाने पहचाने थे। दूसरा अहसास भी उसे था। हर समय जब पगडंडी दिखाई देती और और दोनों ओर खेतों की कतारें खत्म होतीं, सामने और पीछे जंगल की पतली कतार दिखाई देती, वह सोचता—उसे सीधे चलना है कुछ ही दूर पर नदी है और उसका छल-छलाता हुआ पानी है, जिसकी आवाज वह बचपन से सुनता

आ रहा है। इस नदी से उसकी मांस-मज्जा और पिंड बना हुआ है। नदी के पानी के कारण आसपास की जमीन में नमी होती है, जिससे थोड़ी हरियाली नजर आती है। उसके बीच में पुल बना हुआ है और पुल पर से गुजरती हुई गाड़ियां हैं।

एकाएक उसे लगा कि इतनी देर में तो उसे नदी के पास तक पहुंच जाना था। एक दूसरी बात भी उसके ध्यान में आई। एक खेत के बाद दूसरे खेत का सिलसिला खत्म होने को ही नहीं आ रहा था। उसने पीछे मुड़कर देखा, *कहीं कोई नहीं था।* दोपहरी का मनहूस सन्नाटा भर था। अचानक उसे लगा जैसे कुछ लोग उसका पीछा कर रहे हैं। पीछे मुड़ने पर जैसे वे गायब हो गए और पेड़ों के पीछे छिप गए। वह ठिठक गया और थोड़ा-सा पीछे की ओर पलटा, फिर चलने लगा। सामने अंजन का पेड़ खड़ा हुआ था। नीचे उसे एक लकड़ी दिखाई दी। उसने वह लकड़ी उठा ली। उसे ख्याल आया उसके काका ने भी उसे दुश्मनों से आगाह किया था। एकाध हथियार रखने की सलाह दी थी। लेकिन उसके लिए यह सलाह मानना कठिन था। वह सोचता था कि भूख और भूखमरी से मरने की बजाय लोगों की सेवा करते हुए जान दे देना ज्यादा अच्छा है। काका-काकी को छोड़कर फिर उसका दुनिया में है ही कौन—रोज पैट्रिक और उसके तमाम साथी न जाने इस वक्त कहां होंगे? बड़े बहादुर लोग थे। उन लोगों से ही उसने हिम्मत और चट्टान से टकराने की ताकत बटोर ली थी। अब वह मेमना नहीं रह गया था। बिलकुल नहीं। यदि इस जंगल में भी साहूकारों के गुंडे छिपे हुए हों तो वह एक-एक का मुकाबला करेगा। उसने जोर से आवाज लगाई, 'निकल आओ सालो, निकल आओ! एक-एक से निपट लूंगा, छटी का दूध याद करा दूंगा।'

लेकिन जंगल, पहाड़ों और खेतों से बस उसकी आवाज टकराकर वापस भर आ गई। लकड़ी उसने वापस नहीं फेंकी। उसे सटाकर वह चलता गया। उसने करीब आधे फर्लांग की दूरी तय की होगी कि उसे फिर से ऐसा लगा जैसे कोई उसके पीछे चल रहा है और पीछे मुड़कर देखते ही गायब हो जाता है या पेड़ के पीछे दुबक जाता है। उसने एक बार अच्छी तरह

झाड़-झंखाड़ों को देखा, उनमें भारी की कमी। वह बड़े पेड़ों में भी बढ़कर आ गये गया। सरसर बौराती थी। आस-पास पेड़ों में कोई इस में मोटी दरार पड़ा हो। उसने एक आदमी मन को बड़ा कर लिया। अबकी बार का माथ लिया और बढ़ा गया। जो होगा, देखा जाएगा। उसने मकड़ी की अच्छी तरह से देखा भाला और चूम लिया। वह सोचता है कि आखिर उसके अपने दुश्मन कैसे पैदा हो गए? उसने आखिर इन बड़े बड़े लोगों का क्या बिगाड़ा है? वह भी बस इतना ही चाहता है कि उसके भाई अपनी हैसियत और अपनी ताकत को पहचानें। वे यह जानें कि ये जंगल, ये बोटे। यह हवा, यह पानी यह पहाड़ यह झाड़-झंखाड़ सब उसके। वह इसे बांटने के लिए तैयार है, लेकिन इस शर्त पर नहीं कि उसे सवाई पर धान उधार दिया जाए या उससे एक रुपये के बदले पचास हजार रुपये वसूले जाएं। इस शर्त पर भी नहीं कि उन पर किसी किस्म का हुक्म किया जाए या उनकी औरतों का वे अपने इस्तेमाल करें। उसने इन साहूकारों और बाबुओं का कुछ नहीं बिगाड़ा, बस अपने बिरादरी वालों में थोड़ी-सी समझ भर दी थी। उन भेड़ियों के बिदकने का कारण बस यही है। सुना जाता है कि उनके पंजे बहुत नुकीले हैं, वे उसकी बोटियां काट-काट चील-कौओं को खिला देंगे। और पुलिस उसकी शिनाख्त भी नहीं कर पाएगी। लेकिन कहते हैं कि पुलिस तो गड़े हुए मुर्दे को भी खोदकर उसका पता-ठीकाना मालूम कर लेती है।…हूं! वह भी क्या-क्या सोचने लगा। मरने के बाद उसकी बोटियों को गिद्ध खाये या गधा, उसमें क्या फर्क पड़ता है। उसकी मिट्टी गांव की मिट्टी में मिल जाएगी, बस इतना ही काफी है। राजा-महराजा, अफसर-महाजन, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब—सब तो इस मिट्टी में मिल जाते हैं, फिर इसका क्या बनेगा, इसकी फिक्र वह क्यों पाले। उसे दूर पहाड़ी भेड़ों का रेवड़ दिखाई दिया। उनके पीछे कहीं न कहीं 'स्पर्द' करता हुआ लाठी लिए हुए बरेदी भी होगा। उन बकरियों के मिमियाने से उसे लगा कि उसकी रगों और नसों में अचानक खून की रवानी बढ़ गई है। लाठी को उसने आसमान की ओर ताना और चिल्लाया 'मामा हो!'

और सारा इनका थर्रा गया। 'मामा हो' की आवाज पहाड़ियों से टकराकर वापस लौट आई। अब वह बेफिक्र होकर पगडंडी पर चलने लगा। उसे यह जानकर बड़ा अचरज हुआ कि वह अपने काका के होटल में पहुंच गया है।

उसका काका देखकर बड़ा खुश हुआ। बोला, 'कहां से आ रहे हो रामसिंह ?'

'कहीं से नहीं, काका। मुझे लगता है जैसे मैं रास्ता भूल गया था।

'चलो, सही-सलामत पहुंच गए, यही बहुत है। यहां चकवी-चकवे रहते हैं, वे राही को भटका देते हैं। खैर! बेटे, सेठजी से मिलो। ये तुमसे मिलने गांव जा रहे थे।'

'नमस्ते जी !' वह विनीत ढंग से बोला।

'बेटे, तुमसे मिलने की बड़ी साध थी। खंडेलवालजी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

'आप मुझे वहां बुला लेते, मैं आ जाता। आपने क्यों तकलीफ की ?'

तकलीफ काहे की, बेटे। हमने तुम्हारी बड़ी तारीफ सुनी है। तुम दिन-रात अपने लोगों की इतनी सेवा करते हो, उनके लिए इतनी तकलीफें उठाते हो, मैं इतनी दूर चला आया तो कोई बड़ी बात थोड़े हुई।'

रामसिंह को भीतर से थोड़ी खुशी हुई थी। फिर भी वह संजीदा था। बोला, 'कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?'

'मैं यह कह रहा था, बेटे कि हमारा और तुम्हारा मकसद एक ही है। हम भी इस गाढ़े समय में तुम लोगों की सेवा करना चाहते हैं। तुमने अखबारों में मेरा बयान भी पढ़ा होगा।' यह कहकर उन्होंने अखबार रामसिंह के सामने रख दिया। उसमें खंडेलवालजी का फोटो और बयान छपा था। यह बयान तीन हिस्सों में बंटा था। एक तो यह कि वे और उनके पुरखे मारवाड़ से एक थाली-लोटा लेकर आए थे। दूसरे यह कि आदिवासियों की बदौलत ही वे पैसेवाले बन गए हैं। तीसरा यह कि अब उन्हें भूखों नहीं मरने देंगे। उनके गोदाम उनके लिए खुले रहेंगे। बयान के अंत में कहा गया था कि उनकी नैतिक

जिम्मेदारी है और वे पैसा कमाके दिखे आया गया [illegible]
है।

रामसिंह जब अखबार पढ़ रहा था, दर्शक [illegible] उनके बेटे को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। रामसिंह [illegible] 'जी, अच्छा है। बहुत खुशी की बात है।'

मैं चाहता हूं बेटा कि हमें भी तुम्हारे जैसा लीडर [illegible] 'राम था तुम हमारे लीडर बन जाओ। हमारा सारा [illegible] आसान हो जाए।'

मैं कोई लीडर-वीडर थोड़े हूं, साहब!' वह सरल [illegible] हंसते हुए बोला, 'आपको जब भी मेरी जरूरत पड़े, आप [illegible] सेवा का मौका दें।

अच्छा बेटे, तुमसे मुझे यही उम्मीद थी। बनिया के [illegible] क्या खाकर लीडरी करेंगे। जरा सिर पर धूप पड़ी कि [illegible] बौरा जाते हैं। जब भी शाम आना हो और मुझसे कोई काम [illegible] तो जरूर मेरी पेढ़ी पर आ जाना। हां!' वे बड़ी मायाम[illegible] वाणी में बोले— तो मैं चलूं, बेटे! आज मेरा जीवन सार्थक हो गया। चलूं, भद्दूसिंहजी!' वे उनका हाथ दबाते हुए बोले। उनके चेहरे पर मधुर मुस्कान विराज रही थी।

और बंसीलालजी अपने दो-तीन आदमियों के साथ चले गए।

रामसिंह ने काका से उनके बारे में पूछा तो भद्दूसिंह ने बताया, 'रामसिंह, यह बड़ी घुटी हुई रकम है। किसी भी आदमी को खड़े-खड़े बेच दे। इनका और इनके भाई-बन्दों का बहुत-सा पैसा यहां फैला हुआ है। उन्हें इसकी चिन्ता सता रही है। उनके आने का यह कारण भी है।'

रामसिंह ने सिर खुजलाते हुए और गाल पर हाथ रखते हुए कहा, 'समझ गया काका, समझ गया। हमारी भी इनसे कोई दुश्मनी नहीं है। हम तो बस यही चाहते हैं कि हमें रोजी-रोटी मिले। हम इनके आड़े कहां आते हैं, काका?'

'रामसिंह, आड़े आ रहे हो, इसलिए इन्हें यहां आना पड़ा। अब तक हमारा और इनका साबका बस इतना ही था कि हम लोग किसी मुक़दमे या शादी-ब्याह या बीज के लिए उनसे पैसा लेने उनके दरवाजे तक पहुंचते थे। यह काम बहुत सालों से

[ह]ोता आया है। अब तुम्हारे जैसे नौजवान यहां आ गए हैं जो [य]ह कहने लगे हैं कि सेठ हमारे खून-पसीने से बड़ा बना है। [ह]मारा हक चाहिए, हमें अपनी जमीन वापस चाहिए। हमें रहने के लिए झोंपड़ी चाहिए। यह सारी चीजें इन्हें बरदाश्त नहीं हो रही हैं।"

रामसिंह ने जवाब दिया, 'काका, यह बात तो ठीक है। पैसों की भूख आदमी को पागल बना देती है। क्या यह लोग नहीं जानते कि हम लोग भूखों मर रहे हैं। अब आप ही सोचिए कि हफ्तावारी पेमेंट की जगह भी इनके गुंडे पहुंच जाते हैं। आखिर हमें भी तो जिन्दा रहना है, काका।'

'ठीक कहते हो, बेटा! हमें इनकी हर चालबाजियों से खबरदार रहना चाहिए।'

रामसिंह की मुट्ठियां बंध गईं। 'मैं अपनी जगह पर पहाड़ जैसा खड़ा हूं, काका! चाहे आसमान क्यों न फट पड़े।' इतना कहकर रामसिंह चला गया।

गांव पर एक नयी मुसीबत आ गई थी। ईरानी जुएवालों ने अपने फड़ जमा लिए थे। ये जुएवाले अगर, घटबोरी, तिमोनी और बाग के आसपास डटे हुए थे। चकरी का जुआ एक रुपये पर दस रुपये का लालच देता था। गांव के लोग जब हफ्तावारी पेमेंट लेकर निकलते तो ये चकरी वाले चिल्ला-चिल्लाकर कहते, 'मामा, आओ! मामा, आओ! एक रुपये के दस रुपये लो। किस्मत आजमाओ।' ईरानी औरतें भी चाकू-छुरे ऊपर करते हुए कहतीं, 'आ जा मामा! आ जा दांव लगा ले। एक रुपये के दस रुपये ले ले। चाकू-छुरे मुफ्त में।' चकरी का जुआ यानी एक विशाल लकड़ी की घड़ीनुमा चकरी, जिसमें एक से नौ तक के अंक रहते हैं। उसके बाद शून्य जिसे वे मिड़ी कहते हैं। यही अंक एक से नौ और शून्य तक तीन-चार बार गोलाई में लिखे रहते हैं। घड़ीनुमा चकरी के बीचों-बीच एक लम्बा कांटा लगा रहता है। चकरी के एक सिरे पर जरा सा अलग हटकर एक कील लगी रहती है। चकरी को उंगली से घुमाया जाता है और कांटा एक जगह जमा रहता है। लोग एक अंक से लगाकर मिड़ी तक दांव लगाते हैं। चकरी कांटे से रुकती है

को चेता देंगे।'

'हां, ठीक है। कुछ गंगू साब के लिए उतर जाएगी, कुछ अपने भी काम आ जाएगी दारी!'

हलकैयां ने धीरे से सुखिया के कंधे पर हाथ रखा। दोनों की आंखें मिलीं और उन्होंने खिलखिलाकर ठहाका लगाया। आग भी चेतने लगी थी—दो-चार घंटे में कड़ियल दारू तैयार हो जाएगी। हवा अपने साथ करील, महुआ और नीम की गंध ला रही थी।

धार में गांगुली साहब के आने की हलचल थी। कहते हैं, वे पाकिस्तान से भागकर आए थे, सब सामान के किसी स्टेशन पर खड़े हुए थे। कुछ सामान पीठ पर लदा हुआ था। एक कैमरामैन ने उनकी फिल्म उतारी। भयानक हालात थे, शरणार्थियों के काफिले-काफिले हिंदुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिंदुस्तान आ-जा रहे थे। गुंडों ने उनके बाप की हत्या कर दी थी। साथ में बूढ़ी मां थीं, जवान बीवी थी। भागने की उस भयंकर त्रासदी में भी उन्हें वह घूमता हुआ कैमरा अच्छा लगा था और जब वे बम्बई के शरणार्थी कैंप से उठाकर एक कमरे वाले मकान में ले जाए गए, तो उन्हें जीवन की ठोस हकीकतों से जूझना पड़ा। उन्होंने पास की लाइब्रेरी में अखबारों के 'चाहिए' कॉलम देखने शुरू किए। शरणार्थियों को तरजीह दी जाती थी। उन्होंने फर्स्टक्लास में एम० एस-सी० किया था, लेकिन उन्होंने पढ़ाई के पेशे के लिए दरख्वास्त नहीं दी। किसी तरह एक कैमरामैन के असिस्टेंट बन गए और फिर 'शास्त्री पब्लिसिटी फिल्म' के लिए फिल्में तैयार करने का काम शुरू कर दिया। वे अपनी ताजा फिल्म में यह बताना चाहते थे कि बीस-सूत्री प्रोग्राम के तहत आदिवासी इलाकों में क्या-क्या हुआ, कितनी खुशहाली आई। पूरी शूटिंग के दौरान गांगुली साहब को कोई तकलीफ नहीं हुई। उन्हें रोजाना आदिवासियों द्वारा बनाई गई दारू मिल जाती, अच्छा खाना मिल जाता। बस एक दिन उसका हीरो उनसे पांच रुपये लेकर दारू पीकर नालंदा से धार चला गया था, उन्हें अपनी शूटिंग ... पड़ी थी। उनके आने से तीन-चार रोज मांडू और

रहे हैं।

रात के बारह बजे थे। अमझेरा से मनावर की ओर जाने वाली सड़क सुनसान पड़ी थी। अमझेरा के पुलिस स्टेशन पर एक संतरी पहरा दे रहा था और दो-तीन वर्दीधारी घूम रहे थे। सामने बत्ती जल रही थी। कुछ घरों में लालटेनें जल रही थे। मन्दिर शामोश-सा खड़ा था। इतवार के मार्केट में सारे शहर के बाबू आदिवासियों को पैसा देने के लिए इसी मन्दिर में अड्डा जमाए रहते और भगवान को हाजिर-नाजिर रखकर ही पैसा दिया जाता। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की बत्तियां भी जल रही थीं।

मनावर से करीब पांच मील भीतर जंगली गांव बोरघना में बड़े-बड़े लट्ठे जल रहे थे। भयानक धुआं था और जंगली पेड़ों की बू-बास थी। 'इधर आ, सुखिया! क्या कर रही है, जल्दी कर—उस फिल्मवाले बाबू के लिए कच्ची उतारनी है' एक बड़े पतीले में भरा हुआ चावल, पीनस, अफीम का डोड़ा और कुछ महुआ चूल्हे पर पक रहा था। काफी तेज हवा चल रही थी। सुखिया का बदन थर-थर कांप रहा था। हलकूंवा ने कहा—'दारी, इतनी हवा में कांप रही है, तू आदिवासी की औलाद नहीं! जानती है आदिवासी औरतें कैसी होती हैं?'

'मैं नहीं जानती रे, तू बता?'

'वह किसी भी जंगल-पहाड़ में बच्चा जन देती है, नाल गाड़ देती है और मोनी इकट्ठा करने के काम में लग जाती है।'

'धत्तेरे साले की!' वह बोली और आग मे फूंक मारने लगी। धुआं उसकी आंखों में भर गया था। वह बार-बार अपने आंचल से आंसू पोंछ रही थी। 'लकड़ियां भी गीली हैं रे हलकू—कुछ नहीं तो उस फिल्मवाले से मिट्टी का तेल ही मंगवा लेता।'

'बिलकुल नहीं, सुखिया! दारू में जरा भी मिट्टी के तेल की बास आई कि गए, साब तो नाराज हो ही जाएगा और फिर हमारी बदनामी भी होगी। आज तो किसी भी तरह सुबह तक निकालते हैं, कल कुछ चिंधियां वगैरह जलाकर आग

को बेचा देंगे।'

'हां, ठीक है। कुछ गंगू साब के लिए उतर जाएगी, कुछ अपने भी काम आ जाएगी दारी!'

हलकैया ने धीरे से सुखिया के कंधे पर हाथ रखा। दोनों की आंखें मिलीं और उन्होंने खिलखिलाकर ठहाका लगाया। आग भी चेतने लगी थी—दो-चार घंटे में कहियल दारू तैयार हो जाएगी। हवा अपने साथ करील, महुआ और नीम की गंध ला रही थी।

धार में गांगुली साहब के आने की हलचल थी। कहते हैं, वे पाकिस्तान से भागकर आए थे, मय सामान के किसी स्टेशन पर खड़े हुए थे। कुछ सामान पीठ पर लदा हुआ था। एक कैमरामैन ने उनकी फिल्म उतारी। भयानक हालात थे, शरणार्थियों के काफिले-काफिले हिंदुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिंदुस्तान आ-जा रहे थे। गुंडों ने उनके बाप की हत्या कर दी थी। साथ में बूढ़ी मां थीं, जवान बीवी थी। भागने की उस भयंकर त्रासदी में भी उन्हें वह घूमता हुआ कैमरा अच्छा लगा था और जब वे बम्बई के शरणार्थी कैम्प से उठाकर एक कमरे वाले मकान में ले जाए गए, तो उन्हें जीवन की ठोस हकीकतों से जूझना पड़ा। उन्होंने पास की लाइब्रेरी में अखबारों के 'चाहिए' कॉलम देखने शुरू किए। शरणार्थियों को तरजीह दी जाती थी। उन्होंने फर्स्टक्लास में एम॰ एस-सी॰ किया था, लेकिन उन्होंने पढ़ाई के पेशे के लिए दरख्वास्त नहीं दी। किसी तरह एक कैमरामैन के असिस्टेंट बन गए और फिर 'शास्त्री पब्लिसिटी फिल्म' के लिए फिल्में तैयार करने का काम शुरू कर दिया। वे अपनी ताजा फिल्म में यह बताना चाहते थे कि बीस-सूत्री प्रोग्राम के तहत आदिवासी इलाकों में क्या-क्या हुआ, कितनी खुशहाली आई। पूरी शूटिंग के दौरान गांगुली साहब को कोई तकलीफ नहीं हुई। उन्हें रोजाना आदिवासियों द्वारा बनाई गई दारू मिल जाती, अच्छा खाना मिल जाता। बस एक दिन उसका हीरो उनसे पांच रुपये लेकर दारू पीकर नालंदा से धार चला गया था, उन्हें अपनी शूटिंग बन्द करनी पड़ी थी। उनके आने से तीन-चार रोज मांडू और

रहे हैं।

रात के बारह बजे थे। अस्पताल के बरामदे की ओर जाने वाली सड़क सुनसान रही थी। अस्पताल के पुलिस स्टेशन पर एक संतरी पहरा दे रहा था और दो-तीन कर्मचारी घूम रहे थे। सामने बत्ती जल रही थी। कुछ घरों में लालटेन जल रहे थे। मन्दिर खामोश-सा खड़ा था। इलाके के मार्केट में माह शहर के बाबू आदिवासियों को पैसा देने के लिए इसी मन्दिर में अड्डा जमाए रहते और पगार की हाजिर-हाजिरी लगाकर ही पैसा दिया जाता। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की बत्तियां भी जल रही थीं।

पगडंडी से करीब पांच सौ मीटर जंगली गांव बोरदना में बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे थे। भयानक धुआं था और जंगली पेड़ों की बू-बास थी। 'इधर आ, सुखिया! क्या कर रही है, जल्दी कर — इस फिल्मवाले बाबू के लिए कच्ची उतारनी है।' एक बड़े पतीले में सड़ा हुआ चावल, पीतम, अफीम का डोडा और कुछ महुआ चूल्हे पर पक रहा था। काफी तेज हवा चल रही थी। सुखिया का बदन थर-थर कांप रहा था। हलकू ने कहा — 'मरी, इतनी हवा में कांप रही है, तू आदिवासी की औलाद नहीं! जानती है आदिवासी औरतें कैसी होती हैं?'

'मैं नहीं जानती रे, तू बता?'

'वह किसी भी जंगल-पहाड़ में बच्चा जन देती है, नाल गाड़ देती है और मोती इकट्ठा करने के काम में लग जाती है।'

'पतेरे साले की!' वह बोली और आग में फूंक मारने लगी। धुआं उसकी आंखों में भर गया था। वह बार-बार अपने आंचल से आंसू पोंछ रही थी। 'लकड़ियां भी गीली हैं रे हलकू — कुछ नहीं तो उस फिल्मवाले से मिट्टी का तेल ही मंगवा लेता।'

'बिलकुल नहीं, सुखिया! दारू में जरा भी मिट्टी के तेल की बास आई कि गए साब तो नाराज हो ही जाएगा और फिर हमारी बदनामी भी होगी। आज तो किसी भी सुबह तक निकालते हैं, कल कुछ चिचियां वगैरह

पड़ती है।

जिला जिन-जिन छोटे कस्बों में बंटा है, उनकी बिलकुल अलग-अलग समस्याएं हैं। जैसे सरदारपुर की सबसे बड़ी समस्या जमीन न होने की है। यदि सरकार को एक थाना भी बनाना है तो भी उन्हें उसके लिए जमीन वहां के प्रसिद्ध लीडर और पुराने वकील गर्ग साहब से लेनी होगी। सरदारपुर पर किसी जमाने में ग्वालियर के महाराजा का कब्जा था और वहां की हर इंच जमीन पर आज गर्ग साहब का हक है। जागीरदार ने यह पूरा इलाका गर्ग साहब के किसी पुरखे को दे दिया था—यहां तक कि मरघट, छोटे-मोटे दफ्तरों और चरागाहों के लिए जमीन भी उनसे पूछकर ही ली गई थी। एक बार उन्होंने एक अफसर से कहा था—'साब, आप जिस जमीन पर पेशाब कर रहे हैं वह भी मेरी है।' सरदारपुर डाकबंगलों के पीछे से बहने वाली नदी के उद्गम पर भी उन्होंने कचहरी में दावा लगा रखा था। बाग की अपनी समस्याएं थीं. वहां का औसत आदमी कर्ज में बुरी तरह डूबा हुआ था। इसमें लगे हुए कुक्षी तहसील की अपनी समस्याएं थीं जिनका निपटारा करने के लिए एक सरकारी हाकिम वहां भेजा गया था। हाकिम ने पहले कुक्षी की नब्ज टटोली और फिर वह उस ऐतिहासिक मीटिंग में शामिल हुआ जहां उसे प्रेमजी घनश्यामदास के आमरण अनशन का मसला सुलझाना था। भूख-हड़ताल ने एक भयंकर शक्ल अख्तियार कर ली थी और शहर में यह प्रसारित कर दिया गया था कि जल्द ही कोई केन्द्रीय मंत्री या मुख्यमंत्री या उनके वजन का कोई मंत्री मौसम्बी का रस पिलाने के लिए आने ही वाला है। जब कोई भी नहीं आया तो लोगों ने कहा कि जिले के बड़े हाकिम खुद आ रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपना छोटा हाकिम मसले को सुलझाने के लिए भेज दिया।

छोटा हुक्काम एक सुलझा हुआ आदमी था। उसका अपना भी इरादा यही था। जब वह रेस्ट हाउस पहुंचा तो काफी अंधेरा हो चुका था। हाथ-मुंह धोकर उसने आराम करना चाहा लेकिन लोगों का आना-जाना लगा रहा। छोटा सरकारी अमला, वाइज्जत शहरी, पोर्टिको के लोग, दुकानदार—सभी

मालवेश में भारी अस्तव्यस्तता थी—लोगों को इन बातों कुछ काम धन्धा मिल गया था। कुछ लोग बड़े-बड़े कमरों और सामान को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने में लगे थे। कुछ भाड़े पर मजदूरी करते और कुछ लोगों को ठेकेदार बना दिया गया था। इसका नतीजा यह हुआ कि जिले के अन्त में आदिवासी किसान को मुकदमों में फँसना, ठगना-खाना सिखाया गया था। पाँच दिन तक गांगुली साहब ने उस इलाके में दुनिया विशेष की ओर चले गए।

इस जिले की अनेक समस्याएँ थीं—गवर्नमेंट के सन् १९३१ के रिकार्ड से पता चला कि यहाँ की कुल आबादी का दो-तिहाई हिस्सा आदिवासियों का है। यहाँ राजपूत और भीलों की मिश्र संतान भिलाला भी है। कुछ ठाकुर और राजपूत भी, जिनके छोटे-छोटे रजवाड़े और महल जहाँ-तहाँ फैले हुए थे। अमझेरा के महाराजा को ब्रिटिश रेजिडेंट ने धोखे से पकड़कर महू में बुलवाया था और वहीं बगावत करने पर उनका सिर कलम कर दिया गया। यहाँ-वहाँ फैले हुए राजाओं को अब भी दरबार कहा जाता है हालाँकि अब दरबारी शान-शौकत का कोई नामोनिशान तक नहीं बचा था। कुछ दरबारों ने सुबह से शाम तक शराब पीकर अपनी जागीरें खतम कर दीं और अब भुखमरी की जिंदगी बिता रहे हैं। कुछ ने इंदौर में अपने बड़े-बड़े बंगले बना लिए हैं और वहाँ, सिनेमा और दीगर कारोबार में अपना पैसा लगा दिया है। एक राजा खुद अपनी बस चलाता है। जो लोग उन्हें नहीं जानते वे 'ड्राइवर साब, जरा गाडी रोकों' कहते हैं, बाकी 'दरबार साब, जरा गाड़ी रोकिए' कहते हैं। वे अब भी छुट्टियों के रोज अपने पुराने बंगले में जाकर अपनी शाही जिंदगी जीते हैं। धारा के राजा अपनी सादगी भरी जिंदगी बिताते हैं। उनके कुछ भाई-बंद बम्बई और दीगर जगहों में व्यापार-धंधे में लग गए हैं। इनके अनेक महल भूतहा मकानों की तरह यहाँ-वहाँ फैले हुए हैं—कुछ में मुर्गियाँ पली हैं और कुछ में पुरानी मूर्तियाँ और बहुत-सा सामान पड़ा है। कभी-कभी कुछ चोर इन महलों में घुसकर मुर्गियाँ चुरा लेते हैं और पुलिस को तहकीकात करनी

हूँ-हूँ करते हुए कहा था।

'ना-ना, साहब को कोई आपत्ति नहीं है। अब तक तहसील के काम निपट जाएंगे। ठीक है न, साहब?' तहसीलदार ने साहब की ओर देखते हुए कहा।

'हां-हां, मुझे कोई एतराज नहीं।' साहब ने हंसते हुए कहा, 'अब आप लोग जाइए और तैयारी कीजिए।'

सभी लोग हाथ जोड़कर चले गए।

शहर में जोरदार चहल-पहल थी। ठीक तीन बजे मीटिंग शुरू हो गई। धर्मशाला की पहली मंजिल पर बिछायत की गई थी। कुछ तकियागोड़ भी रख दिए गए थे। उस कमरे में कोई दूसरा न आने पाए, इसकी चौकसी के दो स्वयंसेवकों को सीढ़ी के ऊपर तैनात किया गया था। उनके पास काफी शक्ति थी। इज्जतदार से इज्जतदार आदमी को भी वे दोनों रोक सकते थे। इन स्वयंस्फूर्त ताकत से उन स्वयंसेवकों का चेहरा दमक रहा था। हुक्काम के कहने पर एक कार्यकर्ता ने नगरपालिका-अध्यक्ष के खिलाफ तैयार की गई चार्ज-शीट को पढ़ना शुरू किया। बला का अनुशासन था। शहर के सारे लोहा-व्यापारी और दीगर इज्जतदार शहरियों के चेहरों पर भी भारी गंभीरता थी। हाकिम भी गंभीर था। सारे आरोप भ्रष्टाचार से ताल्लुक रखते थे। एक आरोप यह था कि नगरपालिका-अध्यक्ष ने चुंगी नाके पर जिंदा बिजली का तार लगा रखा है, जिसके कारण व्यापारी बाहर से सामान ट्रक से लाने में घबराते हैं, जिससे शहर में चीजों के दाम अकारण ही बढ़ते जा रहे हैं। दूसरा खास आरोप यह था कि अध्यक्ष ने नगरपालिका के फंड से एक उल्लू खरीदा था और उसे नगरपालिका के दफ्तर के सामने पिंजरे में लटका दिया। पूछने पर वह कहता है कि वह इस शहर के लोगों को यह बताना चाहता है कि शहर के सारे लोग उल्लू हैं। लोगों का कहना था कि यदि वे अपने पैसे से उल्लू खरीदते तो उन्हें कोई एतराज नहीं होता। इतने में विरोधी नगर-पार्षद ने यह खबर भी दी कि उस उल्लू को जान-बूझकर मार डाला गया और उसकी हड्डियां पंढरीनाथ अपने घर ले गए और आंगन में गाड़ दिया, ताकि शहर की

रहे थे और जा रहे थे। शहर के वोहरा दूकानदार, नगर-
लिका अध्यक्ष पंढरीनाथ, कांग्रेस और दीगर पार्टी के ब्लॉक
यक्ष पत्रकार संघ के अध्यक्ष और बहुत सारे ऐसे लोग
न्हें नगण्य नहीं माना जा सकता था, रेस्ट-हाउस का चक्कर
गा चुके थे। शहर में अच्छी-खासी सनसनी थी। लोग हरकत
आ गए थे। मोटर-साइकिलें घूमने लगी थीं। बैंड-बाजेवालों
भी मामला सुलझ जाने की खबर लग चुकी थी। भूख-हड़-
ल टूटने पर जुलूस निकालने की संभावना थी, लिहाजा उन्हों-
अपने-अपने दाम हवा में उछालने शुरू कर दिए। रणगाडी
सजाया जा रहा था। उसी में सिनेमा के एक्टरों के पुतले
र रामलीला के राम लक्ष्मण चला करते थे। पंढरीनाथ ने
किम को एक ओर बुलाकर लगभग फुसफुसाते हुए कहा था
'सब, यह सब देश के खिलाफ षड्यंत्र है। साला वो प्रेमजी
त को बारा बजे धड़ल्ले से गुलाबजामुन और तरावट की
बें खा लेता है और सुबह अनशन। आप उसका चेहरा देखि-
ए, दमक रहा है।'

"आप कैसे जानते हैं?' हाकिम ने इस सवाल का जवाब
हुए पंढरीनाथ ने कहा था, 'सर मैं देश का सच्चा सेवक हूं।
बुरी बात का भंडाफोड़ करता हूं। यह मुंजी जहां भूख-
ताल कर रहा है, उसके ऊपर राष्ट्रगायक श्यामलाल मिलते
ऊपर एक जगह फर्श का कोना टूटा हुआ है। वहां से मैंने
झांककर देखा है।'

जैसे-तैसे पंढरीनाथ विदा हुआ तो उनके खिलाफ काम
ने वाला गुट भी आ गया। उन्होंने भी अपनी बातें हाकिम
सामने रखीं। एक बुजुर्ग ने भी उन्हें थैली पेश करते हुए कहा,
, पंढरीनाथ गुप्ता के खिलाफ एक सौ बीस आरोप हैं।
की आप जांच कर लें, तभी यह धर्म का उपवास तोड़ा जा
ता है।'

'ठीक है, ठीक है।' हाकिम बोला था, 'आप लोग कितने
मीटिंग बुला रहे हैं?'

'सर, मीटिंग तीन बजे चोखवाली धर्मशाला में रखी गई
उस वक्त वोहरा लोगों को भी अपनी दुकान से छुट्टी मिल
गी। आपको कोई कष्ट तो नहीं है?' एक-दूसरे बुजुर्ग ने

हुए। व्यापारियों में गहरा संतोष था। रथपाड़े, बैंड-बाजे, डार-पून का इन्तजाम हुआ। तीन बजे एक विशाल जुलूस निकलने वाला था। उसी की तैयारी में सब लोग जुटे हुए थे। स्वयं-सेवकों में बड़ा उत्साह था। जुलूस बड़ी धूमधाम से निकला। हर गली-कूचे में 'प्रेमजी घनश्यामजी जिन्दाबाद', 'पंढरीनाथ हाय-हाय', 'नगरपालिका भंग हो', 'ज़ोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है', 'पंढरीनाथ की तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी' के नारे आसमान में गूंज रहे थे। जगह-जगह पर रथपाड़े को रोककर छज्जों पर से प्रेमजी पर फूल बरसाए जा रहे थे। चौराहे पर उनका स्वागत कलश ली हुई लड़कियों ने आरती उतारकर किया। तोरणद्वार पर बैनर लगा हुआ था —'राष्ट्रसेवक प्रेमजी घनश्यामजी जिन्दाबाद'। रथपाड़े पर एक सुशोभित मंच भी बनाया गया था, जिसकी सफेद झक चादर पर प्रेमजी को बिठाया गया था। उनके आस-पास नगर-पालिका की विरोधी बेंच के सदस्य, कुछ उभरते हुए नेता और शहर के कुछ प्रतिष्ठित नागरिक बैठे हुए थे। करीब-करीब सभी प्रतिष्ठित लोगों को रथपाड़े पर बैठने का सौभाग्य मिला था। जैसे ही चौराहे पर रथपाड़ा रुका तो प्रेमजी को रथपाड़े से नीचे उतरने का आग्रह किया गया। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी बंगाली कुर्ते और पाजामे में वे दिव्य दिखाई दे रहे थे। माथे पर बड़ा-सा तिलक लगा हुआ था। प्रेमजी धीरे-धीरे रथपाड़े से उतरे। लड़कियों के सिर पर कलश रखे हुए थे। उन्होंने उनकी आरती निकाली। 'जीत हुई है जयनायक की, गये विरोधी हार' का गाना हारमोनियम पर बज रहा था। उनके माथे पर बड़ा-सा तिलक लगा दिया गया। उन्होंने गर्दन नीचे झुकाकर माला पहनी। उनसे बोलने का आग्रह किया गया तो उनके एक सहयोगी ने कहा, 'भाइयो, पहले जुलूस शहर से गुज़रेगा और फिर म्युनिसिपल बगीचे के सामने वाले मैदान में आमसभा होगी। वहीं आपको शहर के गणमान्य नेता भाषण और प्रेमजी आशीर्वाद देंगे।'

जुलूस के गुजरने में तीन घंटे लगे। मैदान की आम सभा में चारों ओर भोंपू लगे हुए थे। चारों ओर प्रेमजी की जय-जयकार के नारे थे। वक्ताओं ने पुरअसर शब्दों में उन कारणों

सारी बस्ती इकट्ठा होकर उनके पास पहुँच जाए और माँग
करके मनवा लें जाएं। इस से अखबारनवीसों द्वारा भी
बयानबाजी और सांस्कृतिक प्रकार समारोह होते हैं, उनमें मंत्र
बनाने जिम्मे की उनके गर्मियों लगाने का ठेका पंडित...
की शक्ल ही गाने-लिखने के कारीगरों को देते हैं। अन्य आरोप
भी कुछ इसी तरह के थे। अखबारनवीस इसकी ताईद कर रहे
थे और उसे गंभीर समाचार बनाते थे। एक कार्यकर्ता बीच-
बीच में उठकर कहता था, 'सर, आपसे निवेदन है कि
इसका बन्द-बन्द कर दीजिए, ताकि ये मंत्री घनश्यामदास
को मौत के मुंह से बचाया जा सके। वे काफी कमजोर हो चुके
हैं।' कुछ ने साहब से हाथ जोड़कर [illegible] न जाकर मंत्री को
मोसम्मी का रस पिलाने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा
कि [illegible] के आने से उन लोगों में आशा जाग
गई है कि उन्हें न्याय मिलेगा, अन्याय का नाश होगा। एक
अखबारी कवि ने तो यह भी कहा कि बस, अब काला अंधेरा
जाएगा और नई सुबह की नई रोशनी आने ही वाली है।

हुक्काम ने सारी बातें बड़ी सादगी से सुनीं। बहुत सोच-
विचार के बाद उन्होंने कहा, 'भाइयो, मैंने आपकी सारी तक-
लीफें गौर से सुनी हैं। मैं आपको आश्वासन देता हूं कि मैं
सारी शिकायतों की जांच करूंगा और दोषी व्यक्ति को दंड मिलेगा।'

लोगों ने हुक्काम की जय-जयकार की और उनसे चलकर
मंत्री को मोसम्मी का रस पिलाने का आग्रह किया, 'सर,
हम आपके बहुत एहसानमंद होंगे।' एक बुजुर्ग अखबारी ने
कहा।

'ठीक है। लेकिन मैं वहां जा नहीं सकता। आप लोगों में
जो भी जईफ आदमी हो वह जाकर उन्हें मोसम्मी का रस
पिला दे। मुझे भी उनकी फिक्र लगी है। और हां, तहसीलदार
साहब, जरा आप पावर-हाउस जाकर भूंगी नोके पर लगे
बिजली के करन्ट को निकाल दें।"

वहां उपस्थित सभी लोगों ने जोर से तालियां बजायी और
हुक्काम की जय-जयकार की।

चाय पीकर सभी अपने-अपने मुकाम की ओर रवाना

हुए। व्यापारियों में गहरा संतोष था। रणगाड़े, बैंड-बाजे, हार-फूल का इन्तजाम हुआ। तीन बजे एक विशाल जुलूस निकलने वाला था। उसी की तैयारी में सब लोग जुटे हुए थे। स्वयंसेवकों में बड़ा उत्साह था। जुलूस बड़ी धूमधाम से निकला। हर गली-कूचे में 'प्रेमजी घनश्यामजी जिन्दाबाद', 'पंढरीनाथ हाय-हाय', 'नगरपालिका भंग हो', 'जोर-जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है', 'पंढरीनाथ की तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी' के नारे आसमान में गूंज रहे थे। जगह-जगह पर रणगाड़े को रोककर छज्जों पर से प्रेमजी पर फूल बरसाए जा रहे थे। चौराहे पर उनका स्वागत कलश ली हुई लड़कियों ने आरती उतारकर किया। तोरणद्वार पर बैनर लगा हुआ था —'राष्ट्रसेवक प्रेमजी घनश्यामजी जिन्दाबाद'। रणगाड़े पर एक सुशोभित मंच भी बनाया गया था, जिसकी सफेद बुर्राक चादर पर प्रेमजी को बिठाया गया था। उनके आस-पास नगरपालिका की विरोधी बेंच के सदस्य, कुछ उभरते हुए नेता और शहर के कुछ प्रतिष्ठित नागरिक बैठे हुए थे। करीब-करीब सभी प्रतिष्ठित लोगों को रणगाड़े पर बैठने का सौभाग्य मिला था। जैसे ही चौराहे पर रणगाड़ा रुका तो प्रेमजी को रणगाड़े से नीचे उतरने का आग्रह किया गया। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी। बगाली कुर्ते और पाजामे में वे दिव्य दिखाई दे रहे थे। माथे पर बड़ा-सा तिलक लगा हुआ था। प्रेमजी धीरे-धीरे रणगाड़े से उतरे। लड़कियों के सिर पर कलश रखे हुए थे। उन्होंने उनकी आरती निकाली। 'जीत हुई है जयनायक की, गये विरोधी हार' का गाना हारमोनियम पर बज रहा था। उनके माथे पर बड़ा-सा तिलक लगा दिया गया। उन्होंने गर्दन नीचे झुकाकर माला पहनी। उनसे बोलने का आग्रह किया गया तो उनके एक सहयोगी ने कहा, 'भाइयो, पहले जुलूस शहर से गुजरेगा और फिर म्युनिसिपल बुर्जी के सामने वाले मैदान में आमसभा होगी। वहीं आपको शहर के गणमान्य नेता भाषण और प्रेमजी आशीर्वाद देंगे।'

जुलूस के गुजरने में तीन घंटे लगे। मैदान की आम सभा में चारों ओर भोंपू लगे हुए थे। चारों ओर प्रेमजी की जय-जयकार के नारे थे। वक्ताओं ने पुरअसर शब्दों में उन कारणों

की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया जिसके कारण प्रेमजी जैसे महान नेता को भूख हड़ताल पर बैठना पड़ा। वक्ताओं ने कहा कि यदि पंढरीनाथजी अपने पैसों से उल्लू खरीदते तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन यह उल्लू म्युनिसिपैल्टी के पैसे से खरीदा गया यह एक घोर आपत्तिजनक बात थी। प्रेमजी ने अपने ओजस्वी भाषण में हाथ जोड़ते हुए कहा कि यह मेरी नहीं बल्कि जनता की जीत है। यह ओजस्वी सभा करीब तीन घंटे तक चली और अन्त में 'प्रेमजी जिन्दाबाद और पंढरीनाथ हाय-हाय' 'उल्लू प्रकरण की पूर्ण जाँच हो' के नारे के साथ खत्म हुई।

चारों तरफ भीड़-ही-भीड़ थी — सारा गाँव उमड़ पड़ा था। गली-कूचे — सभी ओर भीड़ दिखाई दे रही थी। पान के ठेलेवाले और चाय-नाश्ते वालों की आमदनी एकाएक बढ़ गई थी। पंढरीनाथ के विरोधियों का कहना था कि उनका पक्ष सचाई का था, इसलिए लोगों ने इतने उत्साह से उनका स्वागत किया।

पंढरीनाथ के समर्थकों का कहना था कि यह सारा स्टंट है, तमाशा है। चूंकि यहाँ बहुत दिनों से कोई तमाशा या नौटंकी-वाला नहीं आया था, इसलिए इतनी भीड़-भाड़ दिखाई दी। उनका यह आरोप भी था कि भीड़ बढ़ाने के लिए लोगों को गाँव-गाँव से ट्रकों पर बिठाकर लाया गया है। लोगों को कुदी में कुछ नमक-तेल वगैरह की खरीद करनी थी, इसलिए भी लोग आ गए थे और तमाशा देखकर चले गए। पंढरीनाथ ने रेस्ट-हाउस में कहा था — 'यह सब देशद्रोह है। पूंजीवादियों की चाल है। मैं इसे ज्यादा दिनों तक चलने नहीं दूंगा।' उन्होंने नगरपालिका मैन्युअल की एकाध धारा का हवाला देते हुए कहा था, 'इस एक्शन के तहत मुझे पचास रुपये तक की रकम खर्च करने का पूरा हक है। इस रकम से उल्लू खरीदूं या आलू, इससे लोगों को कुछ भी लेना-देना नहीं है।'

करीब पंद्रह दिनों तक शहर में बड़ी गहमागहमी रही। लोगों ने दावे के साथ कहा कि प्रेमजी घनश्यामजी का वजन नापा जाए, सचाई अपने आप सामने आ जाएगी।

कस्बे का प्रेस खूब जोरों से प्रेमजी के भव्य स्वागत-सत्कार

क समाचार छप रहा था। कुछ हेडिंग इस प्रकार थे—'कुर्की में भयंकर भ्रष्टाचार का भंडाफोड़,' 'उल्लू प्रकरण रंग लाया,' 'नगरपालिका अध्यक्ष की तानाशाही और मनमानी नहीं चलेगी,' 'प्रेमजी का अपूर्व और ऐतिहासिक स्वागत'।

प्रेमजी को मोसम्बी का रस किसने पिलाया, इसके बारे में अखबारों में अनेक खबरें छप रही थीं। कुछ अखबारवालों ने कहा था—'कलेक्टर साहब ने खुद मोसम्बी का रस अपने हाथों से दिया।' कुछ ने कहा, 'एस० डी० ओ० साहब ने पहले तो आनाकानी की, फिर मिनिस्टर साहब ने मोसम्बी का रस पिलाया।' कुछ ने कहा, 'स्वयं मिनिस्टर साहब ऐन मौके पर मोसम्बी का रस पिलाने आए थे।' जिला मुख्यालय में यह खबर छापी गई कि मोसम्बी का रस एक थर्मस में स्वयं मुख्यमंत्रीजी ने हेलिकॉप्टर से भेजा था। बहरहाल इन तमाम चीजों पर काफी दिनों तक बहस-मुबाहिसा चलता रहा।

रामसिंह भी उस दिन आया था। वह प्रेमजी से मिला था और उनसे प्रभावित हुआ। इसके बाद वह पंढरीनाथजी से मिला। दोनों ने उसे निःस्वार्थ ढंग से राष्ट्रसेवा करने की सलाह दी।

'इसमें कांटे-ही-कांटे हैं, रामसिंह!' प्रेमजी बोले थे, 'अभी-अभी मुझे दस दिनों तक जुल्म-ज्यादती के खिलाफ भूख-हड़ताल करनी पड़ी। बदन सूखकर कांटा हो गया, देख ही रहे हो। देशद्रोहियों से मुकाबला करना पड़ता है। आगे-पीछे, दाएं-बाएं सांप-ही-सांप लहरा रहे हैं। इधर से बचो तो साला उधर काटेगा। सावधान रहना, होशियार रहना।'

और पंढरीनाथ ने कहा था, 'रामसिंह, साली यह जनता बहुत होशियार है। राष्ट्रद्रोही जो कहते हैं वह भी सुनती है और हम जो कहते हैं वह भी सुनती है। दोनों के भाषणों में तालियां बजाती है। पता ही नहीं चलता कि हम सच बोल रहे हैं या कि हमारे दुश्मन। सब साले देशद्रोही हैं। यदि राष्ट्र की सेवा करना चाहते हो तो सिर पर कफन बांधकर चलो, जैसे साला बयालीस के मूवमेंट में हुआ था। साला अंग्रेज भी कांप गया था। भाग गया ...' और उन्होंने अपनी दोनों मुट्ठियां भींच ली थीं। 'उल्लू...उल्लू...उल्लू...' उन्होंने तीन बार कहा।

रामसिंह को कुछ भी नजर में नहीं आता और वह दूसरे दिन सुबह ही मालदह चला जाता था।

बाघनी नदी में नहाती हुई अमनी को टहोका लगाती हुई गुनिया ने कहा, 'क्यों री, इतना बड़ा जवान बेटा घर पर कब तक छिपाये रहेगी?'

'गुनिया तू तो जानती है रामसिंह को।' हंसते हुए अमनी बोली, 'दिन-रात उसे अपनी बिरादरी की पड़ी रहती है। जरा कुछ हो जाए, वह दौड़ा-भागा चला जाता है। कहीं भी फिकर न खाने का होश।'

'तू भी बावरी हो गई, अमनी! अपना जमाना भूल गई!'

'चल, हट।' कहती हुई अमनी ने उसे गुदगुदा दिया और पानी को छप-छप करने लगी।

वे दोनों मछलियों की तरह तैर रही थीं। हांफने का नाम ही नहीं ले रही थीं। अंग-प्रत्यंगों में गजब की ताकत थी। पुल से शहरी बाबुओं की जीपें और ट्रक गुजर रहे थे, वे घूर-घूरकर उन लोगों को देख रहे थे। 'अरे, क्या देख रहे हो, बाबू!' अमनी चिल्लाई और उसने हाथ से पानी उछाल दिया। लोगों में से कुछ तालाब के मंदिर वाले किनारे पर बैठीं चिकने पत्थरों से अपने पैरों को घिस रही थीं। अमनी और गुनिया बाहर निकलकर अपनी साड़ियां सुखाने लगीं।

गुनिया ने फिर कहा, 'अमनी, देख पछताएगी। अरी पगली, जैसे इस बदन को रोटी की जरूरत होती है, रहने के लिए झोंपड़े की जरूरत होती है, वैसे ही औरत की जरूरत भी होती है। बोल, है कि नहीं?'

'यह तो ठीक है, बहना! तुझे कोई अच्छी-सी लड़की दिखाई दे तो मुझे बता। अपने टोले-पुरवा की हो या पास-पड़ोस के टोले की। मुझे चलेगा। लेकिन कानी-भैंगी न हो। वह ऐसी होनी चाहिए कि लोग देखें तो देखते ही रह जाएं।'

'मैं देखूंगी। कुछ तो मेरी नजरों में हैं। भीमा के यहां मुर्गी-बकरा-दारू सब है। लौंडिया बकरी चराने से लेकर, कुल्हाड़ी लेकर जंगल भी चली जाती है। खुद बड़े-से-बड़े पेड़ को

वार देता है। लेकिन बहना, मैं चाहती हूं कि तुमसे अच्छा कोई न हो ?'

'अरी, जा ! गंदा मजाक करती है साली। घाट-घाट का पानी पिया है न ! तभी ऐसी बात करती है।'

'और तू ?' गुनिया ने उसे गुदगुदाते हुए कहा।

दोनों खिलखिलाकर हंसने लगीं। उनकी साड़ियां भी सूख चुकी थीं। जंगल के पार से सूरज की किरणें छन-छनकर आ रही थीं। किरणों की परछाइं पानी पर पड रही थी। नदी किनारे पड़े हुए पत्थर चमक रहे थे। कुछ लड़के भी आकर पुल पर से नदी में छलांग लगा रहे थे। कुछ भैंसों और गायों को नहला रहे थे। जंगल मे बकरियां मिमिया रही थीं। अमली, गुनिया और कुछ उनकी हमजोलियां गीत गुनगुनाते हुए सड़क की ओर बढ़ गईं। बाघनी से उनके झोंपड़े काफी दूरी पर थे। नदी के पास ही तेल-मिल थी और आधी फर्लांग की दूरी पर ही बाग तहसील का हेडक्वार्टर था। यहां साहूकारों के अच्छे पक्के मकान थे। वे कपास, गुल्ली, महुआ, शहद और दीगर जंगली चीजों के लेन-देन का व्यापार करते थे। दुकानों में आदिवासियों को लगने वाले फेंटे, मोटे कपड़े से लेकर गिलट के गहने तक रखे हुए थे। वहां बैंक की शाखाएं भी थीं।

सड़क पर अमली की नजर गंदा कपड़ा बिछाए, कुछ बोरियां और तराजू लगाए लाला पर पड़ी। उसने गुनिया से कहा, 'क्यों री गुनिया, आज बाजार-हाट का दिन है शायद ! चल, घूम आएं।' गुनिया तैयार हो गई।

दोनों सहेलियां बाजार की ओर बढ़ गईं। बाजार में बहुत भीड़ थी। गांव के लोगों ने भी ककड़ी, टमाटर और छोटे-छोटे कुम्हड़ों को कपड़ा बिछाकर रख दिया था। खूब धक्कम-धक्का हो रहा था। वे दोनों सहेलियां भी खूब जोरों से बाजार में घूम रही थीं। कक्का से कुछ पैसे भी मिल गए थे, जिससे उन दोनों ने चरखी का झूला झूल लिया और शाम होने के पहले अपने झोपड़े की ओर जाने के लिए रवाना हो गईं। लाला-सूली के लौंडों की छेड़खानी भी उन्हें अच्छी लगी। जब वे बाघनी नदी के पुल से अपने गांव की पगडंडी की ओर बढ़ने लगीं, तभी कुक्षी की ओर जाती हुई गाड़ी ने उन पर गड्ढे में जमा ढेर सारा

पानी उछाला। लहरों की हलचल और, तेज मुदा निकल। बहती अंजोरे बावनी के पानी से उन लम्हों को धुंधला और अपने घर की ओर बढ़ गई।

घर पहुँचने में उसे कुछ देर हो गई थी। मद्दूसिंह ने दीया-बत्ती कर दी थी। रामसिंह घर पर नहीं था।

'क्यों, बहुत देर कर दी ? क्या बावनी में बहुत पानी था ? नदी ने निगल लिया था क्या ?'

'हां रे, मेरे राजा !' कहती हुई उसने अपनी बाँहें मद्दूसिंह के गले में डालते हुए कहा, 'नदी में इतना पानी था कि मैंने हाथ जोड़कर विनती की—मुझे जनम-जनम तक मद्दूसिंह जैसा खसम दो।'

'चल-चल, बूढ़ी कहीं की ! तेरे पुराने खसम कहाँ गए, उनकी याद नहीं आती क्या ?'

'आती है रे, लेकिन वे सब भूखे थे। सच कहती है जो मैं आज अपने सामने देख रही हूं। चल, आ जा, मुझे अपनी गोद में ले ले।'

'पगली कहीं की ! तू तो जानती है कि यह दरवाजा भी धक्का पर दगा दे जाता है। बेशरम के ठूंठों का बना है। रामसिंह आएगा तो क्या कहेगा।'

'अच्छी याद दिलाई तूने, रामसिंह के बारे में कुछ सोचा है ? गबरू जवान हो गया है। गांव की औरतों की नजर में चढ़ा हुआ है। आज ही नहाते वक्त मुनिया कह रही थी।'

'भाई रामसिंह के बारे में तू जान। तू जिससे कहेगी, मैं उसका लगन कर दूंगा। अलग झोंपड़ी भी बना दूंगा।'

'वह तो सब ठीक है, रे ! लेकिन तू उसे राजी तो कर ले हमेशा जनता की सेवा की बात करता है। उसे संभालना उसके बुढ़ाई के बस की बात भी नहीं।'

'मुश्किल-वुश्किल कुछ नहीं। हमारे मां-बाप भी यहीं सोचते तो हम लोग भी इस दुनिया में नहीं आते। तुम लौंडिया ढूंढ लो और उसे राजी कर लो।'

इतने में ही झोंपड़ी के सामने बंधा हुआ कुत्ता भौंकने लग था। 'च च च च' की आवाज आ रही थी। कोई बाहर

आवाज दे रहा था, 'रामसिंह भैया, रामसिंह भैया !'

भद्रसिंह ने दरवाजा खोला। देखा—एक फटेहाल दुबला-पतला मरियल-सा आदमी। वह बुरी तरह हांफ रहा था। लगता था कहीं से सीधा जंगल-जंगल भागा चला आया है। हांफते-हांफते ही वह बोला, "रामसिंह भैया, रामसिंह भैया !"

"क्यों भाई, तू इतना घबराया हुआ क्यों है ?" भद्रसिंह ने उससे पूछा और अमली को पानी लाने के लिए कहा। वह घटाघट दो लोटे पानी पी गया। थोड़ा-सा पानी उसने मुंह के ऊपर भी छिड़क लिया था।

'अब तू जरा इस पत्थर पर बैठ जा। रामसिंह खेत पर गया है। थोड़ी ही देर में आता होगा।'

रामसिंह के आते ही सब लोगों ने खाना खाया। मेहमान को भी खाना खिलाया गया।

'अब बोल, भाई !' रामसिंह ने पूछा।

उसने अपनी दास्तान सुनाई—

'भैया, मैंने सुना कि गोरमेंट ने हम बधुआ लोगों को मुक्त कर दिया है। मालिक से मैंने कहा—अब मेरा क्या होगा, मालिक ? तो उन्होंने कहा—भूखा मरना पड़ेगा। यदि तू मेरे यहां से जाना चाहता है तो जा। बता, क्या तेरे बाप ने मेरे दादा से पचास रुपये का कर्ज नहीं लिया था ? क्या वह वापस हुआ है ? तू उस कर्ज के बदले मेरे यहां आठ बरस की उमर से गिरवी पड़ा है। मेरे जानवर भी तुझे पहचानते हैं। क्या तुझे उन जानवरों को अकेला छोड़कर चले जाने का दुःख नहीं होगा ? तूने मेरा नमक खाया है। यदि तू भाग गया तो कुआर-माता का श्राप तुझ पर पड़ेगा और तेरी सारी संतान मर जाएगी। नरक में क्या-क्या होता है, यह तुझे नहीं मालूम ? मैं बताता हूं—वहां तवे को खूब गरम किया जाता है और फिर पुट्ठे में चिपका दिया जाता है। सांप का जहर मुंह में डाल दिया जाता है। इतना ही नहीं, बल्कि शैतान का पेशाब भी मुंह में डाला जाता है। खौलते हुए तेलवाले कड़ाह में फेंक दिया जाता है। नमकहरामी की सजा अब तेरी समझ में आ गई कि नहीं ?

'यह बातें सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने मुक्त होने

की बात पर सोचना बन्द कर दिया। लेकिन क्या बताऊं भैया, मालिक ने समझा कि मुझे बाहर की हवा लग गई है। उन्होंने उन लोगों का पता लगाना शुरू कर दिया जिनके साथ मेरी उठक-बैठक है। उन लड़कों का भी पता लगाया जो हम जैसे लोगों को अखबार बांचकर सुनाते हैं। जानो मेरे पास बीड़ी पीने के लिए आता था। उसका आना-जाना बन्द कर दिया गया। अब तुम्हीं बताओ भैया, यदि मैं किसी के साथ बोलना-बतियाना भी बन्द कर दूं तो जिंदा कैसे रहूं? इसके बाद उन्होंने मेरा काम बढ़ा दिया। मुझे मुंह-अन्धेरे उठाकर भैंस की सफाई करनी पड़ती है, चारा-भूसा जुटाना पड़ता है। इसके बाद बीवीजी और बच्चों के कपड़े धोने पड़ते थे, खेत पर जाना होता है। फिर आकर मैं घर के काम में जुट जाता हूं और मुझे मालिक के बदन पर मालिश कर-कुराकर रात को ग्यारह बजे सोने को मिलता है। रात-बेरात भी मालिक मुझे भैंस को देखने या दूसरे किसी काम के लिए जगा देते हैं। उनके घर का हर आदमी मुझे जानवर से ज्यादा बदत्तर समझता है और खाने के लिए वही रूखी-सूखी रोटी, कभी प्याज-मिर्चों के साथ, तो कभी बिलकुल रूखी। जब मैं बीमार होता हूं तो मुझ पर उतना भी खर्चा नहीं किया जाता जितना वे अपने जानवरों पर खर्च करते हैं।

'कल रात जब मैं इन तमाम बातों के बारे सोचने लगा तो मुझे एकाएक महसूस हुआ कि इससे तो नर्क में जाकर खौलती हुई कड़ाही में कूद पड़ना ज्यादा अच्छा है। नरक में इससे ज्यादा तकलीफ तो नहीं होगी। मेरी तो हिम्मत जाग गई और मैं जंगल के बहाने निकला और भागता ही गया, भागता ही गया सुबह से भाग रहा हूं—काटे, झाड़-झंखाड़, नदी-नाले सबको पार करता आ रहा हूं। कहीं कोई मिल जाता तो चट्टान के पीछे छिपकर बैठ जाता। जैसे ही वह वहां से रवाना होता, मैं एकदम बाहर निकलता। और इस तरह मैंने इतना बड़ा फासला तय किया। अब तुम्हारे आसरे के लिए आया हूं। भैया, अब तुम्हीं मेरे मालिक हो, जैसा चाहो वैसा ...।'

[illegible] का मन कड़ुआहट से भर गया। उसे वह दिन

याद आया जब उसकी काकी की इज्जत पर हमला किया गया था और वह पुलिसवालों को मारकर भागता चला गया था। कमजोर आदमी का सहारा शायद पेड़-पौधे भी नहीं होते। कहीं पुलिस मारती है, कहीं मालिक, कहीं सूदखोर, कहीं बड़ा किसान। आखिर हम लोग कहां जाएं? थोड़ी देर तक वह खामोश रहा, उसके बाद बोला, 'तूने अच्छा किया, कबरू! उस स्वर्ग से तेरा भाग आना ही ठीक होगा। अब जो होगा, देख लेंगे। तू आराम से सो जा। यहीं काम-धंधा खोज लेना।'

लेकिन कबरू को चैन नहीं था। उसकी पीठ पर कमीज के नाम पर एक फटी हुई चिन्दी थी और नीचे मालिक की दी हुई एक फटी हुई चड्डी। रामसिंह ने देखा, वह अब भी बुरी तरह कांप रहा है।

'तू तो कांप रहा है कबरू, क्यों? तेरा मालिक तो यहां से बहुत दूर रहता है। अब भी डर लग रहा है क्या?'

'हां, मालिक!' उसने रामसिंह के पैर पकड़ते हुए कहा।

'क्यों? डर को अपने मन से निकाल दे। एक हिम्मतवर दुबले-पतले आदमी में यदि दम हो तो वह बड़े-से-बड़े पहलवान को भी चित कर सकता है।'

'वह तो ठीक है, लेकिन...'

'लेकिन क्या?'

'वह बहुत जालिम है। एक बार मैं गाय को सानी-पानी दे रहा था। चोकर में एकाध कीड़ा गाय के पेट में चला गया तो उसका पेट फूल गया और उसकी पेशाब-टट्टी बन्द हो गई। उसे बैठने में तकलीफ होने लगी। मालिक परेशान थे, मैंने उनसे मिट्टी का तेल मांगा—मिट्टी का तेल गाय के नथुने में डालने से उसका गोबर-पानी शुरू हो जाता। मालिक ने सामने खूंटी पर टंगे हंटर को निकालकर मेरी धुनाई करनी शुरू कर दी—साले, हरामजादे! चोकर भी छानना नहीं होता। हराम का खा-खाकर मुस्टंडा बनता जा रहा है। गाय मर गई तो यह सब तेरी तनख्वाह से वसूल होगा। तेरा खाना-पीना साल-भर बन्द।'

कबरू के पीठ पर हरे निशान के दाग पड़े हुए थे। 'यदि वह यहां आ गया तो उसी हंटर से मेरी खाल खींच लेगा। मुझे बचाओ!'

'मैंने कहा न, तू आराम से सो जा। यदि वह यहां आ गया तो उसकी खाल उधेड़कर उसमें भूसा भर देंगे,' रामसिंह ने कहा।

कचरू अब भी कांप रहा था। अम्मा ने उसे एक चटाई दे दी थी, जिसे लेकर वह एक कोने में पड़ गया। बाहर काफी तेज हवाएं चल रही थीं।

रामसिंह को पहले तो नींद सता रही थी, लेकिन कचरू की रामकथा ने उसके मन में कहीं बहुत गहरा घाव कर दिया था। वह सोच रहा था—कचरू ने केरोसिन मांगकर कोई बुरा काम तो नहीं किया—सचमुच उससे गाय की तबीयत ठीक हो जाती। लेकिन मालिक ने उस पर कोड़े बरसाए—उस जालिम ने कितनी बार कचरू की पिटाई की होगी। जाने कितने कचरू आज भी आजाद हिन्दुस्तान में अपनी पीठ छिलवा रहे हैं। गांधी बाबा, तुम कहां हो ? गांधी बाबा, क्या ये अस्पताल, थाने, इजलास और कचहरियां हमें राहत पहुंचाने के लिए न हैं ? उसे भी तो बरसों भागना पड़ा था—जंगल-जंगल, डग डगर। अभी उस दिन बाबूसिंह ने कितना अच्छा भाषण दिय 'भाइयो, आप लोग यहां तेल-नमक लेने बाजार गए थे ? बोलं हां।' 'हां' के जवाब में वे बोले, 'यहां से सीधे मीटिंग में आ रं हैं ?' 'बोलो—हां।' 'हां' के जवाब में वे बोले थे, 'भाइयो आपके जिले को तीन हाकिमों की जरूरत है—एक्जी, एजू और फोरेस्ट। एक्जी···एक्जी···एक्जी···' वे तीनों बार बोल गए थे। बाजू में बैठे अफसर ने जोड़ दिया—एक्जीक्यूटिव इंजीनियर। 'मैं भी यही कह रहा था, साहब···' वे बोले थे। भाइयो, अपने जिले में नदी-तालाब जरा ज्यादा ही हैं। उसकी खबर लेने पहले टेमकीपर बाबू जाता है, फिर जूनियर इंजीनियर और फिर बड़ा एक्जी···। बड़ा एक्जी···को इतना टेम नहीं मिलता कि वह खुद इतने सारे टेमकीपर बाबुओं को देखे। इसलिए भाइयो, मैंने गोरमेंट से कूटर मांगा है और कूटर मिलते ही एक्जी के पीछे मैं चलूंगा। पूरी चौकसी होगी। नदी-तालाब में पानी क्यों नहीं आया, इसका जवाब-तलब करूंगा। अब धांधलेबाजी नहीं चलेगी ! भाइयो, एजू से शिक्षा बढ़ेगी, हम तो टिकट का भूखा नहीं है। हम बाजार करने धार गया था तो

लोगों ने जबरदस्ती हमसे फारम भरा दिया—आले बन जाओ लीडर ! करो सेवा। जाता कहां है भाई। तब से भाइयो, लगातार हम आपकी सेवा कर रहे हैं।

लेकिन एम० एल० ए० साहब भी कचरू पर क्या बीत रही है, यह नहीं जानते। कल उनके कान में भी बात डालनी होगी। आगे-पीछे की बात वह संभाल लेंगे।

बाबूसिंह कैंडे के आदमी थे—पड़ियाल में रहते थे, इसलिए वह धरती धन्य हो गई। काला रंग, घोड़ेनुमा जबरदस्त चेहरा, ठुड्डी उठी हुई। बोलते तो नाक को जरा ऊंचा-नीचा कर देते। जनता से प्रेम होने के कारण जब भी भाषण करते तो एक-एक सेकण्ड के अन्तराल में 'भाइयों' जरूर कहते और ढंग से समझाते। कर्तव्यपरायण इतने कि एकाध बार जिला जनसमिति की मीटिंग के लिए बस नहीं मिली तो सीधे ट्रक पर चढ़ गए और रवाना हो गए। ट्रक पुलियों और चारे से लबालब भरा हुआ था। वह घटवोरी के पास उलट गया। लेकिन बाबूसिंह ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने एकदम पेड़ के तने को पकड़ लिया और उससे झूल गए। ट्रक तो पास के गड्ढे में जाकर फंस गया, उसमें आग लग गई और बाबूसिंह सही-सलामत। उन्होंने बाद में बताया, 'मेरी किस्मत में जनता की सेवा लिखी है इसलिए मेरा बाल भी बांका नहीं हो सकता।' जनता का प्रेम उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है, इसलिए वे किसी भी कागज पर दस्तखत करने में कभी आगा-पीछा नहीं करते। एकाध बार उन्होंने एक ऐसे ही कागज पर दस्तखत कर दिए थे जिसमें पड़ियाल में बैलगाड़ियों को ठहराने के लिए हवाई-अड्डे की मांग की गई थी। इसकी बाकायदा जांच करवाई गई थी। वे फौरन कार्यवाही करते थे और इसीलिए रामसिंह ने कचरू का मामला उनके पास रखने का फैसला किया।

अगले दिन फिर रामसिंह ने कचरू को समझाया-बुझाया। शाम तक लौट आने की बात कह वह सुबह-सुबह बाबूसिंह से मिलने चला गया। ...मसिंह जानता है—एम० एल० ए० साहब का व्यस्त कार्यक्रम है। सुबह से लेकर रात तक उन्हें लोगों के मामले निबटाने पड़ते हैं थानेदार से लेकर पटवारी

और पटवारी से लेकर बड़े-बड़े सभी हलकों में उनका दबदबा रहता है। अपनी योग्यता के अनुसार वे सभी का काम कर देते हैं।

सुबह की भारी नींद टूटी होती हुई परिस्थान पहुंचती है। रामसिंह की किस्मत से बाबूसिंह घर पर ही थे।

'क्यों, कैसे आना हुआ ?' उन्होंने पूछा।

'एक गरीब दुखी का मामला था, इसलिए चला आया।'

'बोलो !' बाबूसिंह ने नाक को नीचे-ऊपर करते हुए पूछा।

रामसिंह ने उन्हें कचरू की पूरी कहानी सुनाई। बाबूसिंह ने सुना और फिर थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, 'अरे भाई, ऐसे मामलों में हाथ नहीं डालना चाहिए। उस बंधुए को पहले एस॰ डी॰ ओ॰ साब या कलेक्टर साब या थानेदार साब की परमीशन लेनी थी। सारे काम कायदे से होने चाहिए। यदि हम लोग ही कानून भंग कर दें तो महात्माजी का राज कैसे आएगा ! हिरदे बदलना चाहिए। पहले मालिक का हिरदे बदलो भाइयो और फिर कलेक्टर और थानेदार साब का। इसके बाद भी कुछ न हो तो भागो।'

'आपका कहना ठीक है बाबूसिंहजी, लेकिन मरता क्या न करता ?'

मनुष्य को अपनी आत्मा को नहीं खोना चाहिए। उसने अपने मालिक का मन दुखाकर अच्छा नहीं किया। उसे धीरे-धीरे उनका हिरदे बदलना चाहिए था।'

'रामसिंह समझ गया—बाबूसिंहजी पक्के सिद्धांतवादी हैं। उनके सामने कचरू की जान का कोई महत्त्व नहीं था। उनका स्तर काफी ऊंचा उठ गया था। वे छोटी-मोटी ओछी बातों में नहीं पड़ते थे, इसलिए उस इलाके के अमीर आदमी भी उन्हें ही वोट देते थे। थोड़ी देर बाद ही उनके यहां आने-जाने-वालों की भीड़ बढ़ने लगी। लोगों के सामने एक-से-एक समस्याएं [illegible]-बेटियों के भागने से लेकर जमीन-जायदाद के झगड़े, [illegible] भागने से लेकर मुर्गियों की चोरी, बार्डर [illegible] के ट्रक पार कर लेने से लेकर नाकेदार की शिकायत तक।

बाबूसिंहजी ने कहा, 'भाइयो, अब हमें कुछ जरूरी राज-
काज के काम सुलझाने हैं। चलें।' और वे उठे और काला बैग
लेकर खड़े हो गए।

रामसिंह के कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, 'उसके बारे में
फिकर मत करो। यदि तुम चाहो तुम उसे फिर से अपने मालिक
के पास वापस भेज सकते हो। हो सके तो अगले पकड़कर उसके
मालिक का नाम मुझे बता देना। मैं उसे समझा-बुझा दूंगा। सब
काम सिद्धांत और हिरदे बदलने से होना चाहिए, भाई।'

रामसिंह पड़ियाल से विदा हुआ तो उसके मन में ढेर सारी
कड़ुआहट भर गई थी। बस के अड्डे पर जाकर उसने पानी का
गिलास पीकर थूक दिया और अपने पंप जूते से जमीन को तब
तक रगड़ने लगा जब तक कि बस न आ जाए।

कचरू को उसने न जमींदार के हवाले किया, न कलेक्टर
के पास भेजा। उसके दो जून के खाने का इंतजाम कर दिया
और उसे बकरी चराने के काम में लगा दिया। भद्रसिंह ने उसे
कुछ पुराने-धुराने कपड़े पहनने के लिए दे दिए थे।

रेंज के डी० आई० जी० कुक्षी क्षेत्र में बढ़ रहे अपराधों
गतिविधियों से चिंतित थे। ये अपराध भी नाना प्रकार के
और बड़े साहसपूर्ण ढंग से किए गए थे। उन्हें जो क्राइम के स्टे
मेंट्स मिलते उससे उनकी परेशानी बढ़ती ही चली गई। चो
डकैती, लूटपाट, जुआ और तीर से मार डालने की वारदा
बढ़ती ही जा रही थी। वे जवाब-तलब भी करते थे—इस ब
से भी वे बेखबर नहीं थे कि पुलिस बल, थानों और सिपाहि
को जो मामूली सुविधाएं दी जानी चाहिए, उससे भी वे वंचि
हैं। कई बार वे उन इलाकों में गए, इज्जतदार नागरिकों
नेताओं से मिले। उन लोगों के पास अपने रेग्युलर बंदूकधा
वालंटियर्स भी थे; जिन्होंने बाकायदा बंदूकें लेकर परेड की
और समय-असमय दवा छिड़कने वाले डस्टर्स से गुलाब-
छिड़कने का काम भी किया था। उन्होंने उन श्रेष्ठों की
थपथपाते हुए उनसे उस रक्षा-दल के बारे में पूछताछ भी
उन्हें यह ताकीद भी की कि यह दल अपनी ओर से जुल्म-
दस्ती न करे। सेठों ने उन्हें रेस्ट-हाउस में बताया—'हुजूर,

के दांत खाने के और होते हैं और दिखाने के और। ये हराम-जादे तो खा-पीकर मुस्टंडे हो रहे हैं, बस। सालों से एक चिड़िया भी मारी नहीं जाती। थोड़ा खौफ-भर रहता है। पिछले बाजार में कुशी में लूटपाट हो गई थी। गिरधारीलालजी की चांदी की दूकान देखते-देखते लुट गई। पूरे बाजार में हड़ताल हो गई और साले ये वालंटियर्स कुछ भी नहीं कर सके।'

'ठीक है, ठीक है, मैं देख लूंगा'—लेकिन उनकी अनुभवी आंखें कह रही थीं कि सारा मामला ही पकाया हुआ है और रिपोर्ट मंगाने पर उनका शक सच निकला। ब्याज का मामला था। बाजार के दिन मंगरू और उसकी औरत गिरधारी की दूकान पर गए और वहीं उसने शोर मचाकर मंगरू को फंसाने की कोशिश की।

दो-तीन दिनों तक वे क्षेत्र के विभिन्न लोगों से मिले और फिर जिला पुलिस सुपरिंटेंडेंट और दीगर अफसरों की एक बैठक रेन्ज के हेडक्वार्टर, इंदौर में हुई। उन्होंने कहा—'रेन्ज में क्राइम की पोजिशन दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है। हर दिन कोई-न-कोई अपराध हो ही जाता है। लोग रोजाना स्टेट गवर्नमेंट को अपने जान-माल पर आए खतरे के बारे में लिखते रहते हैं। मुझ आप लोगों को यह बताने की जरूरत नहीं कि पुलिस का काम कानून और व्यवस्था को बनाए रखना, सही मुलजिम को तलाश कर उसे सीकचों के अंदर करवाना है। इसमें आपको किसी किस्म की दखलन्दाजी बर्दाश्त नहीं करनी है।'

थोड़ा रुकने के बाद उन्होंने अपनी लम्बी छड़ी उठाई और जिले के नक्शे के एक स्थान पर रखते हुए बोले, 'यहां एक भगोड़े मिलिटरी कैप्टन ने पीतल के बर्तन की एक बहुत बड़ी दूकान खोल रखी है। उसका असली बिजनेस बर्तन की दूकान नहीं, बल्कि करोड़ों की चरस अमरीका को पहुंचाना है। शायद वह बर्तनों के पैकिंग में या बड़े कंटेनर्स में उसे भेजने का इंत-जाम करता है। उसका माल दिल्ली या बंबई कैसे आता है? ...उसके साथी कौन-कौन हैं?.. उसका मोडस आपरेंडी क्या है ... [illegible] लगाना पड़ेगा। अपने पक्के जासूसों को छोड़िए [illegible] कर में कि वे काउंटर एसपियो-

नेज न करने लग जाएं। दूसरा एक आना-माना नया क्राइम जो वहां बढ़ता जा रहा है वह यह है कि जो ट्रकवाले उस हाईवे से गुजरते हैं, उन पर रात में पथराव होता है। कभी-कभी तीर और पत्थरों से हमला भी होता है और कभी-कभी ये लोग ट्रकवालों का कुछ सामान भी उतरवा लेते हैं। आपको एक्सेक्टली उन जगहों का पता लगाना है जहां ऐसी वारदातें होती हैं। इसके अलावा भी अनेक वारदातें होती हैं—जैसे शराब उतारना, डकैती, मारपीट वगैरह। लेकिन ध्यान रहे, अब आदिवासी अपने लिए कानूनन शराब बना सकता है। हमें परेशानी तभी होती है जब शहरी ठेकेदार उनसे कौड़ी-मोल कच्ची शराब खरीदकर उसे अपनी दूकानों में डिस्टिलरी से आई शराब में मिलाकर बेचना शुरू कर देता है। कभी-कभी ऐसी मिलावट से शहरों में सैकड़ों लोगों की जानें चली गईं। मैं चाहता हूं कि आप एक बात का खयाल रखें—आदिवासी बहुत अच्छे आदमी होते हैं। वे कभी-कभी शौकिया तौर पर ही मुर्गी चुरा लेते हैं, गुदड़ चुरा लेते हैं और फिर मारपीट करके कहते हैं—यह मत समझना कि यह माल हम हराम में ले जाते हैं। तुझे अच्छी तरह सबक सिखाकर ही यह माल हम लिए जा रहे हैं। क्राइम पोजिशन डील करते वक्त लोगों की तबीयत को जान लेना जरूरी होता है। पुलिस का काम एक साइकलॉजिस्ट का भी होता है। दोस्तो, एक बहुत जरूरी बात कहकर मैं अपनी बात खत्म करना चाहता हूं—अपने काम करने के मैथड में एक बात का हमेशा ध्यान रखें, किसी भी वारदात के समय जो मुजरिम अपने सामने आता है, उसके पीछे की कड़ी को ढूंढ़ते रहिए। मैं समझता हूं कि आपने मेरी बात समझ ली होगी। हर छोटे मुलजिम के पीछे किसी-न-किसी बड़े मुलजिम का हाथ जरूर होता है—उसे ढूंढ़िए, तभी आप मामले की तह में पहुंच सकते हैं। आई होप दिसिज आल! अब आप लोगों को कोई कठिनाई हो तो बताएं, ताकि हम लोग उस पर भी गौर कर लें।'

मीटिंग खत्म होने पर सभी पुलिस अफसरों में एक दैवी प्रेरणा जागी। सबने कहा कि डी० आई० जी० साहब बहुत शानदार आदमी हैं और वे जो कुछ भी कहते हैं, अपनी पचीस

भारत की मर्दुम का निचोड़ है। हमें अब आने-जाने वालों के फाइल में मुस्तैदी से निपटना है और जनता को राहत दिलानी है।

कैप्टन साहब की दूकान के पीछे वाले हिस्से में काफी जोर-शोर से ठोक-पीट हो रही थी। बर्तन बन रहे थे। कैप्टन आते-जाते लोगों को बर्तन दिखाते और रोमेल और मोन्टगोमरी के जमाने के टैंक-युद्ध से लेकर दूसरे महायुद्ध के महत्त्वपूर्ण वार-थियेटर्स का सिलसिलेवार वर्णन कर रहे थे—जब पर्ल हार्बर पर जापानियों ने बमबारी की तब मैं वहीं था। एक-एक सिपाही को ट्रेंच में पहुंचाकर ही सबसे बाद में एक ट्रेंच में कूदा। एकाध बार तो जैसे ही मैं एक ट्रेंच में कूदा, वैसे ही मेरे पास ही एक जोरदार धमाका हुआ। भयंकर बमबारी चल रही थी। एक सेकेंड की देरी से ही मेरे परखच्चे उड़ जाते। साहब, जी० एच० क्यू० से एक गलती हो गई—ओफेन्स इज दी बेस्ट डिफेंस! पहले हम लोगों को जापानियों के घर में घुसकर हमला करना चाहिए था, तो दुश्मन पर्ल हार्बर, रंगून आने की हिम्मत ही नहीं कर सकता था। आखिर में जब नागासाकी में एटमबम डाला गया तो उसने घुटने टेक दिए कि नहीं। वे जापानी भी बड़े फ़ड़ियल होते हैं। अभी-अभी बीस साल बाद कुछ जापानी सिपाही फ़िलीपाइन आइलैंड में मिले। वे यही सोच रहे थे कि जंग अब भी चल रही है और जापानी कभी हथियार नहीं डाल सकते। वे भरी जवानी में सेना में भर्ती हुए थे और अब उन पर बुढ़ापा आ गया था। जब मैंने उन्हें बताया कि अब जापान वह जापान नहीं है, वहां की गवर्नमेंट एक भ्रष्टाचार केस में फंस गई है—उन्हें लग रहा था जैसे मैं पागल हो गया हूं और जाने कौन-से जमाने की बात कह रहा हूं। मैं ईरान, इराक और टर्की—सब जगह रह आया हूं, दोस्तो!' पास के नक्शे में कैप्टन छड़ी से उन जगहों को भी दिखा देता। इसके बाद वह लोगों को बढ़िया चाय-नाश्ता कराके विदा कर देता।

एक दिन उनकी दूकान पर एक ग्राहक आया। उसने कैप्टन से हैंडिल वाले और दीगर ऐसे बर्तनों की मांग की जिसमें छोटे-छोटे गड्ढे बने हों। उसने कहा कि वह इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का

व्यापारी है और ऐसे बर्तनों की होनोलूलू में बड़ी मांग है और उन्हें पवित्र समझा जाता है। कैप्टन होशियार था। उसने इन्कार कर दिया। फिर भी उसने देखा कि उसका कारखाना घिर चुका है और उसका बहुत-सा माल जब्त हो चुका है। उसके यहां से काफी लकड़ी, प्रोजेक्टर और ब्लू-फिल्मों की रीलें बरामद हुईं। इन बर्तनों के छोटे-छोटे गड्ढों में करोड़ों रुपयों का हशिश और चरस अमेरिका और दूसरे यूरोपियन देशों को जा रहा था। कुछ कागजात भी पकड़े गए, जिनसे दिल्ली के अड्डे और इस व्यापार में लगे देशी-विदेशी लोगों के नाम-पते मालूम हो गए।

अम्बासोटी घाट के नीचे वाले रास्ते पर कई सालों से रात के अंधेरे में ट्रकों से माल उतारने, सामान पार करने ट्रकों की रस्सी काटकर माल निकालने, उनपर हमला करने की बहुत-सी वारदातें हो रही थीं। भाटू के गिरोह को पकड़ने की काफी कोशिश की गई लेकिन गिरोह ने पुलिस-पार्टी पर गोलियां चलाईं और तीर-कमान और पत्थर फेंके—पुलिस को भी गोली चलानी पड़ी। लेकिन भाटू फरार हो गया था। पुलिस जवान के अम्बासोटी घाट के इस पार और उस पार दोनों ओर बन्दूकें तानकर बैठे रहते, लेकिन भाटू वहां से कई बार निकल भागा। वह आदवासियों की बारातों और घरों पर भी हमला करके उनके सामान को लूट लेता, गहने उतरवा लेता। उसके गिरोह के लोग ट्यूब बांधे रहते। पुलिस जब भी पीछा करती वे एक पहाड़ से कूद पड़ते और ट्यूब के सहारे उछलते हुए मीलों दूर पहुंच जाते और पुलिस के घेरे के बाहर होते। वे रातोंरात जिले के बार्डर को पार करते हुए दूसरे जिले में पहुंच जाते। बबूल के कांटों झाड़-झंखाड़ और अंधेरी रात का उनपर कोई असर नहीं होता था। आखिरकार भाटू भी एक रोज पुलिस की गिरफ्त में आ गया। उसने कालाखूंट गांव के तीन आदिवासी तेहू, बसना और रामा के घर पर रात बारह से एक बजे के करीब अपनी गैंग के साथ हमला किया और उसके घर से बैल, भैंस, बकरियां, केड़ियां और औरतों के गहने ले उड़ा। जैसे ही पुलिस को इस वारदात की खबर मिली, उसने चारों

काम मिलेगा, दो पैसे की आमदनी आखिर उन्हें भी होनी चाहिए। दूसरे इस इलाके की ओर उद्योगपतियों का ध्यान जाएगा, बड़े-बड़े लोगों की आमदरफ्त होगी। सरकार भी कहती फिरती है—यह पैसा लो, वह पैसा लो। आखिर यह पैसा लेने वाला भी तो कोई हो। बीरू और मैं तो उस पैसे के ट्रस्टी भर होंगे। फिर इसमें रामसिंह को शामिल कर लेंगे··· वह भी कुछ सीख लेगा। काम का आदमी है, काम से लग जाएगा। एक छोटा-मोटा गेस्ट-हाउस भी बना देंगे···सरकारी अफसर जंगल में कहां-कहां मारा-मारा फिरेगा। वह बेचारा अपने से कुछ मांगता तो नहीं···पिकनिक वगैरह भी होती रहेगी। सारा मामला ही सच्चा है···इसमें शेर और मेमना और खून की बात आती कहां है! और तो और, वहीं आदिवासियों का माल खरीदने का कांटा-बांट भी डाल देंगे, ताकि उसे अपनी चीजें औने-पौने दामों में बाजार में न बेचनी पड़ें। यहां से वहां तक सारी प्लानिंग ही सच्ची है, कहीं किसी का नुकसान नहीं है, फिर ना नुच काहे की!

खंडेलवालजी ने अपनी पत्नी से, बीरू से, अपने दूसरे लड़कों से सलाह-मशविरा किया और काम में जुट गए। अब उनके चक्कर तहसीलदार के कोर्ट में ज्यादा लगने लगे। उन्होंने अपनी आदिवासी भलाई योजना बी० डी० ओ० तहसीलदार, उद्योग एक्सटेंशन अफसर, दारोगाजी, डॉक्टर साहब और सभी पढ़े लिखे लोगों को समझाई। वे रामसिंह और भद्दूसिंह को भी अपनी योजना समझा आए। उन्होंने रामसिंह से कहा, 'बीरू तो अभी बच्चा है, सब कुछ तुम्हें ही संभालना है।' रामसिंह कुछ नहीं बोला था।

खंडेलवालजी ने लाइसेन्स के लिए दरख्वास्त भी तहसीलदार को दे दी। जमीन का नक्शा भी पेश कर दिया। उसकी दूकान पर सभी लोगों की खातिर-तवज्जो भी शुरु हो गई। लेकिन उन्हें लाइसेन्स नहीं मिल सका।

हुआ यह कि खंडेलवालजी के जाने के बाद रामसिंह बी० डी०ओ० साहब से सलाह-मशविरा करने आया था। उस समय तहसीलदार बरसैया साहब भी वहां मौजूद थे। तहसीलदार साहब के पूछने पर उन्होंने बताया, 'यह कोई बुड्ढे की नयी

दिए। तहसीलदार ने गर्मजोशी से रामसिंह से हाथ मिलाते हुए कहा, 'कोई ऐसी बात नहीं है। यह मेरी ड्यूटी है।'

गांव में नारू रोग भयंकर तबाही फैला रहा था। हर घर में लोग इसकी भयंकर पीड़ा से कराह रहे थे।

आजादी के बाद तीस साल पलक झपकते गुजर गए। उससे भी बरसों पहले लोगों को नारू तंग करता रहा। गांववालों का निस्तार बड़े नाले के पानी से हो जाता था। लेकिन उन्हें पीने का पानी गांव से एक मील दूर खाकी बाबा की समाधि से लगी बावड़ी से ही लाना पड़ता था। गांववाले इसे 'सदा सुहागिन की बावड़ी' के नाम से याद करते। वे कहते, 'बाप दगा दे सकता है; मां, भाई और तिरिया भी, लेकिन यह बावड़ी कभी विश्वासघात नहीं कर सकती।' किसी जमाने में गांव के आसपास अंग्रेज जट के तम्बू पड़ा करते थे, उसका धाव-लश्कर। उन लोगों के खाने-पीने के लिए गांव की सारी मुर्गियां, घी, दूध और सारा सामान पहुंचा दिया जाता। आठ-आठ दिन तक नाच-गानों की महफिल जमती। पूरा तम्बू उनके मातहत अफसरों और मुसाहिबों से भरा रहता। रात को शराब के नशे में धुत पड़े रहते। मुर्गी-मक्खन की तरह उन्हें रोज एक औरत की तलाश रहती। उनके मुसाहिबों की नजर चम्पा पर पड़ चुकी थी। जट साहब को वे कह चुके थे, 'हुजूर, आज आपको ऐसा माल पेश किया जाएगा जो सिर्फ हिंदुस्तान में मिल सकता है।'

'लाओ, मैन, लाओ!' साहब बहादुर ने नशे में धुत होकर कुर्सी को एक लात मारकर उसे गिरा दिया—'जाओ, यू मैन, यू सन ऑफ ए बिच···गेट आउट!'

मुसाहिब चम्पा को लाने के लिए भेजे गए। चम्पा ने इसी बावड़ी में आकर जान दे दी थी। लोगों ने इस बावड़ी का नाम तभी से 'सदा-सुहागिन की बावड़ी' रख दिया। इसका पानी भी सदा-सुहागिन की तरह था। भयंकर सूखे के साल भी इसमें पानी होता। लोग इस बावड़ी पर और खाकी बाबा की समाधि पर बरसों से फल-फूल, चंदन-अक्षत चढ़ाते हैं। लेकिन इस बावड़ी के साथ जट साहब के पाप का कोड़ा भी रेंगता है।

लोगों के इरादे नेक थे, लेकिन नारू के इरादे उससे भी

ज्यादा खूंख्वार। इस तरह घर-घर में नारू फैल गया था। झाड़-फूंक करनेवालों की बन आई थी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर नहीं था, जिसकी भी पोस्टिंग होती वह वहां से भाग खड़ा होता। शहर के मेडिकल कॉलिज में पढ़ा डॉक्टर उस धुर-पिछड़े इलाके में क्यों अपनी और अपने बच्चों की जिंदगी बर्बाद करता! लायन्स भी ऐसे घटिया मामले में हाथ नहीं डालते थे।

जब खंडेलवालजी को खबर मिली तो उन्होंने इतना ही कहा, 'मुझे सख्त अफसोस है। जाने आदिवासियों ने कौन-से पाप किए हैं कि भगवान उनको यह दंड दे रहा है। हरि इच्छा।'

बीरू से कहा, 'बेटे, हम लोग हरि की इच्छा से बच गए। यदि यहां भट्टा खुल जाता, तो नारू के कारण मजूर मिल नहीं सकते थे। यदि बाहर से लाते तो हमारी थुक्का-फजीहत होती। ईश्वर सब अच्छा करते हैं। एक बड़ी आफत से उसने हमारी रक्षा कर दी। इतना कहकर उन्होंने आकाश की ओर देखा।

रामसिंह, भद्दूसिंह, कचरू, अमली और उनके साथियों ने लोगों की भरपूर मदद की। बरसैंया, उमरावदे और स्वास्थ्य केन्द्र के बूढ़े दयालु कंपाउंडर ने नारू के मरीजों की देखभाल का इन्तजाम किया। कुछ ही दिनों में गांव उठकर खड़ा हो गया।

भगोरिया—होली के पहले वाले हाट बाजार के दिन य यह मस्ती भरा त्योहार। हाट बाजार का अपना एक गुलाब आनन्द। नमक और तेल, मक्का और ज्वार की खरीद। कड़ तेल के भजिये। अमली को याद है—अच्छी तरह याद है। ऐं ही किसी हाट-बाजार में भद्दूसिंह ने उसे पान खिलाया था। उससे पहले मनकू ओझा ने और उससे भी पहले नरसू ने। लेकिन यह सब जैसे किसी दो घंटे के सिनेमा की तरह बीत गया। अमली को अपनी जवानी याद आ रही है।

उड़ता हुआ गुलाल और धूल! सड़क के दोनों ओर जमीन पर लगी दूकानें! नमक, मिर्च, तेल, भजिये और दूकानें! लाल लुगड़ों और पीले कांचरियों की दुकानें! कथीर और चांदी के जेवर, कांच और बड़ों की हंसलियां, सीप की मालाएं! गोदने

मजीरा घुमाना !' अपनी बांहों, गालों, माथे और कभी-कभी गले पर आम, मयूर, फूल, पत्तियों का गुदना ! इसके बाद कथीर और चांदी के बने तरह-तरह के वजनदार जेवर—गले में हामनी, सिर पर बोरला, ललाट पर टीकड़ी, नाक में बादड़ी, कानों में मोरमिया, हथेलियों में हथेलु, बांह पर बाहुडंया, कलाई पर कड़लु, पांवों में तोड़े और सामरी।

अमली ने हाथ से उतारी पी रखी है। भद्दूसिंह ने भी। धूप थोड़ी तेज हुई है।—हाट में आसपास के गांवों की टोलियां आने लगी हैं। उनके आगे-आगे ढोल बजता जाता है। एक नहीं, दो नहीं, कई-कई ढोल एकेक टोली में होते हैं। ढोल-मादल बजाते हुए भील-भिलालों के दल नाचते हुए आने लगे हैं—सजी-धजी भील-बालाएं और लाठी या तेजधारवाले हथियार लहराते तीखे नाक-नक्शों वाले बांके जवान।

ढोल और मांदल के साथ वंशी और अलगोजा की स्वर-लहरी भी फिजा में तैर रही है। बच्चे पालियां बजाकर संगत कर रहे हैं. औरतें गा रही हैं और टोली के लोग थिरक रहे हैं।

अमली के मन में पूरा इतिहास जाग रहा है। नरसू बहादुर था, उसके साथ बिताए गए दिन···ओफ···लेकिन वह कर भी क्या सकता था ?···उसकी इन्द्री बेकार हो चुकी थी···और मनकू ओझा · वह भी मेरी जिंदगी का पूरक था ··और भद्दूसिंह···वह बहादुर है···पुलिस के अत्याचारों से नहीं दबा···किसी के बाप से नहीं डरता···एकदम जिंदा बाघ है···मेरे लिए क्या नहीं किया उसने ! वर्ना मैं उन खूंख्वार भेड़ियों से पार नहीं पा सकती थी। रामसिंह के जाने के बाद मेरा कोई सहारा नहीं था।

गुनिया ने अमली के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'अमली, उस दिन बाग में नहाते हुए मैंने तुमसे क्या कहा था ?'

'क्या ?'

'देख वह रामसिंह खड़ा है।'

'हां, है ! तो ?'

'मैं कह रही थी आज भगोरिया है। रामसिंह से कह—आगे बढ़कर किसी भी लड़की को गुलाल मल दे और उसके मुंह

मैं पान का बीड़ा ठूंस दे और भाग जाए।...मैं तुझे एक बात और बता दूं। कोई उससे दावा नहीं मांगेगा।'

इतने में रामसिंह भी वहां आ गया था। 'चलें, काकी !' उसने कहा। सब लोग चलने की तैयारी में थे। अमली और मुनिया भी उसके साथ हो लीं।

सांझ उतर आई है। सब कुछ ठहर गया है। खच्चरों पर दूकानों का सामान लदने लगा है। जिन लोगों ने इस भगोरिया में अपना जीवन-साथी चुना है, उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे। बूढ़े और अधेड़ बिगड़ी हुई फसल से परेशान हैं—परिवार का और बाल-बच्चों का क्या होगा ? महाजन के पैसे का क्या होगा ? खैर। अगला भगोरिया सब दुःखों को दूर कर देगा। कल की चिंता आज क्यों ?

ढोल की आवाज धीमी हुई है। भगोरिया-टोलियां लौट रही हैं।

'रामसिंह !' सहसा अमली ने कहा।

'क्या बात है, काकी ?'

'तूने भीमा की लड़की को देखा है ?'

'हां, देखा तो है !'

'कैसी है, रे ?'

'अच्छी है, काकी। लेकिन यह तुझे आज क्या सूझ रही है ?'

'मैं चाहती हूं कि तू उसका हाथ गह ले। बड़ी अच्छी लड़की है। दापे की तू कोई चिंता मत कर।'

'काकी, दापे की ऐसी कोई बात नहीं। तू तो जानती है। मैं इन बातों पर भरोसा नहीं करता।'

'तो कौन, बात करूं ?' अमली ने पूछा।

'काकी, मेरी शादी तो हो चुकी !'

'किससे, रे ?'

'काकी, मेरी शादी जनता से हुई है। तू जानती है अपनी बिरादरी की क्या हालत है ?'

'अरे वाह रे तेरी जनता ! जनता की सेवा करने के लिए अपने आपको मारेगा ? अरे, बड़े-बड़े महात्मा हों या प्रभु रामचन्द्र हों, सबने शादी की। इसी जनता ने सीता पर क्या-क्या

जुल्म नहीं ढाए। मुझे गांव से निकलवा दिया था।'

'वो तो ठीक है काकी। कोई तेरी जैसी मिल जाए तो देख लेना।'

'हत्!'

जंगल से ठण्डी हवाओं के मदमस्त झोंके आ रहे थे। महुआ और खजूर की गंध हवा में अटकी थी। भगोरिया का नशा अमली और गुनिया पर भी छाया हुआ था। रामसिंह कुछ सोचने लगा था। आज काकी ने उसके तमाम बदन को जैसे एकाएक उठाकर खड़ा कर दिया था। उसका रोम-रोम जग उठा था, शायद भगोरिया का नशा ही ऐसा होता है। उसके सामने तीखे नाक-नक्शवाली सुन्दरी का चेहरा घूम गया ...उसने अपने गालों पर बेल-बूटे का गोदना बना रखा है... पैरों में भी... वह काली है, चपटी है नाक बैठी हुई। सुन्दरी गहनों में कैसी दिखेगी? औरत की गंध अजीब होती है... उस रात जब नशे में उसने गोरी मेम को उठा लिया था तो कैसी झनझनाहट हुई थी। एकाएक उसकी आंखों में चमक आ गई। अभी भगोरिया खत्म नहीं हुआ है, घर जाकर यह जश्न सारी रात झोंपड़ों-झोंपड़ों में होगा, बोकड़े-मुर्गियां कटेंगी, ताड़ी का दौर होगा—रात देर तक खाना-पीना, नाच-गाना होगा।

'काकी, क्या सुन्दरी आज मेले में आई थी?' रामसिंह ने पूछा।

'हां रे, आई थी। आज तो कथीर के गहने में वह बड़ी अच्छी लग रही थी। जांघ पर पत्ती गुदवा रही थी। यदि तू आज उसे ले जाता तो सुन्दरी और भीमा से ज्यादा खुशनसीब कौन होता रे?'

'लेकिन लोग मुझे क्या कहते, काकी!'

'क्या कहते? लीडर होने का मतलब यह नहीं कि तू गिन्दी रखा गया है। तेरे सोने-उठने-बैठने पर लोगों का पहरा लगा है!'

'काकी, तेरी बुद्धि सचमुच बड़ी है। तेरे सामने मैं हारा।' वह खिलखिलाकर हंस दिया था।

पगडंडीवाला रास्ता पार होता जा रहा था। अनेक टोलियों के खिलखिलाने की आवाज जंगल के हर कोने में गूंज

रही थी। पेड़-पत्ते मस्ती में झूम रहे थे। कोई-कोई दीवाना मांदल पर थाप मार देता था। मांदल की धिन-धिनाकर और अलगोजा की सुरीली आवाज पहाड़ से टकराकर वापस आ रही थी और उस जंगल में अजीब-सी मस्ती बिखेर रही थी। जंगली कबूतरों की कतारें काले आसमान पर तैरती हुई जा रही थीं।

रात के दस बज रहे थे। आसमान में अनेक रंग आ-जा रहे थे। कहीं भालू, कहीं खरगोश, कहीं हिरण, कहीं भैंसे के चित्र बनते-बिगड़ते जा रहे थे। भगोरिया हाट से लौटने में उन्हें काफी देर हो चुकी थी। मुंह-हाथ धोने के बाद वे लोग अपने-अपने झोंपड़ों से बाहर आ गए। आज की रात भगोरिया की रात है—झोंपड़ों-झोपड़ों में उत्सव है आनन्द है। बोकड़े और मुर्गे कट रहे हैं—गोश्त पकने की एक जंगली गंध है। पेड़ हवा देने लगे हैं। दूर-दूर तक कुछ भी नहीं दीखता—उनके गांव काफी फासले पर बने हुए हैं—रास्ते में बस पेड़-ही-पेड़ है, झंखाड़ है और है पथरीली सूखी जमीन। मन से वे इन तमाम चीजों से जुड़े हुए हैं।

मद्दूसिंह एक चट्टान पर अपने दोस्तों के साथ घिरा बैठा है। उसके साथ भीमा भी है। वह मद्दूसिंह के यहां पानी पीने के लिए रुका तो अमली ने उसे रोक लिया। सो अमली, धुनिया सुन्दरी की मां और कुछ औरतें भी एक जगह इकट्ठा हैं। दारू, ताड़ी और चिलम के दौर चल रहे हैं। रामसिंह, कवरू और कुछ लोग एक पत्थर पर बैठे हैं।

'खेती कैसी है भीमा ?' मद्दूसिंह ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा है।

भीमा के चौड़े कंधे हैं। आबनूसी काला रंग, चमकती हुई आंखें और मजबूत कलाई का मालिक—उसकी मांसपेशियां भरी हुई हैं। वह भरपूर नशे में है। रास्ते में उतर गई थी तो यहां मौट लगा ली।

'साली जमीन क्या है, पत्थर है ! बीज डाल देते हैं··· कितना उगता है तुम जानते हो ! फिर यह सूखे का साल था।' उसके बोलने में गजब का आत्मविश्वास था।

'साथ में कुछ परेशानियां भी हैं—लगान है, महाजन का

तोड़ा-बहुत कर्ज भी साल-दर-साल चला आता है और जान-वरों के लिए साल-भर का इंतजाम करना ही पड़ता है। है ना !' भद्दूसिंह का साथी किशन बोला था।

'मुझे इस बात की ज्यादा चिन्ता नहीं। आज भगोरिया है। आज मैं तुम्हारा मेहमान हूं। यहां दारू है, बकरा पक रहा है, और मुझे चाहिए ही क्या ? तुम मेरे घर पर आओगे तो भूखों नहीं रखूंगा।' भीमा खूब जोरों से 'हो-हो-हे-हो' करके हंसा था।

उसके बच्चों-जैसी हंसी के फव्वारे में दारू के छींटे भी बाहर पड़ने लगे थे। भद्दूसिंह और इसके साथी भी खूब जोरों से हंसने लगे थे।

किशन पर कुछ ज्यादा ही चढ़ गई थी। बोला, 'भीमा, मैं तुझे जानता हूं। तू भी मुझे बरसों से जानता है। यह खेती देखने-भर की है। एक बार सवाल पर बीज लिया, दूसरी बार लिया, अब और कौन देगा ? साहूकार कहता है गोरमेंट के पास जाओ। अब कहां गोरमेंट को देखने जाऊं ? चीज-बस्त··· मुर्गी···बकरी···टिन-टप्पर, पानी खींचने का मोट—सब तो गिरवी पड़ा है !'

'घबरा मत, मेरे चिमना ! अरे, जिस साल गहरा पानी पड़ेगा, नदी-नाला सब पूर आएगा। खूब फसल उग जाएगी। तब साहूकार को भी खुश कर देना, समझा ! अभी तो वह जितने कागज पर अंगूठा लगवाना चाहे लगा दे ! क्रान्ती आ रही है—नेता लोग सब कागज फाड़कर फेंक देंगे। फिर हम लोग खुद···'

'उनका टेंटुआ दबाना आसान नहीं है, भीमा ! वे बरसों से हमारी गर्दन पर हैं और बरसों रहेंगे। सभी बड़े आदमी हैं।' भद्दूसिंह बाद में किशन की ओर मुखातिब होते हुए बोला, 'गोरमेंट को ढूंढ़ने की जरूरत नहीं। रामसिंह को लेकर बी० डी० ओ० साब के दफ्तर चले जाना, बीज मिल जाएगा।'

'अरे, हां, अपना रामसिंह भी तो इतना बड़ा नेता बन गया है, उसे लेकर चले जाना।' भीमा बेफिक्री से बोला, 'कहां बैठा है ? क्या पीता-वीता नहीं ? जवान जैसा जवान और लक्षण बुढ़ापे के। उसे बुलाओ तो !'

भद्दूसिंह ने आवाज लगाई तो रामसिंह भी आ गया। भद्दूसिंह की ओर मुखातिब होते हुए भीमा बोला, 'भद्दूसिंह, दारू खूब अच्छी उतारी है।'

'यह मेरा नहीं, इसकी काकी का कमाल है।'

भीमा मुक्त कंठ से पहाड़ों को दहलाने वाली हंसी हंसा। किशन और रामसिंह भी उसकी हंसी का मजा लेते हुए खिलखिलाए। हंसी रुकने पर किशन रामसिंह के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, 'भीमा बोल रहा है तूने आज भगोरिया में अपना साथी नहीं चुना।'

रामसिंह ने कोई जवाब नहीं दिया। भद्दूसिंह बोला, 'उसका कहना है यदि उसे अमली जैसी कोई लड़की मिल जाए तो वह जरूर शादी कर लेगा।'

'अच्छा है, अच्छा है!' भीमा ने पेट पर हाथ धरकर कहा, 'अरे भाई, यह बोकड़ बहुत कर्रा है। पकने का नाम ही नहीं लेता।'

'इतनी जल्दी कहां से पकेगा, काका!' किशन बोला, 'लेकिन मैं जरा पूछकर आ जाता हूं।'

उधर अमली के पास सुन्दरी और उसकी मां और गुनिया बैठी थी। फागुन की रात थी। पास में ही ईंटों के ऊपर एक बड़ी-सी हंडिया पड़ी हुई थी, जिसमें बोकड़ पक रहा था।

गुनिया बोली, 'एक बात बोलूं, बहना?'

'बोल ना?' सुन्दरी की मां बोली।

तेरी सुन्दरी पर अमली का मन डोल गया है, दे दे इसे रामसिंह के लिए।'

'आज तो भगोरिया था। रामसिंह उसे उठा ले आता तो [illegible] करती भी क्या?' वह हंसते हुए बोली थी। 'जैसा अमली [illegible] मैं उसे रोकने वाली कौन होती हूं। [illegible] कुछ नहीं।'

अमली ने प्यार से उसके कंधे छूकर उसे उठाया था। [illegible] भी उठ गई थी। सुन्दरी भी। और [illegible] की आवाज हवा में गूंज उठी। वे एक-दूसरे के गले में हाथ [illegible] उधर से वह भी आ [illegible] के मोहल्ले पर एक मतवाली [illegible] किशन, रामसिंह, [illegible] अपने [illegible]

बनाकर कमर में हाथ डालकर नाचना शुरू कर दिया था। रामसिंह की नजर सुन्दरी पर पड़ी—लेकिन जब भी सुन्दरी उसकी तरफ देखती तो वह अपनी नजरें हटा लेता। सुन्दरी सचमुच सुन्दर थी—पसरी हुई चपटी नाक, कमानीदार भवें, चेहरे पर एक अजीब तीखापन। सब लोग नशे में घुत्त थे। काफी रात बीतने तक यह उत्सव चलता रहा। थककर सब खाना खाने बैठ गए। पूरे आसमान पर चांद की सफेद चादर तनी हुई थी।

नाचते-नाचते सुबह हो गई थी। भीमा ने विदा चाही तो भद्दूसिंह और अमली ने खाना खाने के बाद जाने का इसरार किया। भीमा का रुकना मुश्किल था—घर में गाय-बैल, मुर्गियां और बकरियों का संसार था। सुन्दरी के न रहने से उनका दाना-पानी कौन करता!

'जानवर भूखों रह जाएंगे, भद्दूसिंह!' उसने कहा।

'आना!' अमली ने सुन्दरी से और उसकी मां से कहा।

'हां, लेकिन पहले तुम लोग आओ, रामसिंह को लेकर, बाद में हम लोग आएंगे।' सुन्दरी की मां ने झोंपड़े की ओर देखते हुए कहा, 'तुम्हारा झोंपड़ा तो अच्छा है अमली, बड़ा साफ रखा है।'

'हां, इसके सिवाय हम लोगों के पास रहा ही क्या है।'

'बहुत कुछ है, इसी से जिन्दगानी भी बहुत है?' कहती हुई सुन्दरी की मां ने हाथ दबा दिया। झोंपड़े से बाहर आकर विदाई दी गई। किशन और कबरू भी थे।

दिन किसी पाखी की लम्बी उड़ान की तरह उड़े चले जा रहे थे। कहां तो भयकर लू-लपेट में धरती दरक गई थी, पेड़ सूख गए थे, उनकी तमाम पत्तियां झर गई थीं—दूर-दूर तक हरियाली का डक भी नजर नहीं आता था। बस, ट्रांसमिशन लाइनों की कतारें-भर थीं और दूर पर श्रीहीन नंगी पहाड़ियां दिखाई देतीं। अम्बासोटी घाटी से ही लू-लपेट शुरू हो जाती है—सूखे जानवर सूखी दरकती हुई धरती और सूखे पेड़। लेकिन अब आकाश पर काले बादल-ही-बादल दिखाई देते हैं। कबरू ने खेत में अच्छी-खासी मेहनत की थी, जमीन को बीज के

लायक बना दिया था। हर पत्थर और हर झंखाड़ को साफ कर दिया था। पहले वह अपने मालिक और नरक में तरह-तरह की तकलीफें झेलने के डर से रातभर भी नहीं पाता था। लेकिन भद्दूसिंह और अमली के अपनापे ने, रामसिंह के साथ ने उसे फौलाद बना दिया था। अब वह निडर होकर गांव में घूमता था, ऊबड़-खाबड़ खेत को कुदाली मार-मारकर ठीक करता था। उसे बस बारिश का इंतजार था। वह जमीन तोड़कर इतना उगा लेगा कि वह उन चार आदमियों के लिए काफी हो।

बारिश आई भी लेकिन वह अपने साथ तबाही और विनाश ले आई थी। नर्मदा, मान, बाघनी और छोटे-मोटे नदी-नालों का पानी उथल-पुथल मचा गया था। सारी सड़कों पर पानी-ही-पानी था। बाढ़, बाढ़ और बाढ़। किनारे बसे झोंपड़ें में उथल-पुथल मची हुई थी। उधर निसरपुर इलाके को खाली कराने की कार्यवाही चल रही थी…लेकिन कुक्षी से निसरपुर तक जाने के रास्ते बन्द हो चुके थे—उन्हें कोई राहत नाव के जरिए ही पहुंचाई जा सकती थी। इधर नर्मदा और मान के तूफान के कारण धरमपुरी का इलाका डूबने में आ चला था। मंदिर के कंगूरे तक पानी-ही-पानी दिखाई देता था। यदि कोई नाव पर बैठकर इस नुकसान का अन्दाजा भी लगाना चाहता तो उसकी नाव तेज लहरों से उड़ती हुई कंगूरे तक पहुंच जाती। यह फकीरों और मछेरों की बस्ती थी, जिनके लिए बाद में नर्मदा नगर बसा दिया गया था। इन सबको रात में मौलवी साहब के बाड़े में पनाह मिली थी। बाद में इन्हें जन-बच्चों समेत स्कूल में रखा गया था। जिस नदी से उन्हें मछली और पीने का पानी मिलता था, उसका महातांडव था। मछेरों का जाल, घाट, बर्तन-कूंडे—सब इस बाढ़ में स्वाहा हो रहे थे। मौलवी साहब के यहां रात का एक-एक पहर बड़ी मुश्किल से कटता था। पानी हहर-हहर कर रहा था, उसकी दिल दहलाने वाली भयानक आवाज! नदी और उनके बीच का फासला सिर्फ एक टीले का था। मौलवी साहब का बाड़ा थोड़ी ऊंचाई पर था, इसी से वे अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रहे थे। रात-भर उनकी आंखों में नींद नहीं थी। औरतों-बच्चों की

रहे-बसे थी। वे आपस में कह रही थीं, 'बर्तन-भांडे, गूदड़ तो आ गए, लेकिन जाल रह गया।'

पूरी बस्ती तीन-चार रोज से जाग रही थी। औरतों-मर्दों, बच्चों-बूढ़ों की आंखों में नींद नहीं थी। यदि बच्चों की पलकें झपकतीं तो मां उन्हें सावधान करती। जिन पुरखों ने इस बस्ती को बसाया था उनके कितने अरमान, कितने सपने रहे होंगे। रोजी-रोटी की तलाश में आने वे कहां से भटकते हुए आए होंगे। जाने कहां से एक-एक डोर से जाल बनाया, मछेरे का काम शुरू किया और अपनी जिन्दगानी चलाते रहे। उस जमाने में धरमपुरी में कुछ भी तो नहीं था। शायद शेर दहाड़ता रहा हो।

बाढ़ के कारण खलघाट का पुल बन्द हो गया है। नदी डेंजर प्वाइंट पार कर चुकी है। अमले जिला हेड क्वार्टर पर खबर देते हैं। तारघर के नर्मदाशंकर का टक-टक-टक चलता रहता है। खबरें आती हैं, जाती हैं, जाती हैं, आती हैं।

सरकार इन मछेरों से सालों से नदी के पास के झोंपड़े खाली करने को कहती है। उसके बदले उनको दीगर जगहों में बसाने की बात थी, लेकिन मछेरे कहते हैं, 'हमारे बाप-दादाओं की हड्डियां यहीं गड़ी हैं, हमारी भी यहीं गड़ेंगी।'

नर्मदा पूरी तूफानी गति से बहती हुई निसरपुर के आस-पास के इलाकों को बहा ले जाती है। बच्चों-बूढ़ों की चीखें हैं, लाशें हैं, भूख है। खाट, बर्तन, जानवरों और लट्ठों का बहाना है। पति और पत्नी का बिछोह है। पानी का एक अजीब-सा शोर है।

इधर बाघनी ने रास्ता रोक दिया है। पानी पुल तोड़कर बाग के आसपास के गांवों में घुस आया है। बाग की मशहूर गुफाओं के भीतर तक जा बैठा।

लोग अपनी-अपनी जगह पर परेशान हैं। सरकारी मशीन है, इज्जतदार शहरियों की कमेटियां हैं। अच्छे इरादेवाले कायदे-कानून हैं, बाढ़ सहायता कोष है, मदद पहुंचाने वाले अफसर, ईसाई मिशन और लायन्स क्लब के मेम्बर्स हैं।

खंडेलवालजी ने मीटिंग बुलाई है। उसमें भाईजी हैं, नाना [illegible]जी हैं, रघुवरजी हैं और बहुत से लोग हैं···मद्रासी

... । मुस्कराते समय के भावों को धीरे [illegible] छुपाते हुए बोले, [illegible] कह रहे हैं, इसके आदिवासी भाई और [illegible] हुए हैं। [illegible] [illegible] हो गया है। [illegible] बिलबिला रहे हैं [illegible] । [illegible] हैं [illegible] आज [illegible] । [illegible] के लिए बुलाई गई है। [illegible] लिखकर [illegible] पहुंचा सकते हैं ? बोलो, भाई [illegible] ?'

यदुवंशजी बोले, 'यदुवंशजी हमारे बुजुर्ग हैं, वे तो बरसों से धर्म को ध्यान में रखकर ही रहते हैं। इनसे जितना [illegible] आदिवासियों का ही है। जो आज वह संकट में हैं तो हमारा भी कुछ धर्म हो जाता है। मेरे ख्याल से जिसने उनसे जितना ही ज्यादा कमाया है, उतने अनुपात में दान दे।'

हाँ हाँ यह ठीक है। अनेक लोगों की आवाज़ें थीं।

यदुवंशजी के विषय में तहसीलदार की धारणा यह रही थी। जब वे ईंटों के भट्टे का लाइसेंस लेने के लिए उसके पास पहुंचे थे तभी भेद खुल गया था। लेकिन प्रकट में वे भक्त बने रहे। बोले 'कानाफूसी का मतलब यह है कि अपनी-अपनी [illegible] से लोग अपनी-अपनी मदद दें। कानूनी ही इस बार [illegible] कमेटी के सेक्रेटरी होंगे। आप उन्हें लिखा दें।'

बाबाजी ने अध्यक्ष के लिए यदुवंशजी का प्रस्ताव रखा था। उपाध्यक्ष बन गए भाईजी। बद्रीनाथ, प्रेमजी, बोहरा [illegible], अजीज भाई, और बहुत से लोगों को उस नागरिक कमेटी में रख दिया गया।

करीब सौ बोरे गेहूं, पचास ऊनी कम्बल और पुराने कपड़े इकट्ठा कर लिए गए। नदी पार करके गेहूं पहुंचाने का काम कठिन था, इसलिए गेहूं के बोरे तहसीलदार बरसैंया को दे दिए गए— चाहे जैसे पहुंचाएं, उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं। बरसैंया और उमरावदे दोनों जीवट के आदमी थे। जान की परवाह न करते हुए वे नाव में उस पार गए—कलेक्टर को [illegible] माननीय मिनिस्टर के करकमलों द्वारा बंटवाने का

इरादा था।

खंडेलवालजी ने नागरिक कमेटी के गठन, उनके पदाधिकारियों के नाम, मदद आदि के समाचार, लोगों से मार्मिक अपील और प्लैकेट बांटने के लिए मंत्री महोदय को बुलाने का समाचार सभी अखबारों में दिलवा दिया। इससे दानशील लोगों का हौसला बढ़ा—उन्होंने दावा किया।

मीटिंग में तरह-तरह की बातें हुई थीं। कुछ लोग कहते थे, 'बाढ़-पीड़ित को मदद पहुंचाने का काम सरकार का है, हमें इससे क्या लेना-देना...' लेकिन विदेशों में तो यह काम प्राइवेट एजेन्सी ही करती है।' किसी ने जवाब दिया था। बालानी के एतराज को खंडेलवालजी ने ठंडे ठंडे दिमाग से निपटाया था, 'सब लोग अपनी-अपनी हैसियत से दें।' स्टेटमेन्ट के कई मतलब थे। बालानी पर जिम्मेदारी डालकर भी उन्होंने एक गहरी चाल चली थी। चालाक आदमी है उसे रोकना जरूरी था। जितने भी आक्रमणकारी जंतु थे उन्हें कार्यकारिणी में रखवा दिया गया था। लेटरपेड पर खुद उन्होंने हस्ताक्षर करके बयान जारी करवाए थे, मंत्रीजी को लिखा था। एम० एल० ए० साहब उस दिन कुक्षी में नहीं थे इसलिए उन्हें कमेटी में नहीं रखा गया। खंडेलवालजी बोले थे, वे हमारे हैं। सम्मान के योग्य हैं। अच्छे काम का कभी विरोध नहीं करते। वे जब लौटेंगे तो उनकी इजाजत लेकर उन्हें कमेटी में रख लेंगे। मुझे उम्मीद है वे 'न' नहीं कहेंगे।'

क्योंकि कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गुमानसिंह ने स्नेहपूर्वक कहा था, 'वह अपना लौंडा है, उसे हमने राजनीति सीखाई है। अभी हमारा डेलिगेशन मुख्यमंत्री से मिलने गया था। कुक्षी की सारी समस्याएं हमने मुख्यमंत्री महोदय को बतायी। उन्होंने सहानुभूति से सुना। पुल बनाने का ऑर्डर एकदम अपने पी० ए० को दिया। लौंडे को मैंने बोलने नहीं दिया, वर्ना सारा मामला चौपट हो जाता।'

खंडेलवालजी ने इतना ही कहा, 'एम० एल० ए० साहब एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपकी हम इज्जत करते हैं। आप दोनों हमारे लिए गुरु और गोविन्द के समान हैं। आप दोनों का सम्मान करना हमारा धर्म है।' ऐसा कहते समय भी उनके

बैठे? गए एक [illegible] मुआवजा भी।

बैठे-ठाले रेवी ने कुछ ग्यारह कोर्टों की बात की थी . वे यही सभी गिरों के लिए बंदूक दे दी गई थीं, जो उनकी हिफाज़त की खातिर की हिफाज़त के लिए रखी को गयी लगाते हैं। बी० एस० एफ० के जवानों पर डोरों और [illegible] में बल्लार मचाने और गाड़ियों के लोगों के बीच में [illegible] बैठान को पुकारने [illegible] पर डिफेन्ड करने। वे गश्त-लगा भी करते . लेकिन यहां [illegible] कभी-कभी किसी और पर कहें? - सारे आलीशान मूर्तियाँ बनने जा रहे हैं कोई बात ही नहीं है। बस बंदूक और गाड़ियाँ चमकाते रहते हैं। जिस रोज आदिवासी तीर-कमान लेकर आ जाएंगे, सारे हम दला-लों पर बरस जाएंगे, उन्हें पुकारने के लिए जो तरह करते दिए जाते थे वे भी उन्हें अच्छा रहे थे। इसलिए उन्होंने दूर की सोची। गांवों को अब बाढ़ में काम दे दिये गये जो नमक उनके पेट में बचा है उसकी भरपाई हो सकेगी। उन्हें [illegible] तासीर देते हैं। [illegible] ने कहा, लेन-देन करने का मौका आ गया है। अतः लोगों को गरीब आदिवासियों की जी-जान से सेवा करनी है। कोई डूबने न पाए। उनका सामान भी मोटरों से निकालकर सुरक्षित ठिकाने पर पहुंचाना है।'

उधर एन० एन० ए० साहब भी बाढ़-पीड़ितों को मदद पहुंचाने के लिए दिन-रात एक कर रहे थे। वे भोपाल पहुंचे… हुए मिनिस्टर से मिले, बड़े अफसर से मिले, जिले के कलेक्टर से मिले, एस० डी० ओ०, तहसीलदार, बी० डी० ओ० सभी से मिले, सबसे ज़ोरदार ढंग से कहा, 'गोरमेंट बाढ़-पीड़ितों के लिए कुछ नहीं कर रही है।' सामन्त से मिलकर उन्हें भी डांटा —आप कुछ तो कीजिए। सामन्त के दिमाग साहब को उन्होंने एक रोज कहा, 'भाइयो, आदिवासी की हालत पर किसी को दया नहीं आती। क्यों? भाइयो, वे अब बाजार नहीं जा सकते, तेल और नमक नहीं ला सकते। किसी ने सोचा क्यों भाइयो? हम तेल खरीदने गए, लेकिन लोगों ने फारम भरवा दिया, एम० एल० ए० बन गए हैं, घर में बिना तेल के सब्जी की छौंक हुई, अब भाइयो, उसी आदिवासी भाई को नर्मदा खा रही है तो हमारा टिकट क्या खाक मारेगा! यदि वे यहां से भाग गए

तो इसमें हम क्या करेगा, सोचो। गोरमेंट को मैंने बोला था —छोटे-छोटे नालों को बांधो, उसने बड़े-बड़े बांध बनाए, एवजी को जैसे लगा-बना दिया, फूट गया, बाढ़ आ गया तो इंजीन साब क्या करेगा। फूटर मांगा, मिला, उसे लेकर इंजीन साब का पीछा किया। बांध देखा—इनीसपेक्शन किया— लेकिन बाढ़ आ ही गई। गोरमेंट को बोला, कुछ नहीं कर रही। आप लोग बचाओ।'

थानी को मिशनरी अस्पताल चलानेवाले विलियम्स के पास जाकर उन्होंने कहा—बाढ़ आ गई, फादर। आप इतने बरसों से अस्पताल चलाया—आदिवासी भाइयों की सेवा किया —आपको फिनलैण्ड, हालैण्ड, जरमम और जाने कहां-कहां से पैसा मिलता है। फादर, आप भाइयों के लिए कुछ करें। आपके यहां मक्खन के डिब्बा और अनाज कुत्ता खाता है, यहां बुलाकर फौरन भाइयों में बांटने का इंतजाम करो, वरना भगवान आपको भी खा जाएगा।

कमिश्नर साहब से उन्होंने साफ-साफ कह दिया...गोरमेंट कुछ नहीं कर रही है, मैं भूख-हड़ताल कर दूगा, गांधी बाबा का हुकुम है, पक्का सत्याग्रह चला तो अंग्रेज पस्त हो गया। आप लोग भाइयों के लिए कुछ करें।

इस तरह एम० एल० ए० साहब इन दिनों मंत्री, कमिश्नर, कलेक्टर, पटवारी और सभी से दिन-रात मिल रहे थे। जब भी कमेटी के मेम्बर जाते या कोई जाता तो वे घर पर नहीं मिल पाते थे।

बाढ़ अपनी पूरी रफ्तार पर थी। रामसिंह, कनरू, भद्दूसिंह, थमली अठारह अठारह घंटे मेहनत कर रहे थे। वे दिनरात जागते। उन्होंने झोंपड़ों का सामान बाहर निकाला। वैसे भी उनके पास था क्या? लेकिन जितना था उतना बहुत था। आदमियों और ढोरों को बहने से बचा लिया गया था—रामसिंह को बाहर से जितनी भी इमदाद मिली थी उससे राबड़ी का इंतजाम हुआ। भीमा का पूरा परिवार भी लोगों की सेवा में जुट गया था। सुन्दरी और उसकी मां दिन भर रोगियों की सेवा में और खाना बनाने में जुटे रहते। सुन्दरी अकेले बड़े-बड़े सामान उठा लेती थी। सौ-सौ आदमियों का खाना बनाने

में जुटी रहती। एक बार वह भयानक बारिश में एक बूढ़ी को अपनी पीठ पर लादकर ले आई थी। लायन्स की ओर से मल्टी-विटामिन टेबलेटें भी आ गई थीं—गवर्नमेंट, चर्च और दीगर संस्थाओं की ओर से काफी मदद आ गई थी। कुशी से रोजाना पूड़ी-साग आना मुश्किन था। रामसिंह ने मैदान में ही ईंटों पर खाना बनवाना शुरू कर दिया था। जो भी मिलता, सब लोग उसे बांट-बांटकर खाते।

कभी-कभी बाघनी की भयंकर तेजी से गेहूं और मक्के की आवक बंद हो जाती तो सुन्दरी पास के जंगल की पत्तियां उबालकर लोगों को खिलाती।

रामसिंह के पास शहर से जो खबर आती थी, वह भी बहुत तकलीफदेह थी। इधर बाघनी के पुल के दोनों ओर ट्रकें और बसें फंस गई थीं। बाग शहर में तो कुछ खाने-पीने के लिए मिल जाता, लेकिन उस पार कुछ भी मिलना मुश्किल था। लोग चाय की एक बूंद के लिए भी तरस गए थे। वहीं कहीं से एकाध दुकान भी टपक आई थी। दुकानदार पराठे एक रुपये के हिसाब से और चाय पिचहत्तर पैसे के हिसाब से बेच रहा था। लेकिन इतनी भीड़ को चाय-पराठा देना भी नामुम-किन था। वे बस के यात्री थे। उनमें पैसा खर्च करने की ताकत थी, लेकिन सामान नहीं था। कुशी रिलीफ कमेटी की ओर से पूड़ी-साग आ रहा था। एक रोज पुल पर पानी थोड़ा कम हो गया था तो यात्रियों के दबाव के कारण एकाध हिम्मतवर बस ड्राइवर ने बस पानी में डाल दी थी एकाध मनचले ने ड्राइवर से कहा था—'ड्राइवर साब, आप तो बहुत बढ़िया ड्राइवर हैं, इतने से पानी से घबराते हैं।' उसने पहले तो ना-नुच की, लेकिन बाद में राजी हो गया। बस किसी खिलौने की तरह बह गई थी। लोगों की भयानक चीखें निकल आई थीं। पता चला कि ये लाशें जहां बरामद हुईं वहां लोगों ने इनकी अंगू-ठियां, हाथघड़ी और दीगर कीमती सामान भी लूट लिया था। उधर बाढ़ में फंसे हुए यात्रियों का इंतजाम, इधर गांव में बाढ़ से घिरे आदिवासियों को राशन पहुंचाना, सचमुच बड़ा कठिन काम था।

रामसिंह का काम जैसे-तैसे चल रहा था। उसने तय कर

लिया था—किसी भी हालत में लोगों को भूखों नहीं मरने दूंगा। वह रोजाना अनाज को देखता था और जैसे ही उसे लगता कि दो-तीन दिनों का ही राशन बचा तो उसकी बेचैनी बढ़ जाती। उसकी रातों की नींद तो पहले से ही हराम थी, अब वह और मुश्किल हो गई। वह पागलों की तरह राशन जुटाने के लिए गांव से बावनी नदी तक जाता और रिलीफ-कमेटी को संदेशा भेजकर नदी के किनारे बोरों के आने की बाट देखता। कचरू कहता—भैया, तुम गांव का काम संभालो, मैं राशन देख लूंगा। तब भी उसका दिल नहीं मानता।

रामसिंह ने हर घर का बचा हुआ आटा जमा कर लिया लेकिन उन लोगों को ईसाई मिशनरी ने गेहूं भेजा था, उससे काम चलता रहा। जैसे ही राशन खत्म होने को आता, रामसिंह तहसीलदार साहब के आदमी का इंतजार करता—फिर खुद पैदल चलकर नदी के पास तक जाता, ताकि वहां किसी आदमी के जरिए तहसीलदार और बी०डी०ओ० साहब या बाढ़ कमेटी को इत्तला करा सके। अमली ने कहा भी—'बेटे, इतनी मेहनत क्यों कर रहा है। यदि तू बीमार पड़ गया तो हम सबका क्या होगा?' भीमा, मद्दूसिंह सभी समझाते, लेकिन जैसे उस पर भूत सवार था।

उधर सरकारी अफसरों का काम भी बेहद बढ़ गया था—वे खंडेलवाल को और उनके वालंटियरों को अच्छी तरह से जानते थे। बाढ़-कमेटी द्वारा बनाई गई पूड़ी-सब्जी और गेहूं पहुंचाने का इंतजाम किए हुए थे। कुछ अपनी ड्यूटी से भाग गए थे, क्योंकि उनके लिए बाढ़ग्रस्त नदी पार करके राशन पहुंचाना जान की जोखिम पर खेलने जैसा था—कमेटी के वालंटियर केवल दिखाऊ गुड्डे थे। बाहर से आए लायन्स क्लब के शेर वहां बहुत बुरी तरह फंस गए थे। वे दिखाना चाहते थे कि वे कागजी शेर नहीं हैं—दरअसल वे वहां थोड़े दिनों के लिए नेत्र-शिविर वगैरह लगाने और गंभीर चर्चा करने के लिए गए थे, जिसका असर देशकाल की परिस्थिति पर होने की संभावना थी। लेकिन बदकिस्मती से बाढ़ में घिर गए। जिस दिन बाढ़ आई थी उस दिन भी उनकी एक महत्वपूर्ण मंत्रणा

बन रही थीं। वे बोरपुर की बीडिंग में···बहुमंजिले मकान स्वास्थ्य के लिए घातक होते हैं। उनमें रहनेवाली नयी पीढ़ी का मानसिक और बौद्धिक विकास नहीं हो पाता।' वह कह रहे थे। विश्वर विभाग ने अपने मार्गदर्शक विचार प्रकट करते हुए कहा था : 'भाइयो ! हमें संविधान में सबको समान अवसर मुहैया कराए गए हैं। जाहिर है कि नयी पीढ़ी को यह अवसर मिले हुए हैं। आनेवाली पीढ़ी को भी मिलेंगे। इसी नयी पीढ़ी पर हिन्दुस्तान का भविष्य निर्भर है। बदली हुई मान्यताओं को ध्यान में रखकर ही सरकार ने रोटी कपड़ा और मकान के कार्यक्रम तैयार कराए हैं। इसमें रोटी का मामला तो हीरे-जैसे यानी कि वर्णसंकर बीजों से (यहां वे चोरा हुंसे), कपड़े का मामला कंट्रोल के भीग-कर्तव्य से और मकान का मसला मकानों की अधिक कतारें खड़ी कर देने से हल हो जाएगा। लेकिन बहनो, आप बुद्धिमान हैं, मालूम धंधों ने ही देश की आजादी की लड़ाई लड़ी, वही देश को नेतृत्व भी देती है। आप समझदार हैं, इस बात को जानते हैं कि अपने देश में नेफा से लेकर महाराष्ट्र तक जमीन ही जमीन फैली हुई है—फिर ये बहुमंजिली इमारतों की ख्वाहिश क्यों ? किसने की यह ख्वाहिश, आप जानते हैं ? जैसे-जैसे आप ऊपर चलते हैं आप-की बुद्धि का पतन होता जाता है। कहावत है— 'ऊपर गए बुद्धि गयी।' ऊपर रहनेवाले बच्चों को नीचे उतारकर पतंग तक उड़ाने की गुंजाइश नहीं है वह अकेला-सा रहता है, अपनी ही उम्र के बच्चों से मेल-मिलाप नहीं रख पाता, कट जाता है, डरपोक बन जाता है। इसी को कहते हैं सवाम, तनाव, कुंठा, वेदना और युग-संकट। ऐसे बच्चे अपने एकांत-बोध के कारण बड़े होने पर आत्महत्या तक कर डालते हैं, बीमार होने पर अपने कमरे में ही घूमते रहते हैं, खुली हवा उन्हें नहीं भाती, होटलों में भी वे अजीब-अजीब-सी हरकतें करते रहते हैं। एकांत-बोध के कारण ही हिप्पी बनकर गांजा, भांग और एल० एस० डी० पीते हैं··· (शेम-शेम की आवाज) बदर्स ! मैं तो कहता हूं कि हिमालय में तेल है, लेकिन यह तेल हमारे किस काम का ! उसी प्रकार हमारी नयी पीढ़ी में एक अनूठी ताकत है, उसका अक्षय भंडार है, लेकिन यदि हम उसे बहु-

मंजिले कोठों पर चढ़ा दें तो वह शक्ति हमारे किस काम की ! ऐसी हालत में कोई भी विदेशी ताकत आसानी से हमारे देश में आकर अपना राजकाज फैला सकती है। यहां तक कि इस मल्टीस्टोरीड बेवकूफी के कारण अंग्रेज अपना देश छोड़कर यहां दोबारा आ सकता है—इससे मां-बाप और पड़ोसी के प्रति अश्रद्धा भी जाग सकती है। ये लोग बड़े होने पर कभी भी, किसी भी वक्त कोई भी असामाजिक काम कर सकते हैं या कम-से-कम करने पर अमादा हो सकते हैं।'

अंत में उन्होंने मुट्ठी को हवा में घुमाते हुए कहा था—'ब्रदर्स, यह एक ऐसा इशू है, ऐसा प्रश्न है, जिस पर दुनियाभर के लायन्स को एक हो जाना चाहिए। हमें आज इसी वक्त यह प्रस्ताव पारित करना चाहिए—लायन्स की यह सभा मानती है कि दुनियाभर में जो बहुमंजिली इमारतें बन रही हैं, उनसे पूरी दुनिया की नयी नस्ल आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बर्बाद होती जा रही है। अतः यूनिसेफ को दुनिया भर की बहुमंजिली इमारतों को अविलम्ब तोड़ने का इंतजाम करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह प्रस्ताव सभी राष्ट्राध्यक्षों, विचारकों, संतों और लेखकों को भेजा जाना चाहिए। हमें एक अपील दुनियाभर के आर्किटेक्टों से भी करनी होगी। यदि वे नहीं मानते हैं तो फिर उनकी भर्त्सना का प्रस्ताव भी पारित करना होगा।'

प्रस्ताव पारित होते-होते रह गया, क्योंकि तभी वक्त जोरदार बिजली कड़की थी, धूल-धक्कड़वाली आंधी उठी थी और आसमान काला हो चला था और एकाएक भयानक बारिश हो चली थी। सब लोग कैंपों में जाने की तैयारी करने लगे थे—कार की चाबियां निकालने में मशगूल हो गए।

उस दिन विद्वत्तापूर्ण बहस के एक मौके पर ही भयानक बारिश हो गई थी। कैंप में उनका बहुत-सा कीमती सामान पड़ा था, जिसके कारण वे रात को घर वापस नहीं पहुंच सकते थे। और एक रात में ही नदियों में बाढ़ आ गई थी, रास्ते बंद हो गए थे। वे जन-सेवा करना चाहते थे बाढ़-पीड़ितों के लिए काम करना उन्हें अच्छा लगता और वे मालमत्ता जुटाने में लग गए। अपने भाषणों, बहसों, स्टेटमेंट्स के जरिए उन्होंने बाहरी

दुनिया का प्यार पाती और जीतना शुरू कर दिया। मैरवज के लिए ये जो रकम आए थे उन्होंने बड़े अपने बर्दाश्त भाइयों के लिए दे दिया। अखबारों में भी इस बात की खासी चर्चा रही कि सात का मानस कस्बे बाढ़-पीड़ितों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण काम कर रहा है।

डा० शंकरदयालजी मानस के रवैये से खुश नहीं थे। वे कहते थे—'अच्छे खाते-पीते घर के लोग हैं···मानस ! मानस ! मानस न हुई, कोई आफत हो गई। भाई ! मां-बाप ने इतना कमा रखा है कि तीन पीढ़ियों के लिए काफी है। उनको संभालो, भला! बिजनेस बढ़ाओ। दान-धान में खुशफहम बनने की क्या जरूरत !'

लेकिन यह जरूरी नहीं था कि सब लोग शंकरदयालजी की राय से सहमत ही हों। उस छोटे-से कस्बे में भी साहित्य और संस्कृति के समझाने वाले लोग भी थे, जिनकी राय महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी। वकील दुर्गाप्रसादजी कहते—'भाई मानस तो मानस है ! कोई मेमने नहीं हैं कि भेड़िए को देखा और दुम दबाकर भाग गए। वे बेचारे जनता की सेवा करने का मन लिये हैं। जितना बनता है शक्ति-भर करते हैं। नहीं बनता नहीं करते।

कस्बे के जानवरों के डॉक्टर की राय थी—'मानस से हमें कोई नुकसान नहीं है। यह सच है कि वे खुद कोई जानवर वगैरह नहीं पालते, लेकिन वे पौष्टिक आहार आंदोलन के जबर्दस्त समर्थक हैं। पौष्टिक आहार कार्यक्रम में मुर्गीपालन, जरसी गाय और सांड का पालन, नस्ल सुधारने के प्रोग्राम वगैरह अपने आप हो जाते हैं और हमारे डिपार्टमेंट के बढ़ने की संभावना बढ़ती है।'

एम०बी०बी०एस० डॉक्टर सुधीन्द्र राय ने एक निजी वार्तालाप में यह मंजूर किया था···कस्बे में कमाई का जरिया नहीं के बराबर है। आदिवासी डॉक्टर की फीस नहीं चुका पाते और नकली जड़ी बूटी पर ज्यादा भरोसा रखते हैं। वे आखिरी दम तक हमारे पास नहीं आते। झाड़-फूंक, जड़ी-बूटी [illegible]-मंतर पर उनका भरोसा है। मानस में जीने [illegible] और जबर्दस्त भावना पाई जाती है। वे अपनी

और अपनी बीवी-बच्चों की तन्दुरस्ती के प्रति बहुत सजग हैं। सर्दी-जुकाम में भी वे हर किस्म की रंगीन टेबलेट खाते हैं, डट-कर इलाज करवाते हैं, ताकि उनकी त्वचा कोमल और मुलायम बनी रहे। उनके शरीर के हर पार्ट को कोई खतरा न हो, इसलिए वे इंटेंसिव चेक-अप करवाने के आदि हैं। पालतू कुत्तों का भी समय रहते इलाज करवाते हैं। उनके रहने से हम लोग नौकरी में मिलनेवाले कम पैसे को कम्पनसेट कर लेते हैं।'

इस तरह लायन्स के बारे में कस्बे में कोई बुरी फिजा नहीं है। एकाध नेता बिना किसी का नाम लिए यह जरूर कहते हैं—'इन चिकने-चुपड़े लायन्स के लिए वकीलों और डॉक्टरों के दिलों में हमदर्दी नहीं रहेगी तो क्या हमारे लिए रहेगी! अरे, इन सब हरामजादों की जात एक ही है। इन चिकनों की साफ-सफाई डॉक्टर ही करेगा, मामले की गंदगी वकील ही साफ करेगा, उन्हें पैसा मिलेगा। गनीज घुड़साल। सस्था हाथ में होने से उसके मार्फत अफसरों से मेल-जोल बढ़ाया जा सकता है, छोटे-मोटे मामले ऐसे ही रफा-दफा किए जा सकते हैं। बस, सारा खेल इतना ही है कि छोटे अफसर के सामने बड़ों के साथ दिखा जाए और बड़ों के सामने उनसे भी बड़े के साथ।'

लेकिन यदि निष्पक्षता से देखा जाए तो जिले में लायन्स का रोल कभी भी बुरा नहीं रहा। उन्होंने बिहार रिलीफ फंड के लिए भी पुराने कपड़े, ऊनी ब्लैंकेट्स और फटे-पुराने कपड़े भेजे थे। मीना-बाजार वगैरह लगवाकर पैसे इकट्ठा करवाए थे। बाद में बाद में फंस जाने के बाद उन्होंने गेहूं के बोरे और दीगर सामान भी तहसीलदार के मार्फत कमेटी को दे दिया था।

कमेटीवालों का कहना था कि लायन मिस्टर सिंह अच्छे स्वभाव के हैं, भावुक हैं। दूसरों का दुःख नहीं देख सकते। एकदम कुछ कर गुजरने के मूड में आ जाते हैं। उनसे आदिवासियों की हालत देखी नहीं गई, इसलिए हीरे की अंगूठी देने में भी उन्हें जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। ऐसे लोग सही मकसद के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने में भी आगे-पीछे नहीं

देखते। लेकिन अंगूठी मंजूर करने में दो अड़चनें थीं—एक तो उसकी पत्नी बहुत खूंखार है, वे बहुत बड़ा हंगामा खड़ा कर सकती थीं उनका बाहर निकलना भी मुश्किल हो जाता। अनेक बार वे उन्हें ताले में बंद कर चुकी हैं, जिससे उनकी सामाजिक जिंदगी कुछ दिनों के लिए ठप्प हो जाती थी। दूसरे, इससे गलत परम्परा पड़ने का डर था। लायन्स ने गलत ढंग से ही पूरा पैसा कमाया था, इसलिए यदि वे लोगों को ऐसे मौके पर कोई चीज देने भी तो वह 'जिसकी चीज उसे लौटाई गई' वाली बात ही होती। इस अंगूठी-दान से लायन्स की वाह-वाह होती, लेकिन दूसरों की मानत-मनावत होने का अंदेशा भी था।

दूसरे दीगर लायन्स की ओर से भी इसका विरोध किया जा रहा था। वे इसे एक अच्छे आदमी का अच्छी नीयत से, अच्छे मकसद के लिए खेले गए नकली हार्ड पावर ड्रामा से ज्यादा कुछ नहीं मानते थे। वे काफी दुनियादार आदमी थे। जानते थे नदी इसी तरह उफान में नहीं रहेगी। भावनाओं की तेजी भी समय बीतने के साथ खत्म हो जाएगी। यह सब दुनिया का खेल है—कभी धूप कभी छांह। उनके भाग में यही लिखा है जिसका उन्हें भुगतना ही पड़ेगा। ईश्वर शायद ऐसा ही चाहता है। ईश्वर हमसे इन भयंकर परिस्थितियों में जो कुछ भी कराएगा हम करेंगे। कुछ लोग और जिनकी ... कहते 'भाई आखिर मौत तो सभी को आती है। हमें भी आज नहीं कल मरना है। हमारी आंखों के सामने ही हमारी बीवी देखते-देखते मर गई। सभी मर जाते हैं फिर भी समय की रफ्तार के साथ हम दुःख को भी धीरे-धीरे भुला ही देता है। बात यही मुश्किल है कि यह सबको बीच रही है ... उसका दूसरा लाद हो जाएगा तो वह और देगी।'

और फिर यही और सभी लायन्स ने एक वार्षिक निवास... अपना लिया। जितना अच्छा करेंगे और ... परंतु ... कोई काबू नहीं है यह तो सब ... की होगी लेकिन बीतों को मरने नहीं देंगे। और फिर ... ही ... तो इतनी बड़ी ... देश का क्या बिगाड़ सकता है? हमारे ... है, ...

पवित्र हैं।
और वे बाढ़ खुलने का इंतजार कर रहे थे ताकि अपने-अपने घरों की ओर रवाना हो सकें।

कचरू काफी मेहनत कर रहा था। रामसिंह उस पर बहुत खुश था। यदि कचरू नहीं होता तो रामसिंह को अकेला इतना बड़ा बोझा संभालना पड़ता। वह बड़े-बड़े बोरे उठा लेता, डूबते हुए झोंपड़ों से बूढ़े बच्चों को अपनी पीठ पर लादकर बाहर निकाल लेता, रोज बापनी के पास जाकर अनाज का इंतजाम करता और वहां से गांव लाने का इंतजाम करता। लेकिन उस दिन बापनी पर...

तूफान एकाएक तेज आवाज में गरजने लगा था, नदी में उफान आ चला था, चारों ओर जीभ लपलपाकर बढ़नेवाली लहरों का तूफान-ही-तूफान था...नदी हिसक हो रही थी। रह-रहकर बिजली बड़ी तेजी से कड़की थी और यहां से वहां तक तेज चमक से आसमान से जमीन तक एक लम्बी लकीर-सी खिंच जाती। कचरू ने देखा—नदी के पास काफी भीड़ है। वहां फंसे लोगों के लिए शायद पूड़ी-साग का इंतजाम किया गया था। बिजली की कौंध में उसने वहां कस्बे के बड़े बड़े आदमियों को देखा, वहीं उसने अपने पुराने मालिक को भी देखा और एकाएक उसके दिमाग में भी जैसे बिजली एक नुकीले भाले की तरह घुस गई। उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया और वह तेजी से भागा।

कचरू को लगा जैसे एक जबरदस्त भूचाल आ गया है। पृथ्वी माता का गर्भ निकल आएगा। वह भाग रहा था, उसे लग रहा था जैसे उसके कान बहरे हो गए हैं। हवा घम-घमकर कराह रही थी और एकाएक जोरदार बारिश होने लगी। उसे लगा जैसे बापनी पूरी रफ्तार के साथ उफन रही है। पानी एकाएक तेजी से दांत किटकिटाते हुए किसी खूनी इरादे के साथ बढ़ रहा था। चारों तरफ पानी-ही-पानी था और सारे झोंपड़े हिल रहे थे। उसे एकाएक लगा जैसे उसका पुराना मालिक बहुत जोर-जोर से झोंपड़ों को हिला रहा है और अपने नुकीले जबड़े और पंजों को खोल, लपलपाता हुआ उसके पीछे

आ रहा है। वह बड़ी ज़ोर से चिल्लाया और चिल्लाता हुआ भागने लगा- 'वह आ रहा है—मुझे बचाओ, मुझे बचाओ !' एक घंटे का रास्ता बहुत जल्दी ही तय हो गया और वह गांव आकर एकाएक भूत्कार हंसी हंसते हुए कहने लगा,...'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ! वह देखो...मालिक मेरा पीछा कर रहा है। मुझे मत मारो, मत मारो मुझे !' रामसिंह, भद्दूसिंह और सभी लोगों ने उसे संभाला, लेकिन वह अपना होश खो चुका था। वह अजीब-अजीब-सी हरकतें करता...नाखून से ज़मीन कुरेदता होता, गाय-बकरियों को सहलाता तो घंटों उन्हें घास की पूलियों से रगड़-रगड़कर धोता।

'देखो-देखो मालिक आ रहा है, मालिक आ रहा। मुझे उससे बचाओ, बचाओ, वरना वह मुझे मार डालेगा !...देखो-देखो, मालिक की भैंस को तेंदुआ उठाकर ले गया, अब वह मेरी खाल उधेड़ देगा ! महीनों भूखों रखेगा। मुझे खाना चाहिए, खाना। कोई मुझे खाना दो...मुझे भूखों मत मारो मालिक, आखिर मैं भी तो एक इंसान हूं।...साले हरामज़ादे कुत्ते की औलाद, तू कब से आदमी बन गया रे ! साले, भैंस के बदले तू क्यों नहीं चला गया तेंदुए के पेट में !'

एक रात वह सोते-सोते बर्रा रहा था, अपनी पीठ को सहला रहा था। अब मत मारो, मत मारो मुझे, पीठ सूज गई है।

कचरू बस इसी तरह की उखड़ी-उखड़ी बातें करता रहता है। रामसिंह ने इन बातों को जोड़कर और कुछ यहां-वहां से पता लगाकर असली स्थिति मालूम कर ली। जब भी गांव का राशन खत्म होता तो रामसिंह खुद या कचरू इस उम्मीद पर बाधनी पर जाते कि उनकी रसद आ गई होगी ! उस दिन भयानक बारिश थी, धार जाने वाले यात्रियों के रास्ते भी रुक गए थे। उनके लिए पूड़ी-साग का इन्तजाम करके कमेटी की टोली कुल्लू से आयी थी। उसी टोली में कचरू का मालिक भी रहा होगा, जिसे देखते ही कचरू का दिमाग सरक गया—यह तो अच्छा हुआ कि वह सीधे अपने गांव वापस लौट गया था, वरना जाने जंगलों में कहां-कहां भटकता फिरता।
रामसिंह, भद्दूसिंह, असली सबने उसकी खूब सेवा की।

बाढ़ आई और चली गई लेकिन वह अपने पीछे भयानक तबाही और बर्बादी का इतिहास छोड़ गयी। नर्मदा शांत हो गई थी, बाघनी और मान का पानी उफनता हुआ नहीं दिखाई देता था। उनके किनारों पर बच्चे वैसे ही अठखेलियां करते नजर आते। पुलियों से उछलते-कूदते नदी में छलांग लगाते।

श्मशान में जाकर जैसे हम लोग किसी प्रिय जन की लाश को फूंकते हैं और तीसरे दिन जाकर अस्थियां बटोरकर लाते हैं, सब लोगों की हालत कुछ-कुछ ऐसी ही थी। रामसिंह बहुत थक चुका था। उसने यह सारी बर्बादी अपनी आंखों से देखी थी। यदि वह नहीं होता तो इलाके की हालत और भयानक हो जाती—पूरा इलाका मुर्दा घर में बदल जाता। लाशें और लाशें!

झोंपड़े बाढ़ में एकदम बह गए थे। बचे-खुचे मलबों, सदा-बहार के फंदों और झाड़ियों के सहारे से उन्हें खड़ा कर दिया गया था। उनके झोंपड़े में वैसे भी कोई ज्यादा सामान नहीं था, मटके ला दिए गए थे, राशन-पानी का इन्तजाम भी हो चुका था। प्रकृति के खूबसूरत बेटे थे। कभी भी किसी हालत में हिम्मत न हारने वाले! अपने झोंपड़ों को खड़ा करने में लग गए।

रामसिंह को नये तजुर्बे हुए। उसने जाना—दिन-रात मेहनत करने पर भी आदमी थकता नहीं है उसकी ताकत दिन दूनी रात-चौगुनी बढ़ती जाती है। उसने देखा भीमा को उसकी पत्नी को उसकी बेटी सुन्दरी को—उन लोगों ने उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया था। उनके चेहरों पर जरा भी शिकन नहीं थी, बल्कि वे वैसे ही मुसकराते हुए दिखाई देते। उनके प्रति वह ममता से भर उठा। उसने देखा अपने काका-काकी और कचरू को। ये लोग किस मिट्टी के बने हैं। इनका शरीर और मन फौलाद से बना है। उसने तहसीलदार और बी० डी० ओ० साहब के बारे में सोचा जो बाढ़ में गेहूं के बारे में पहुंचाने के लिए भरी नदी में नाव पर पहुंचे थे। कैसे हैं ये आदमी! करोड़ों रुपये और हीरे जवाहरात भी इन इंसानों का मुकाबला नहीं कर सकते। सुन्दरी वाकई सुन्दरी है शान-दार मां-बाप की सोने की संतान और उसके मन में एकाएक

उसके प्रति प्यार और दुलार की भावना जागी। यदि कभी उसने शादी की तो एक बार नहीं बल्कि हजार बार वह सुन्दरी से ही शादी करेगा, उसमें काकी के सभी गुण हैं। ये पेड़-पौधे, आकाश-पहाड़ और जंगल, बाघनी नदी ये झोंपड़े, बरसों से सूखे और बाढ़ का मुकाबला करते हुए उसके अपने-प्यारे-प्यारे लोग—यह सब कुछ कितना सच है! हम कभी नहीं मर सकते! जंगल, पहाड़ और नदी कभी नहीं मर सकते। लेकिन कचरू क्यों पागल हो गया? वह एक तरह से कुछ दिनों के लिए मर गया। लेकिन वह तो तभी मर चुका था जब उसके बाप ने उसे चांदी के चंद टुकड़ों की खातिर सेठजी को बंधक में दे दिया था। जिस दिन वह भागा तब भी वह एक मुर्दा इंसान था थोड़े दिनों के लिए वह बड़े जोरों से जाग गया था। बाढ़ में उसने जितना काम किया उतना कोई भी ताकतवर इंसान भी नहीं कर सकता था। बाढ़ राहत के काम में यदि कचरू न होता तो लोगों की जान-माल बचाने में वह इतना कामयाब नहीं हो सकता था। कचरू पुरानी अवस्था और चालबाजियों का शिकार हो चुका था।···काश, उस दिन वह बाघनी नहीं जाता···वैसे भी उसका मालिक···वह भूत सपने में भी उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। उसका पागल हो जाना उसी लम्बे षड्यन्त्र की एक कड़ी भर थी। उमपर जो बीत चुकी थी उसका अन्दाजा तो उसकी बहकी-बहकी बेसिलसिलेवार बातों से ही लगाया जा सकता था।

उधर खंडेलवालजी भी मतलबों को टटोल रहे थे। उन्होंने कमेटी में पहली बार ही कहा था—बाढ़ में एक भी आदिवासी मरने न पाए, यह हमारी जिम्मेवारी है। वह एक ऐसा मौका है जबकि हमें दिन रात की परवाह न करते हुए उनकी खिदमत करनी चाहिए। तहसीलदार साहब और बी॰ डी॰ ओ॰ साहब और थानेदार साहब और पटवारी साहब—सभी अच्छे आदमी हैं। जिला मुकाम पर रहने वाले कलेक्टर साहब के कहने और एस॰ डी॰ ओ॰ साहब तो साक्षात् भगवान के हैं। अच्छे लोगों का साथ ईश्वर भी नहीं देता। इन कभी-कभी हम लोग भी गलत समझ लेते हैं, बेचारे से हजार-हजार मील पर पेट के लिए पड़े हैं। हम

उनको सहयोग देंगे, चाहे हमारी जान भी चली जाए।

खंडेलवालजी भाईजी और बालीजी से अलग से कुछ नहीं कहा, उनके सामने वे देश और गरीबों की सेवा और अफसरों की तरीफ करते थे।

बाढ़ उतरने के बाद उन्होंने अपने लड़के से कहा था, 'बेटे एक बड़ी मुसीबत टल गई और वह भी बिना कुछ लिए-दिए, बस जुबानी खेल था। बाद में यदि ये आदिवासी और उनके गाव के गाव बह जाते तो हमारी वसूली मुश्किल थी। फिर तुम तो जानते ही हो—हमारा सारा धंधा ही उनके भरोसे चलता है, ये हमारे एजेंट या हम इनके सोल सेलिंग एजेंट हैं। इन जंगलपुत्रों को हम अपने लिए जिन्दा चाहते हैं बेटे!' उन्होंने कुटिल मुसकराहट से बेटे के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'इन्हीं की बदौलत अपने ठाट-बाट हैं। इनके खून-पसीने से हमारी इमारतें खड़ी हैं। ये जितने ही बेवकूफ रहेंगे, उतने ही हम लोग चांदी काटेंगे। समझे कि नहीं! और हां अपनी मां से यह सब बातें मत कहना। वह बड़ी बेवकूफ है, सारी बातें यहां-वहां बक देगी।'

प्रेमजी को अपनी ड्योढ़ी पर मसनद पर बिठाते और कड़क चाय पिलाते हुए उन्होंने कहा था, 'प्रेमजी आप महान हैं। पत्रकार हैं और पत्रकार, देश की आत्मा का रखवाला होता है। बेईमानी और मक्कारी से आप कोसों दूर हैं, इस-लिए आज भी आपके फकीरी ठाठ हैं। आप सचमुच कबीर-दास हैं। हम तो आपके अदना सेवक हैं। भैया, दुःख मत उठाना। किसी भी वक्त किसी भी छोटी-मोटी चीज की जरू-रत हो तो मुझे बताना, संकोच मत करना।'

और फिर रोजाना किसी-न-किसी अखबार में खंडेलवाल-जी के बयान फोटोग्राफ्स उनकी गतिविधियों के बारे में संपादक के नाम चिट्ठियां आदि छपने लगीं। उनकी छवि को दिन-ब-दिन निखारा गया और और उन्हें आगामी चुनाव के लिए टिकट दिए जाने की सिफारिश की जाती रही। एकाध बार के समाचार में उनमें दैवी शक्ति होने का आभास भी दिया गया···बताया गया कि जैसे ही उन्होंने उफनती हुई नर्मदा की ओर टकटकी लगाकर देखा तो नर्मदा मैया शांत हो गई।

उसके प्रति प्यार और दुलार की भावना जागी। यदि कभ
उसने शादी की तो एक बार नहीं बल्कि हजार बार वह सुन्द
से ही शादी करेगा, उसमें शादी के सभी गुण हैं। ये पेड़-पौ
आकाश-पहाड़ और जंगल, बाघनी नदी के मोड़े, बरसों
सूखे और बाढ़ का मुकाबला करते हुए उसके अपने-प्यारे-प्या
मीत—यह सब कुछ कितना सच है! हम कभी नहीं म
सकते। जंगल, पहाड़ और नदी कभी नहीं मर सकते। लेकिन
अचानक क्यों पागल हो गया ? वह एक तरह से कुछ दिनों के लिए
मर गया। लेकिन वह तो तभी मर चुका था जब उसके बाप ने
उसे चाँदी के चंद टुकड़ों की खातिर सेठजी को बंधक में दे
दिया था। जिस दिन वह भागा तब भी वह एक मुर्दा इंसान था
थोड़े दिनों के लिए वह बड़े ज़ोरों से जाग गया था। बाढ़ में
उसने जितना काम किया उतना कोई भी ताकतवर इंसान भी
नहीं कर सकता था। बाढ़ राहत के काम में यदि कलुवा न
होता तो लोगों की जान-माल बचाने में वह इतना कामयाब
नहीं हो सकता था। कलुवा पुरानी व्यवस्था और नाइंसाफियों
का शिकार हो चुका था।···काश, उस दिन वह बाघनी नहीं
जाता···वैसे भी उसका मालिक···वह भूत सपने में भी उसका
पीछा नहीं छोड़ रहा था। उसका पागल हो जाना उसी लम्बे
षड्यन्त्र की एक कड़ी मात्र थी। उसपर जो बीत चुकी थी
उसका अन्दाजा तो उसकी बहकी-बहकी बेसिलसिलेवार बातों
से ही लगाया जा सकता था।

उधर खंडेलवालजी भी मलबों को टटोल रहे थे। उन्होंने
कमेटी में पहली बार ही कहा था—बाढ़ में एक भी आदि-
वासी मरने न पाए, यह हमारी जिम्मेवारी है। यह एक ऐसा
मौका है जबकि हमें दिन रात की परवाह न करते हुए उनकी
खिदमत करनी चाहिए। तहसीलदार साहब और बी० डी०
ओ० साहब और थानेदार साहब और पटवारी साहब—सभी
अच्छे आदमी हैं। जिला मुकाम पर रहने वाले कलेक्टर साहब
के कहने और एस० डी० ओ० साहब तो साक्षात् भगवान के
अवतार हैं। अच्छे लोगों का साथ ईश्वर भी नहीं देता। इन
साहबों को कभी-कभी हम लोग भी गलत समझ लेते हैं, बेचारे
अपने घरों से हजार-हजार मील पर पेट के लिए पड़े हैं। हम

भाईजी और दादाजी इन बातों पर भरोसा नहीं करते थे, लेकिन इसमें उनका कोई कसूर नहीं था। रामसिंह की बात निकलने पर वे गोरखपुरिया कहते—जाना ही पड़ता है, जाएगा कहां? हमेशा मार्गदर्शन लेने के लिए आता है, पैर छूता है, आशीर्वाद लेता है। कहता हूं भाई मेरे पैर मत छुओ, ईश्वर के छुओ। कहता है—मेरे ईश्वर तो आप हैं। दादाजी, मुझे पैर छूने से कभी मत रोकिएगा, मगरा हो जाएगा।…भीतर बदलने की कोशिश जरूर कर रहा है, लेकिन सफल नहीं है। धीरे-धीरे आ जाएगा और फिर हम तो सबकी मदद के लिए तैयार बैठे हैं। चाहें तो उठा लें।

यानी के ईसाई मिशनरियों को तो उन्होंने साफ-साफ कह दिया था, 'अरे भाई, अंग्रेज तो गए, बगैर बच्चे रह गए। अब तुम्हारी मक्कारी नहीं चलेगी। हम कोई भीख नहीं मांगते। इस जमीन को तुमने बहुत चूसा है, धड़ल्ले से धर्म परिवर्तन किया है। कुत्ते-बिल्लियों की तरह हमें आपस में लड़ाया है। यदि अब तुम्हें प्रायश्चित करना ही है तो जितना भी अनाज देना चाहो अभी हमारे हवाले कर दो, जरूरतमंदों को पहुंचा दिया जाएगा, वरना तुम्हें भी इंग्लैंड पहुंचा दिया जाएगा। हम मशीनगनों से नहीं डरते, सत्याग्रही हैं, गांधीबाबा के सच्चे भक्त हैं। गरीबों के आंसू पोंछना हमारा मामला है, तुम्हारा नहीं, क्योंकि तुम्हारे पुरखों ने इस सोने की चिड़िया को काफी लूटा है।"

इन दिनों वे अत्यन्त शालीन और विनम्र हो गए थे।

लायन्स भी किसी की परवाह नहीं करते। लायन पिशाल कहते हैं, 'लायन्स क्लब दुनिया के हर कोने में फैला है और हर मिनट में दुनिया के किसी-न-किसी कोने में इसकी एक ब्रांच खुलती है। सेवा ही हमारा धर्म है, सेवा ही ईश्वर है। यह एक आंदोलन है। किसी दुश्मन के कहने से कुछ भी होना-जाना नहीं है। हम सेवा करने आए हैं, सेवा करते रहेंगे। इसमें कोई दखलन्दाजी कर नहीं सकता। यह हमारा संवैधानिक हक है। हमने समाज से बहुत कुछ लिया है, अब देना चाहते हैं, तो हमारे आड़े कौन आ सकता है। लोग कहते हैं कि इसमें अफसर, वकील, डॉक्टर और व्यापारी भर हैं, तो मैं कहता हूं—इनके

16890

हमारा समाज का श्रेय और कौन हो सकता है। दुनिया के के सारे आंदोलन ही 'मिडिल क्लास' के होते हैं। हम लोग किसका क्या लेते हैं? पीढ़ियों के लिए एक होटल, बस!··· बिजली-पानी का खर्चा हमारा होता ही है। मेरा शिविर लगाना कोई बुरा काम नहीं, क्योंकि दुनिया के सबसे ज्यादा भूख अपने ही देश में ही है। इस बाढ़ में हमने भी जनता की भली-खासी सेवा की है, सिर्फ जनता ही जानती है···उसे अच्छे-बुरे की तमीज है···यह कोई पुराने जमाने की जनता नहीं है। अब हमारी स्कीम ब्लैंकेट बांटने, बिहार के बाढ़-पीड़ितों के लिए यहां तंबू गाड़ने और रैन-बसेरा खोलने की है, ताकि लोग जाड़े से ठिठुरकर मरने न पाएं। थक जाने पर सैर-सपाटा और दीगर आमोद-प्रमोद जरूरी है, इसमें कोई बुराई नहीं मानता। लंदन के लोग वीक-एण्ड में ही सैर-सपाटे के लिए बाहर निकल जाते हैं।'

एम॰ एल॰ ए॰ साहब कहते हैं, 'भाइयो, बाढ़ आई तो हमने सेवा की—जन-जागरण किया—बड़ी-बड़ी जगहों पर गए, लोगों से खुल्लम-खुल्ला कहा—बाढ़ आई है यह साफ-साफ दिखाई देती है। आप लोग यदि चादर से मुंह ढांक सोओगे तो भी दीखेगी। पानी आपकी धरती पर से निकल जाएगा। इसलिए जागो, जल्दी जागो।···बाढ़ नहीं आती तो हमें कुछ भी करने की जरूरत नहीं थी। आदिवासी हिम्मतवर होता है उस पर हर साल सूखे और बाढ़ की आफत आती रहती है। मैं पूछता हूं—भाइयो, सूबे में गौरमेंट ने इतने सारे तालाब क्यों बनाए, क्यों? हमें अन्याय और अत्याचार का डटकर मुकाबला करना है···क्रांति···क्रांति···भाइयो, यदि बाढ़ नहीं आती तो मुझे भी यहां आने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि आपसे मेरी मुलाकात वहीं भी और कभी भी हो जाती है। भाइयो, इस बाढ़ का फायदा कुछ मोटे लोग लेना चाहते हैं वे मक्कार हैं, धोखेबाज हैं। मैं आपको उनसे सावधान करता हूं फिर मत कहना कि मैंने आपको खबर नहीं दी। वरना आने न कोई खबर नहीं दी।'

सागर में शाम उतर आई है। रामसिंह अपने झोंपड़े से

आधी फर्लांग दूर जाकर एक चट्टान पर बैठ गया है। उसने आकाश की ओर देखा—अनेक रंग आ-जा रहे हैं…महुआ, बेर, आम और नीम के पेड़ों को पावन कर देने वाली हवाएं और ओस की बूंदों का संसार। वह चुपचाप बैठा हुआ है। झाबुआ में फरारी के वक्त वह इतिहास पढ़ता रहा है…एक बड़ा इतिहास उसके सामने से अभी-अभी गुजरा है…इस इतिहास से एक नये रामसिंह ने जन्म लिया है। यहां से चार फर्लांग की दूरी पर बाघनी नदी बह रही है—शांत और निश्चल, धुले हुए साफ पत्थर, चारों ओर हरियाली, पेड़ों की छायाएं और पीछे की ओर उठता हुआ पहाड़…बिछलते हुए पानी में तैरती हुई मछलियां। हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। उसने गांव की झोंपड़ियों की ओर देखा, आस-पास फैली हुई ताजी हरियाली को देखा…कितना सुन्दर है यह गांव और उसके लोग। घास पर पड़ी हुई ओस की बूंदें और जंगली बतखों की दूर से आने वाली हलकी-हलकी आर्द्र पुकार। एक अजीब-सा सन्नाटा उसकी देह में भी समा गया था। ताजी हवाओं के झोंके दूर-दूर तक फैली घास और सरकंडों की मिली-जुली गंध ले आए थे। रामसिंह इस गंध को पहचानता है, नदी को पहचानता है, उसकी खामोश अदा को पहचानता है। जिंदगी धड़क रही है।